



अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत अमृत महोत्सव

जून 2023 ■ वर्ष : 68 ■ अंक : 09 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 60

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

# अप्रत



प्रकाश पथ है  
सत्य - अहिंसा की राह



# अणुव्रत यात्रा

सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति



ऐतिहासिक अणुव्रत यात्रा में सहभागिता करने का स्वर्णिम अवसर

अणुव्रत कार्यकर्ताओं के दल में शामिल होने के लिए सम्पर्क करें -

संयोजक अनिल समदड़िया (9374615000), गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल (9374536344), महाराष्ट्र प्रभारी रमेश धोका (9869049037)



वर्ष 68 • अंक 09 • कुल पृष्ठ 60 • जून, 2023

■ ■ ■  
भगवान महावीर ने क्षत्रिय  
कुल में जन्म लिया, किन्तु  
उन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति  
का कल्याण किया है।  
महावीर की वाणी से ही  
हम सबका कल्याण है।  
भगवान की वाणी मिथ्या,  
माया और अहंकार से रहित  
है। आचार्य श्री तुलसी का  
विचार हमेशा एकता के  
लिए रहता है। आज उनका  
प्रयास अनुव्रत के रूप में  
सफल हो रहा है। आगे  
और भी सफल होना  
चाहिए।  
-आचार्य देशभूषण



सम्पादक  
**संचय जैन**

सह-सम्पादक  
**मोहन मंगलम**

टाइपसेटिंग व लेआउट  
**मनीष सोनी**

क्रिएटिव्स  
**आशुतोष राय**

चित्रांकन  
**मनोज त्रिवेदी**

{ **अविनाश नाहर**, अध्यक्ष  
भीखम सुराणा, महामंत्री  
राकेश बरड़िया, कोषाध्यक्ष

प्रकाशन मंत्री  
**देवेन्द्र डागलिया**  
संयोजक, पत्रिका प्रसार  
**सुरेन्द्र नाहटा** }

:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

एक अंक	- ₹ 60
त्रैवर्षीय	- ₹ 1800
पंचवर्षीय	- ₹ 3000
दसवर्षीय	- ₹ 6000
योगक्षेमी (15 yrs.)	- ₹ 15000

अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी

केनरा बैंक

A/c No. **0158101120312**

IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::

<https://rzp.io/l/avbp> पर लॉगिन करें  
या इस क्यूआर कोड को स्कैन करें



## अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अनुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,  
नई दिल्ली-110002



अनुविभा

[anuvrat.patrika@anuvibha.org](mailto:anuvrat.patrika@anuvibha.org)  
[www.anuvibha.org](http://www.anuvibha.org)

दूरभाष : 011-23233345, मोबाइल : 9116634512



# अनुक्रमणिका

<b>प्रेरणा पाठ्य</b>			
■ संकल्पों की मशाल आचार्य तुलसी	06	■ संपादकीय	05
■ व्रत का आधार आचार्य महाप्रज्ञ	09	■ तुलसी उवाच	08
■ स्वाध्याय से क्या मिलेगा? आचार्य महाश्रमण	12	■ चरित्र में गिरावट : एक चिन्तन	14
<b>आलेख</b>		■ संयम दिवस	19
■ अहिंसक चेतना का विकास... मुनि कोमलकुमार	15	■ अणुव्रत की बात	28
■ सत्य और अहिंसा का यथार्थ डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'	16	■ कदमों के निशां	29
■ सा विद्या या विमुक्तये रमेश चंद शर्मा	20	■ परिचर्चा	33
■ योग-अनुभूत साधना... सतीश उपाध्याय	24	■ क्यू 10 प्रतियोगिता	36
■ The Psychology of Peace... Sheila Fling	26	■ गौरवशाली अतीत के झारोखे से...	37
<b>कहानी</b>		■ 50वां दीक्षा कल्याण महोत्सव	45
■ लाखों की लॉटरी सुधा आदेश	30	■ अणुव्रत यात्रा	46
<b>कविता</b>		■ श्री धनराज बैद की दुर्लभ तपस्या	49
■ नेह नीर सा राखिए... डॉ. पूनम गुजरानी	18	■ जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर	50
■ धड़कन में बसते पिता... मनोज जैन 'मधुर'	22	■ अणुव्रत बालोदय शिविर	51
		■ अणुव्रत व्याख्यानमाला	52
		■ समिति समाचार	53
		■ अणुव्रत के प्रथम हस्ताक्षर देवेन्द्र भाई	55
		■ ■ ■	
		■ अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन—मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।	
		■ anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।	
		■ ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।	
		■ फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।	
		■ अनिमत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।	
		■ प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।	
		■ इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।	



# शब्द और व्यवहार कितने करीब, कितने दूर !

**श**

ब्द कभी-कभी इतने बड़े हो जाते हैं कि उन्हें रोजमरा की जिंदगी से जोड़े बिना भी उनके साथ जीने के हम आदी हो जाते हैं। शब्दों की दुनिया और व्यवहार की दुनिया में एक बड़ी खाई-सी बन जाती है। उन शब्दों को हम पढ़ते हैं, सुनते हैं, बोलते भी हैं लेकिन व्यवहार करते वक्त ये शब्द हमारे मस्तिष्क में नहीं कौंधते। सामाजिक विमर्श में इन शब्दों का खूबसूरती से उपयोग किया जाता है, गहन दार्शनिक व्याख्याएँ की जाती हैं और बौद्धिक स्तर पर इनकी आवश्यकता, व्यावहारिकता और परिणामों पर लम्बी बातें होती हैं। इन शब्दों से जुड़े सिद्धांतों और शोधों पर किताबें और ग्रंथ भी बहुलता में मिल जाएंगे। बेशक, ये शब्द इतने अहम होते हैं कि यदि हमारे दैनंदिन जीवन में प्रवेश कर जाएँ, तो हमारी दुनिया ही बदल जाये।

संवाद में  
शब्द होते हैं,  
हर शब्द का  
अर्थ होता है,  
अर्थ के पीछे  
भाव भी  
छिपे होते हैं।

भाव-शून्य शब्द  
निरर्थक संवाद को  
जन्म देते हैं, और  
खोखलेपन का  
एहसास देते हैं,  
शब्दों का  
दोंग रचते हैं, और  
अनर्थ का हेतु  
बन जाते हैं।

और हां...  
निर्विकार भाव  
निःशब्द रहकर भी  
ऐसे संवाद गढ़ देते हैं,  
अर्थपरकता की  
हड़ें लांघ,  
जो दिलों को  
एकाकार कर देते हैं।

प्रश्न है, वह शब्द अपने साथ केवल शब्द का खोल मात्र ले कर चल रहा है या उसकी आत्मा भी उसके साथ है? मात्र वह शब्द ही हमारे दिमाग में गूँजता है या उसका अर्थ हमारे हृदय में भी उत्तरा है? उस शब्द का उपयोग हम केवल कहने के लिए करते हैं या करने के लिए भी? शब्दों के उपयोग के साथ-साथ यदि ऐसे प्रश्न भी हमारे मन में उठते रहें, तो ये भारी-भरकम शब्द भी तरल हो कर हमारे सत्त्व के साथी बन सकते हैं। शब्द का महत्व तभी है जब उसकी आत्मा उसके साथ हो, भाव का प्रवाह उसके साथ हो, अन्यथा वह बिना प्राण के पुतले से अधिक कुछ नहीं।

ऐसे ही कुछ शब्द हैं - अहिंसा, सत्य, नैतिकता, धर्म, नीति, न्याय, समानता, स्वतंत्रता, अनुशासन आदि। बचपन से ही हम इन शब्दों से परिचित होने लगते हैं। इन्हें जीवन में अपनाने का उपदेश हमें घर, स्कूल आदि हर जगह मिलता है। इन शब्दों की जितनी चर्चा होती है, उस अनुपात में जीवन-व्यवहार में इनके प्रयोग का प्रतिशत अत्यल्प ही रहता है, यह तथ्य किसी से छुपा नहीं है। इसके कई मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारण हो सकते हैं लेकिन आने वाली पीढ़ियों के लिए जिस उज्ज्वल भविष्य की हम कामना करते हैं, वह तभी संभव है जब इन शब्दों में निहित भावों को अनावृत्त कर छोटे-छोटे सूत्रों के रूप में इन्हें जीवन में व्यवहार्य बनाया जा सके। इन शब्दों को एक बच्चा, एक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में घटाता हुआ देख सके।

यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। अणुव्रत के लघु सूत्र इस दिशा में प्रकाश स्तम्भ के समान हैं। ऐसे सूत्र जिन्हें संकल्प रूप में व्यक्ति अपने जीवन-व्यवहार का हिस्सा बना सकता है। तब व्यक्ति इन शब्दों की असली ताकत से परिचित होता है और उनके प्रभाव को, जीवन में घटित होने वाले बदलाव को स्वयं अनुभूत कर सकता है। यह अनुभव व्यक्ति को स्वयं के अस्तित्व से परिचित कराता है। यह भीतर झाँकने की सहज व सरलतम प्रक्रिया भी है जो व्यक्ति को आत्मबल से परिपूर्ण कर देती है। अणुव्रत के इन 11 लघु सूत्रों को और भी लघुतर सूत्रों में विभाजित कर विस्तार देने का प्रयास भी गतिशील है।

दुनिया के सभी समाज, समुदाय और संस्कृतियाँ इस दिशा में निरंतर प्रयासरत और प्रयोगरत रहें और बड़े-बड़े शब्दों को सिद्धांतों की ऊँचाइयों से उतार कर व्यवहार की जमीन पर स्थापित किया जा सके, तभी हम इच्छित परिणामों की कल्पना कर सकते हैं।

सं. जै.

sanchay\_avb@yahoo.com



अणुव्रत | जून 2023 | 05

# संकल्पों की मर्शाल

जनचेतना की गतिशीलता युगचेतना को भी गति देती है। स्त्री और पुरुष, दोनों ही समाज के बराबर के अंग हैं। दोनों अंग जब तक स्वस्थ, सशक्त और समन्वित रहते हैं, समाज का रथ तभी आगे बढ़ सकता है। इस दृष्टि से स्त्री और पुरुष दोनों का शक्तिशाली होना जरूरी है।

**जी** वन एक सपना है, जिसे मनुष्य देखता है और साकार करने के लिए प्रयत्नशील रहता है। यदि वह सपना सामने न हो तो व्यक्ति अपने जीवन में कोई विशिष्ट काम नहीं कर सकता। जीवन को विशिष्ट बनाने के लिए यथार्थ की धरती पर चलना जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक है स्वप्न लोक में विहार करना। नये-नये स्वप्न देखने की चेतना का जागरण जब तक नहीं होता, तब तक व्यक्ति बंधी-बधाई लकीरों पर ही चल सकता है, कोई नया सृजन नहीं कर सकता।

जनचेतना की गतिशीलता युगचेतना को भी गति देती है। युग बदलते जा रहे हैं। नये-नये रूप सामने आ रहे हैं। इस बदलते हुए परिवेश में युग की विशिष्ट शक्तियों का मूल्यांकन होता है। साहित्यकारों, पत्रकारों, युवकों, बच्चों, उद्योगपतियों, सैनिकों का अंकन हुआ। उस शृंखला में महिलाओं का वर्ग भी जुड़े बिना नहीं रहा। महिला चेतना का जागरण करने के लिए, महिलाओं की समस्याओं को समझकर उनका निराकरण करने के लिए और महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने के लिए अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष मनाया गया।

महिला वर्ष का कोई परिणाम नहीं आया तो महिला दशक मनाया गया। पर पूरे दस वर्ष का गणित किया जाये तो भी कुछ

विशेष काम हुआ हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। क्योंकि किसी ठेस योजना के अभाव में प्रत्येक वर्ष और प्रत्येक उत्सव आयोजनों, समारोहों, नारों और संगोष्ठियों तक सीमित रह जाता है।

इस दशक में महिलाओं के लिए वातावरण अनुकूल अवश्य बना है। उन्हें समझने और अपनी पहचान बनाने का मौका मिला है। देखना यह है कि वे कितनी आगे बढ़ी हैं और कितनी पीछे हटी हैं। उनकी प्रगति में कौन-सी बाधाएं हैं? और उन्हें पीछे ढकेलने में किन तत्वों का हाथ है? प्राकृतिक, पारम्परिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक परिस्थितियों में कौन उनके अनुकूल है और कौन प्रतिकूल है?

माना तो यह जाता है कि स्त्री और पुरुष, दोनों ही समाज के बराबर के अंग हैं। दोनों अंग जब तक स्वस्थ, सशक्त और समन्वित रहते हैं, समाज का रथ तभी आगे बढ़ सकता है। इस दृष्टि से स्त्री और पुरुष दोनों का शक्तिशाली होना जरूरी है। आज के हालात स्त्रियों के इतने अनुकूल नहीं हैं। फिर भी परिवार और समाज की गाड़ी चल रही है। गाड़ी चल रही है, यह बात सही भी है। पर कैसे चल रही है? सही दिशा में या गलत दिशा में? सहज रूप में या लुढ़कती हुई? इसका मापदण्ड क्या है? स्त्री और पुरुष दोनों में से एक की दुर्बलता में भी घर और समाज तो चलेगा।





मातृ जाति में शक्ति है, श्रद्धा है और सहिष्णुता भी है। वह इन तीनों का पूरा उपयोग करना सीख ले तो उसकी प्राकृतिक विवशताएं भी कम हो सकती हैं। अपेक्षा इस बात की है कि महिला जाति की उपेक्षा, अवहेलना-प्रताड़ना और उसके विकास में आने वाली बाधाओं का संगठित रूप से प्रतिकार किया जाये।

क्योंकि समाज की गाड़ी कभी रुकती नहीं। पर यह बात जरूर है कि गाड़ी के दोनों चक्के मजबूत हों तो वह अच्छे ढंग से चलती है। यदि यह तथ्य सही है तो हमारे सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या समाज के दोनों अंगों को ठीक रखने का प्रयत्न किया जा सकता है?

एक धर्माचार्य होने के नाते मैं समाज से सीधा जुड़ा हुआ हूँ। हजारों-लाखों महिलाएं हमारी धर्म-सभाओं में उपस्थित होती हैं। उनकी हालत देखते हैं तो ऐसा लगता है कि अनेक महिलाएं बहुत दयनीय जीवन जी रही हैं। जब तक वे पुरुषों की कठपुतली बनकर रहती हैं, तब तक तो कोई धमाका नहीं होता। जहां कहीं वे अपनी अस्मिता या स्वतंत्रता का प्रश्न उठाती हैं, उन पर विपत्तियों के पहाड़ टूट पड़ते हैं। पति की गलत हरकतों में थोड़ा-सा हस्तक्षेप करते ही उन्हें क्या-क्या नहीं सहना पड़ता? पति और पुत्र की इच्छाओं, आकांक्षाओं के लिए उन्हें कहां बलि का बकरा नहीं बनना पड़ता? पुरुष रात को एक बजे तक घर आये या नहीं भी आये, स्त्री को कुछ पूछने का अधिकार नहीं है। जबकि स्त्री अपने रिश्तेदार या पूर्व-परिचितों से दो मिनट भी बात कर ले तो संदेह का कुहरा छा जाता है। पति का वियोग होने पर क्या उसके सारे अधिकार समाप्त हो जाते हैं? कुछ महिलाओं को तो अपनी निजी सम्पत्ति का उपयोग करने का भी अधिकार नहीं मिलता। स्त्री होने

की इस त्रासदी का अन्त कब और कैसे होगा? ये सब बातें आज के युग में होती हैं। अतीत की खोज में भी ऐसी अनेक घटनाएं प्राप्त होती हैं। रामायण की अयोध्या का एक प्रसंग है। उस समय अयोध्या में नहुष नाम का राजा राज्य करता था। राजा की रानी का नाम था सिंहिका। सिंहिका अच्छी विदुषी महिला थी। वह शास्त्रकला और शस्त्रकला – दोनों में पारंगत थी। शस्त्रकला में निष्णात होने के कारण वह युद्धविद्या में भी दक्ष थी।

एक बार राजा नहुष ने दक्षिण दिशा के कुछ राज्यों को स्वायत्त करने के लिए अभियान चलाया। अभियान की सफलता के लिए राजा को अयोध्या छोड़कर जाना पड़ा। उधर उत्तर दिशा के राजाओं ने अयोध्या को अरक्षित समझ उस पर आक्रमण कर दिया। राजा और उसके मुख्य सेनापति के बहां न होने से अयोध्या में तहलका मच गया। रानी सिंहिका ने स्थिति की गंभीरता को समझा। उसने पुरुष वेष धारण कर हाथ में हथियार उठाये और अपनी सेना के साथ मोर्चा पर जाकर डट गयी। अपने युद्ध कौशल से उसने शत्रु को भगा दिया। अयोध्या की सुरक्षा हो गयी।

कुछ समय बाद राजा नहुष अपनी राजधानी लौटा। उसने शत्रुओं के आक्रमण और रानी द्वारा युद्ध का मोर्चा सभालने की बात सुनी। सुनते ही उसकी भृकुटियां तन गयीं। होनी तो चाहिए थी राजा को प्रसन्नता, पर हुआ उल्टा। राजा अपनी नाराजगी व्यक्त करता हुआ बोला – "निश्चित ही रानी कुलटा है। अन्यथा किसी भले घर की औरत लड़ाई के मैदान में जा सकती है?" इस घटना के बाद राजा के मन से रानी उत्तर गयी। उसने रानी से बात करना और उसके पास जाना-आना बंद कर दिया।

राजा की अनुपस्थिति में राज्य की सुरक्षा का काम कर रानी राजा की अधिक प्रियता पाने के स्थान पर एकाकीपन का अभिशाप ले बैठी। इस बात से रानी को बहुत दुःख हुआ, पर उसकी सुनने वाला कोई नहीं था। अब वह शान्त मन से उस त्रासदी को भोगने लगी। समय अपनी गति से बीतने लगा। सहसा राजा को दाहज्वर हो गया। एक से एक बढ़िया चिकित्सा की गयी, पर कोई परिणाम नहीं निकला। राजा की जिन्दगी संशय के झूले में झूलने लगी। रानी ने स्वयं को निर्दोष प्रमाणित करने का अवसर देखा। उसने घोषणा की – "यदि मेरा सतीत्व निष्कलंक है तो मेरे स्पर्शमात्र से राजा स्वस्थ हो जाएंगे।" जनता के मन में पहले से ही रानी के प्रति विश्वास था। फिर भी वह राजा के सामने अपना मुँह नहीं खोल सकी थी।

राज्य के वरिष्ठ लोगों की उपस्थिति में रानी ने अपने हाथ से राजा के शरीर का स्पर्श किया। दाहज्वर कपूर की भाँति उड़ गया। रानी सिंहिका के जयघोषों से वातावरण मुखर हो गया। राजा नहुष ने अपने अविवेकपूर्ण निर्णय पर गहरा दुःख व्यक्त किया। रानी सिंहिका को उस पर आये कलंक को धोने का अवसर मिल गया, इसलिए उसका जीवन बदल गया, पर न जाने कितनी महिलाएं अकारण ही प्रताड़ित जीवन जीती हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि उनका स्त्री होना ही उनके लिए अभिशाप बन गया।

## नथा : सबसे बड़ी त्रासदी

अब महिलाओं का हौसला बढ़ रहा है, उनकी सोच की दिशा बदल रही है। उनके मन में कुछ कर्ने की तड़प पैदा हो रही है और उनको बढ़ने का अवसर मिल रहा है। अब महिलाओं को संकल्पों की मशाल उठाकर चलना होगा। उन्होंने ऐसा नहीं किया तो समय उनकी प्रतीक्षा नहीं करेगा।

हमारा यह निश्चित अभिमत है कि मातृजाति में शक्ति है, श्रद्धा है और सहिष्णुता भी है। वह इन तीनों का पूरा उपयोग करना सीख ले तो उसकी प्राकृतिक विवशताएं भी कम हो सकती हैं। गहराई से देखा जाये तो दुर्बलता किसमें नहीं होती? स्त्री की दुर्बलता को ज्यादा उभारा गया। ‘न स्त्री स्वातंत्र्यमहर्ति’ – स्त्री अपने जीवन में कभी स्वतंत्रता नहीं पा सकती, इस प्रकार की बातें प्रचलित कर उसके मनोबल को कमजोर करने का प्रयत्न किया गया। जहां कहीं उसने आगे बढ़ने की कोशिश की, उसे नाकामयाब कर दिया गया।

अब अपेक्षा इस बात की है कि महिला जाति की उपेक्षा, अवहेलना-प्रताड़ना और उसके विकास में आने वाली बाधाओं का संगठित रूप से प्रतिकार किया जाये। इसके लिए सबसे पहले महिलाएँ अपनी क्षमता का बोध करें, स्वाभिमान को जागृत करें, युगीन समस्याओं को समझें, समस्याओं को समाज के सामने रखें, उन्हें दूर करने के लिए सामूहिक आवाज उठाएं और आगे बढ़ने के लिए स्वयं अपना रास्ता बनाएं।

यह काम करने के लिए कुछ महिलाओं या महिला संगठनों को आगे आना होगा। क्योंकि उनके पाँव पीछे खींचने का अपराध केवल पुरुषों ने ही नहीं किया है, संस्कारहीन अथवा परम्परावादी महिलाओं ने भी इसमें कहीं कोई कसर नहीं रखी है। बल्कि यह कहना चाहिए कि महिलाओं ने महिला जाति का शोषण जिस ढंग से किया है, किसी ने भी नहीं किया। उभयमुखी शोषण ने उसको इतना दबा दिया कि वह कुछ कर सकने का एहसास ही खोने लगी।

हमने महिला जागरण का एक सपना देखा है और उसे पूरा करने के लिए पूरी कोशिश कर रहे हैं। हमें पूरा भरोसा है कि इस कोशिश में हमें कामयाबी मिलेगी। क्योंकि अब महिलाओं का हौसला बढ़ रहा है, उनकी सोच की दिशा बदल रही है। उनके मन में कुछ करने की तड़प पैदा हो रही है और उनको बढ़ने का अवसर मिल रहा है। अब महिलाओं को संकल्पों की मशाल उठाकर चलना होगा। यह काम तभी हो सकेगा, जब कुछ बहनें महिला-जागरण के लिए स्वयं को समर्पित कर देंगी। उन्होंने ऐसा नहीं किया तो समय उनकी प्रतीक्षा नहीं करेगा। ■■■

नशे की प्रवृत्ति किसी एक वर्ग, समाज या देश में नहीं है। पूरा विश्व इससे प्रभावित है। इसका प्रारंभ कब, कहाँ और कैसे हुआ? अनुसंधान का विषय है। विगत कई दशकों से पूरी दुनिया के लोग धूम्रपान और मद्यपान कर रहे हैं। चालू एक-दो दशकों में नशे के जितने रूप सामने आये हैं, उनके बारे में पढ़-सुनकर लगता है कि मानव जाति के विनाश हेतु रचा गया कोई भयावह घट्यंत्र है। बीड़ी, सिगरेट, गांजा, चरस, भांग, अफीम, स्मैक, वारविचुरेट्स, हेरोइन, मारिजुआना, हशीश, एम्फासमाइसिन आदि विचित्र-विचित्र पदार्थ हैं। सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि इन पदार्थों का प्रवेश विद्यालयों और महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में हो गया है।

नशा केवल मनुष्य के शरीर को ही प्रभावित नहीं करता है, उसका दुष्प्रभाव मन और भावों तक पहुँच जाता है। शरीर के स्तर पर असाध्य बीमारियों का उद्भव होता है, यह प्रत्यक्ष है। फेफड़ों का कैंसर, मुँह का कैंसर, श्वास रोग, हृदय रोग आदि बीमारियां तम्बाकू के सेवन से होती हैं।

नशे से होने वाली मानसिक और भावनात्मक विकृतियां मनुष्य की अपराध चेतना को जगाती हैं। हिंसा, आतंक, बलात्कार, हत्या आदि क्रूर अपराधों के पीछे मनुष्य की मानसिक विकृति का सबसे बड़ा हाथ है। अन्यथा अभिजात्य कुलों में जन्मे किशोर और युवक हत्या या बलात्कार की बात कैसे सोच सकते हैं? एक समय था, जब यह कहा जाता था कि आभिजात्य वर्ग का व्यक्ति मरना मंजूर कर सकता है, पर गलत काम नहीं कर सकता। धन-वैभव और जीवन से भी अधिक मूल्य वह अपनी इज्जत को देता था। आज वह मानदण्ड कहाँ चला गया? नशे की संस्कृति ने मनुष्य की आर्थिक शुचिता और नैतिक निष्ठा का गला घोंट दिया है।



# व्रत का आधार

व्रत के द्वारा जीवन की दिशा बदल जाने पर व्यक्ति हिंसा और परिव्रथ के अल्पीकरण की ओर चल पड़ता है। जीवन-निर्वाह के लिए अल्पहिंसा और अल्पपरिव्रथ रहता है, शेष कामनाएं धुल जाती हैं। यही कारण है कि व्रत की भावना में सुख का प्रश्न प्रधान नहीं रहता। वहां मुख्य बात हिंसा और परिव्रथ के अल्पीकरण की होती है। यही व्रत का आधार है।

**नी** तिशास्त्र के अनुसार- "नैतिकता व्यक्ति के जीवन से सम्बन्ध रखती है। उसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को आध्यात्मिक पूर्णता प्रदान करना है। राजनीति का ध्येय सामाजिक भलाई की वृद्धि करना है।" ग्रीन महाशय का कथन है कि मनुष्य को आत्म-कल्याण का विचार पहले रखना चाहिए, पीछे उसे समाज की बातों की परवाह करनी चाहिए। जो व्यक्ति आत्मकल्याण की चेष्टा करता है, वह समाज का सच्चा कल्याण अपने आप ही कर देता है।

ऊपर की पंक्तियां व्यक्तिवादी विचारणा की प्रतीक हैं। व्यक्तिवाद स्वार्थपरता है, इसलिए वह समाज को नहीं भाता। नैतिकता और व्यवहार की रेखाएं दो दिशाओं में चलती हैं। नैतिकता के लिए वैयक्तिक स्वतंत्रता आवश्यक है किन्तु राजनीति का आधार वैयक्तिक स्वतंत्रता का समाज के लिए समर्पण है। नीतिशास्त्र का ध्येय मनुष्यों को वैयक्तिक कल्याण प्राप्त करने में सहायता देना है और राजनीति का ध्येय सामाजिक भलाई को प्राप्त करना है। राजनीति की दृष्टि बहिर्मुखी होती है और नीतिशास्त्र की दृष्टि अन्तर्मुखी।

बहिर्मुखी दृष्टि से देखने पर व्यक्तिवाद स्वार्थपरता से अधिक मूल्यवान नहीं लगता, पर सही माने में यह स्वार्थपरायणता नहीं है।

यह आत्मनिष्ठा है। अपना कल्याण किये बिना दूसरों के कल्याण की बात थोथी होती है। वैयक्तिक कल्याण की मर्यादा को न समझने वालों से समाज का उच्चतम कल्याण नहीं हुआ है। वैसे व्यक्तियों द्वारा सम्भव है समाज को बाहरी सफलताएं मिली हों, पर नैतिकता की दृष्टि से वे मूल्यवान नहीं हैं। नैतिक प्रयत्न द्वारा मनुष्य बाहरी पूर्णता प्राप्त करने की चेष्टा नहीं करता। आन्तरिक पूर्णता प्राप्त करने की चेष्टा करता है और यह पूर्णता हेतु की पवित्रता से ही आती है, बाह्य सफलता से नहीं।

## अभ्युदय : निश्रेयस

निश्रेयस (आत्मिक उत्थान) के साथ अभ्युदय (आर्थिक या सामाजिक उत्थान) आता है। वह दूसरों को चोट नहीं पहुँचाता। कोरा अभ्युदय किसी महान साध्य का प्रासंगिक फल या गौण परिणाम नहीं होता, इसलिए वह शुद्धि की मर्यादा का वाहक नहीं रह सकता। समाज समर्पण और परस्परोपयोग (आपसी सहयोग) की प्रयोगभूमि है, इसलिए वह अभ्युदयवादी है। एक-एक व्यक्ति अभ्युदय और निश्रेयस का संगमस्थल होता है। व्यक्ति समाज के बन्धन से बिल्कुल खुला नहीं होता है तो बिल्कुल बंधा हुआ भी नहीं होता। समाज की अपेक्षाओं से वह जुड़ा होता है, इसलिए वह अभ्युदयकारी होता है। अपनी आन्तरिक वृत्तियों के शोधन व





जो व्यक्ति जितनी दूर तक राग-द्वेष के वश में आता है, वह उतनी दूर तक नैतिक आचरण करने में असमर्थ रहता है। अभ्युदय के मार्ग में भलाई-बुराई की परिभाषा समाज की उपयोगिता-अनुपयोगिता से जुड़ी हुई होती है और वहां राग-द्वेष का मर्यादित आचरण भी निन्दनीय नहीं समझा जाता।

नियमन में वह समाजमुक्त भी होता है, इसलिए वह अभ्युदयवादी नहीं होता। इस प्रकार प्रत्येक सामाजिक व्यक्ति आत्म-मोक्ष की मर्यादा में व्यक्ति-शोधन और सामाजिक अपेक्षाओं की स्थिति में अभ्युदयकरण, इन दोनों की सहस्थिति लिये चलता है। यह अभ्युदय और निश्रेयस् का पृथक्करण नहीं किन्तु उनकी मर्यादा का विवेक है। अभ्युदय और निश्रेयस् दो न हों तो फिर उनके द्वैत की कल्पना भी व्यर्थ है। यदि वे दो हैं तो उनके स्वरूप दो होंगे। दो स्वरूप वाली वस्तुओं को एक मानना मतिविपर्यय है।

### भेद का हेतु

अभ्युदय और निश्रेयस् की आराधना का देश-काल की दृष्टि से बंटवारा हुआ। उससे अवश्य ही सम्मोहन बढ़ा। अमुक काल और अमुक क्षेत्र धर्म या निश्रेयस् की आराधना का है और अमुक देश, काल अभ्युदय या व्यवहार की आराधना का। इस प्रकार निश्रेयस् और अभ्युदय की साधना का बंटवारा हुआ, वह उचित नहीं है। किन्तु इनके स्वरूप का स्वयंजात पार्थक्य है। वह अकृत्रिम है, इसलिए वह अस्वाभाविक नहीं है। प्रत्येक कार्य निश्रेयस् के लिए हो, यह स्थिति साधना के उत्कर्ष की है। इससे

पहले सबकी सब क्रिया निश्रेयस् के लिए नहीं होती। स्वजाति, समाज, राष्ट्र तथा विश्व के अभ्युदय के लिए निश्रेयस् से मेल न खाने वाली भी बहुत सारी प्रवृत्तियां होती हैं, उन्हें निश्रेयस् की साधना नहीं कहा जा सकता। इसलिए निश्रेयस् और अभ्युदय का स्वरूप-भेद, साधना-भेद, परिणाम-भेद स्वयं सत्यंकार है। जहां तक किसी प्रकार का आचरण इस निश्रेयस् की प्राप्ति में सहायक होता है, वहां तक आचरण को भला कहा जाता है। जो व्यक्ति जितनी दूर तक राग-द्वेष के वश में आता है, वह उतनी दूर तक नैतिक आचरण करने में असमर्थ रहता है। अभ्युदय के मार्ग में भलाई-बुराई की परिभाषा समाज की उपयोगिता-अनुपयोगिता से जुड़ी हुई होती है और वहां राग-द्वेष का मर्यादित आचरण भी निन्दनीय नहीं समझा जाता।

### अभ्युदयवाद का आधार

अभ्युदयवाद का आधार सुखवाद (स्वार्थ और परार्थ दोनों प्रकार के) और सुखवाद का आधार जड़वाद है। मौत प्राणी की पूर्ण समाप्ति है। यह जड़वाद की पूर्व मान्यता है। इसलिए उसमें जीवन और उसके आधारभूत नव शरीर का सर्वोपरि महत्व है। निश्रेयस् साधना में जीवन और शरीर का महत्व नहीं, वहां उनके नियमन-संयम का महत्व है। जीवन क्षणभंगुर और शरीर असार है, उसमें स्थिरता का अंश और सार-भाव इतना ही है कि जितना वह निश्रेयस् का साधक बने। इसलिए अणुव्रत का घोष है- 'संयमः खलु जीवनम्' अर्थात् संयम ही जीवन है। जीना संयम नहीं है, निश्रेयस् की विचारणा में वस्तुतः जो संयम है, वही जीवन है।

### सुखवाद और संग्रहवाद

मनोवैज्ञानिक सुखवाद व्रत का आधार नहीं बन सकता। सुख मिले, दुःख न हो, जीवन बना रहे, मौत न हो - यह प्राणिमात्र की स्वाभाविक मनोवृत्ति है। सुखैषणा और प्राणैषणा से प्रेरित हो वे सुख-सुविधा के साधन जुटाते हैं। सुख-सुविधा में कहीं खलल न पड़ जाये - यह वृत्ति आगे बढ़ती है। उससे संग्रह का भाव आता है। वह मन के बांध को तोड़ डालता है। फिर आवश्यकता की बात गौण हो जाती है। सिर्फ संग्रह के लिए संग्रह प्रधान बन जाता है। दूसरों के शोषण, उत्पीड़न, दमन आदि सभी कुचेष्टाओं के पीछे यही मनोवृत्ति होती है। सुख पाने और दुःख से बचने की वृत्ति को 'मनोवैज्ञानिक सुखवाद' कहा जाता है। नीतिशास्त्र की दृष्टि से इसे संग्रहवाद कहना चाहिए।

### दो आवश्यकताएं

अभ्युदय में सुख की कामना छूटती नहीं, इसलिए सामाजिक क्षेत्र में दूसरों को दुःख देकर सुख पाने और दूसरों को मारकर जीने की वृत्ति बुरी है, यह माना गया। निश्रेयस् आनन्दमय है। आनन्द चरित्र का उदात्तीकरण है। सुख पौदगलिक तृप्ति या पूर्ति है। इसलिए वैयक्तिक जगत में आनन्दानुभूति के लिए सुख की कामना को बुरा माना गया है। शरीर-धारण और जीवन-निर्वाह के लिए अनिवार्य अपेक्षाओं को पूरा करना सुखवाद नहीं



व्रती जीवन में इच्छा नियन्त्रित हो जाती है। केवल जीवन की अपेक्षा शेष रहती है। व्रत के द्वारा जीवन की दिशा बदल जाने पर व्यक्ति हिंसा और परिग्रह के अल्पीकरण की ओर चल पड़ता है। जीवन-निर्वाह के लिए अल्पहिंसा और अल्पपरिग्रह रहता है, शेष कामनाएं धुल जाती हैं।

है। वह आवश्यकता की पूर्ति है। जीवन-निर्वाह की दो प्रधान जरूरतें हैं - कपड़ा और रोटी। रोटी जैसे शरीर की सहज माँग है, वैसे कपड़ा उसकी सहज अपेक्षा नहीं है, फिर भी लज्जा का संस्कार समाज में इतना प्रधान बन गया है कि कपड़ा पहली जरूरत बन गया। रोटी के बिना कई दिन काम चल सकता है, पर कपड़े के बिना एक घंटा भी काम नहीं चल सकता। रोटी की खोज में आदमी तभी जा सकता है जबकि कपड़ा पहने हुए हो। भावना का अतिरेक भी हुआ है।

### अनर्थ प्रयोग

बम्बई की बात है। एक दिन मैंने एक भाई से पूछा - "टाई का क्या उपयोग है?" उत्तर मिला - "कुछ भी नहीं।" मैंने कहा- "फिर इसका प्रयोग क्यों?" उत्तर मिला - "एक दिन इसे बांधे बिना ऑफिस में चला गया तो अधिकारी ने कहा - टाई न बांधना हो तो नौकरी छोड़ दो।" जो कपड़ा अपने आदिकाल में लज्जा, शीत, ताप आदि का त्राण बना, वह विकास पाते-पाते भावना का त्राण बन गया। यह अनर्थ-प्रयोग है। अर्थ-प्रयोग की दृष्टि से समाज के संस्कारानुसार वह जीवन की पहली जरूरत है, इसमें कोई दो मत नहीं। दूसरी जरूरत रोटी है। तीसरी अपेक्षा है - घर। ये अपेक्षाएं अपेक्षामात्र रहती हैं, तब तक व्यक्ति इन्हें पूरी करता चला जाता है। किन्तु जब इनकी पूर्ति में सुख-साधना, आराम और विलास का विशेष भाव जुड़ जाता है, तब ये अपेक्षाएं गौण बन जाती हैं और सुख-साधना मुख्य बन जाती है। यह है सुखवाद। इसकी दिशा में सहज तृप्ति मिट जाती है। अतृप्ति का तांता-सा लग जाता है।

### सुखवाद की परंपरा

उपाध्याय विनयविजयजी ने सुखवाद की परम्परा को बड़े सुन्दर ढंग से समझाया है :

प्रथममशनपानप्रासिवाज्ञाविहस्ता-  
स्तदनुवसनवेशमालङ्कृतिव्यगचित्ताः।  
परिण्यनमपत्यावासिमिष्टेन्द्रियार्थान्,  
सततमभिलष्टतःस्वस्थांकाशनुवीरन्।

रोटी, पानी, कपड़ा, घर, आभूषण, स्त्री, सन्तान, विषय-स्पर्श, रस, गन्ध, रूप, शब्द-इस प्रकार इच्छा-क्रम सतत प्रवाही है। इसमें बहने वाला व्यक्ति महाहिंसा और महापरिग्रह की दिशा में चला जाता है। इस पर नियन्त्रण जो है, वही व्रत है। व्रती जीवन में इच्छा नियन्त्रित हो जाती है। केवल जीवन की अपेक्षा शेष रहती है। व्रत

## व्रत और विद्यार्थी

व्रत का अर्थ है-संवरण या ढांकना। जो संवृत्त होता है उसमें बाहर का प्रवेश नहीं होता। मकान पर छत होती है तो ऊपर से धूप नहीं आती। द्वार बन्द नहीं है तो हर कोई प्रवेश कर सकता है। खिड़कियां खुली हैं तो पवन और धूप दोनों आ सकते हैं। जिसका जीवन संवृत्त नहीं होता, वहाँ आवश्यकता न होने पर भी बाहर से बहुत आ जाता है। वास्तव में मनुष्य अपने-आप में पूर्ण है। बाहर से उपादेय कुछ नहीं है। फिर भी वह दृष्टि दोष और अज्ञानवश बाहर से लेने का प्रयत्न करता है। उसकी कोई सीमा नहीं है, इसीलिए व्रतों की आवश्यकता होती है।

जिसका मन जितना सन्तुलित होता है, वह उतना ही स्वस्थ होता है। स्वस्थ व्यक्ति में बाहर का असर नहीं होता। बाटर-पूफ में पानी प्रवेश नहीं कर पाता। स्वस्थ न होने पर बाहरी वस्तु का तत्काल असर हो जाता है। उस बाहरी असर से बचने के लिए व्रतों की आवश्यकता है। विद्यार्थी का जीवन नींव के समान है। नींव की कमजोरी मकान को ढाह देती है। कठिन परिस्थिति में भी वह स्थिर रहे, इसलिए नींव की दृढ़ता आवश्यक है। जीवन का आधार व्यक्ति की धारणा होती है। वह अपने रुद्र विश्वासों के आधार पर चलता है। एक व्यक्ति का विश्वास है कि सुख से जीना चाहिए, चाहे जो भी हो। वह सुख के लिए अच्छा या बुरा सब कुछ कर सकता है, उसके लिए हेय कुछ नहीं रहता। दूसरे का विश्वास है कि उत्तम जीवन जीना चाहिए। वह उसके लिए बुरा कार्य नहीं कर सकता। इसीलिए सबसे पहले अपनी मान्यता और विश्वास का परिमार्जन करना आवश्यक है।

के द्वारा जीवन की दिशा बदल जाने पर व्यक्ति हिंसा और परिग्रह के अल्पीकरण की ओर चल पड़ता है। जीवन-निर्वाह के लिए अल्पहिंसा और अल्पपरिग्रह रहता है, शेष कामनाएं धुल जाती हैं। यही कारण है कि व्रत की भावना में सुख का प्रश्न प्रधान नहीं रहता। वहाँ मुख्य बात हिंसा और परिग्रह के अल्पीकरण की होती है। यही व्रत का आधार है।

### व्रत की शक्ति

विश्व की सारी नियामक शक्तियां भय, शस्त्र और जीवन के प्रति मूर्च्छित होकर चलती हैं, वहाँ व्रत की शक्ति अभय, निःशस्त्रीकरण और मृत्यु को सम्मुख रखकर चलती है। जहाँ बाहरी नियमन व्यक्ति में हीन भावना उत्पन्न करते हैं, वहाँ आन्तरिक नियमन उसे अदम्य बनाते हैं। काल के अविरल प्रवाह में ऐसे अनेक व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने व्रत की उपयोगिता को समझा और दूसरों को समझाया। अणुव्रत अनुशास्ता श्री तुलसी उन्हीं में से एक है।



# स्वाध्याय से क्या मिलेगा?

आदमी का यह लक्ष्य रहे कि जीवन में ज्ञान का विकास हो और ज्ञान का विकास तब होता है जब ज्ञानावरणीय कर्म कमज़ोर पड़ता है। ज्ञानावरणीय कर्म को हल्का या कमज़ोर करने का एक उपाय है - स्वाध्याय। अपना अध्ययन करना, अपने बारे में जानना स्वाध्याय है। स्वाध्याय का सीधा संबंध आत्मा के साथ है।

**प्र**

शन किया गया - सज्जाएणं भंते! जीवे किं जणयइ?  
स्वाध्याय करने से जीव क्या प्राप्त करता है? उत्तर  
दिया गया - सज्जाएणं नाणावरणिजं कर्मं खवेइ।

स्वाध्याय करने से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है।

हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है - ज्ञान। जिस आदमी में ज्ञान का अभाव होता है, वह एक प्रकार से अंधा होता है। अंधे आदमी के लिए जैसे बहुत सारी चीजें अज्ञात रह जाती हैं, वैसे ही आदमी के ज्ञान पर जब आवरण आया हुआ होता है, तब वह जान नहीं पाता। जैन कर्मवाद के अनुसार आठ कर्मों में पहला कर्म है - ज्ञानावरणीय कर्म। यह हमारे ज्ञान को आवृत्त करता है।

जिस प्रकार आँख पर पट्टी लगा लेने से दिखायी नहीं देता, उसी प्रकार ज्ञानावरणीय कर्म का उदय हो जाने से आदमी जान नहीं पाता। आदमी का यह लक्ष्य रहे कि जीवन में ज्ञान का विकास हो और ज्ञान का विकास तब होता है जब ज्ञानावरणीय कर्म कमज़ोर पड़ता है। ज्ञानावरणीय कर्म को हल्का या कमज़ोर करने का एक उपाय है - स्वाध्याय। प्राकृत भाषा में इसे सञ्ज्ञाय कहा जाता है। यह स्व और अध्याय दो शब्दों से बना है। अपना अध्ययन करना, अपने बारे में जानना स्वाध्याय है। स्वाध्याय का सीधा संबंध आत्मा के साथ है। आत्मा के बारे में जान लेने का मतलब है

अध्यात्म के बारे में जान लेना। अध्यात्म को जानने के लिए आध्यात्मिक विषयों का अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन स्वाध्याय का एक प्रकार है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार इस प्रकार भी व्याख्या की जा सकती है - सुषु अध्यायः इति स्वाध्यायः - अच्छी तरह सर्वांगीण रूप में अध्ययन करना स्वाध्याय है। पढ़ना-पढ़ाना आदि स्वाध्याय के अंग हैं। पठन-पाठन से ज्ञान का आवरण पतला पड़ता है अथवा उसमें छिद्र हो जाते हैं, जिससे ज्ञान की रश्मियां प्राप्त हो जाती हैं।

ज्ञान-प्राप्ति के लिए विद्यालय बने हुए हैं। चूँकि हम लोग पदयात्रा करते हैं। इसलिए बहुधा विद्यालयों में हमारा प्रवास होता है। जगह-जगह विद्यालयों की विपुलता है। छोटे-छोटे गाँवों में भी विद्यालय मिलते हैं। सरकार भी शिक्षा के लिए जागरूक है। गरीब बच्चों को भी शिक्षा का मौका मिले, उसके लिए भी सरकार सचेष है और शिक्षा की व्यवस्था कर रही है। अज्ञान के कारण आदमी अनेक रुद्धियों को पकड़ लेता है और गलत काम भी कर लेता है। शिक्षा का विकास होने से अज्ञान जनित समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में स्वाध्याय का वैशिष्ट्य माना गया। साधक के लिए स्वाध्याय एक प्रकार का अमृत है। इसका एक





साधक के लिए स्वाध्याय एक प्रकार का अमृत है। इसका एक कार्य है - दूसरों को ज्ञान देना। जब तक साधक स्वयं स्वाध्याय नहीं करेगा, शास्त्रों आदि को नहीं पढ़ेगा, तब तक उसका ज्ञान विकसित नहीं होगा और जब उसका स्वयं का ज्ञान विकसित नहीं होता है तब वह दूसरों को ज्ञान क्या और कैसे दे पाएगा?

कार्य है - दूसरों को ज्ञान देना। जब तक साधक स्वयं स्वाध्याय नहीं करेगा, शास्त्रों आदि को नहीं पढ़ेगा, तब तक उसका ज्ञान विकसित नहीं होता है तब वह दूसरों को ज्ञान क्या और कैसे दे पाएगा? प्रस्तुत आगम के छब्बीसवें अध्ययन में कहा गया है-

पुच्छेज्जा पंजलिउडो, किं कायव्वं मएइहं?  
इच्छं निओइउं भंते ! वेयावच्चे व सज्जाए।

प्रातःकाल गुरु को वन्दन कर शिष्य गुरु से पूछे - "गुरुदेव ! आज आप मुझे किस कार्य में नियोजित करना चाहेंगे। मेरे सामने दो कार्य हैं - सेवा और स्वाध्याय। आपकी आज्ञा हो तो मैं वृद्ध, ग्लान आदि साधुओं की सेवा करूँ।" आपकी आज्ञा हो तो मैं स्वाध्याय करूँ। जैसा आपका निर्देश होगा, मैं वही कार्य करूँगा। सेवा भी महत्वपूर्ण कार्य है और स्वाध्याय का भी अपना महत्व है। संस्कृत साहित्य में कहा गया - स्वाध्यायात् मा प्रमद - स्वाध्याय में कभी प्रमाद मत करो, स्वाध्याय करते रहो। स्वाध्याय को सर्वोत्तम माना गया। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि स्वाध्याय करने से ज्ञान मिलता है। ज्ञान प्राप्त कर आदमी सही आचार का पालन कर सकता है। ज्ञान ही नहीं होगा तो आचार का पालन कैसे होगा? ज्ञान है तो जीवन में अहिंसा आ पाएगी, ईमानदारी आ पाएगी

और संयम आ पाएगा, किन्तु ज्ञान सम्यक् होना चाहिए। सम्यक् ज्ञान का एक बड़ा आधार बनता है स्वाध्याय। इसीलिए स्वाध्याय को सर्वोत्तम तप कहा गया होगा, ऐसा अनुमान किया जा सकता है। ज्ञान लौकिक भी हो सकता है और अलौकिक यानी आध्यात्मिक भी हो सकता है। अध्यात्म विद्या के संदर्भ में ज्ञान के बारे में कहा गया -

जेण तच्चं विबुज्जेज्ज, जेण चित्तं णिरुज्जदि।

जेण अत्ता विसुज्जेज्ज, तं णाणं जिणसासणे ॥

जिससे तत्त्व का बोध होता है, चित्त का निरोध होता है, आत्मा विराट होती है, उसे जिनशासन में ज्ञान कहा गया है। ज्ञान प्राप्त करने की मन में तड़प होनी चाहिए। ज्ञान प्राप्त करना भी तपस्या है, साधना है। तड़प हो तो उसे वृद्धावस्था में भी प्राप्त किया जा सकता है। हमारे धर्मसंघ के उच्च कोटि के वरिष्ठ मुनि मंत्रीमुनिश्री मगनलालजी स्वामी प्रौढ़ अवस्था में थे। गुरुदेव तुलसी की कुछ प्रेरणा मिली। उन्होंने प्रयास किया और उत्तराध्ययन सूत्र के अनेक अध्ययन कंठस्थ कर लिये। यद्यपि बचपन में जितनी आसानी से कंठस्थ हो सकता है, वृद्धावस्था में थोड़ी कठिनाई तो हो सकती है किन्तु पुरुषार्थ हो और बुद्धि हो तो कुछ याद किया जा सकता है। हमारे यहां साधु संस्था में कंठस्थ करने की परम्परा रही है। हजारों-हजारों श्लोक स्मरण कर लिये जाते हैं। कुछ परिश्रम किया जाये तो ज्ञान का विकास हो सकता है। किसी भाषा को सीखना है तो कुछ पुरुषार्थ करना होगा। पहले उस भाषा के व्याकरण को सीखना होगा, साहित्य को पढ़ना होगा, तब कहीं उस भाषा का अच्छा बोध हो सकता है। संस्कृत साहित्य में कहा गया-

विना व्याकरणेनास्यः, बधिरः कोशवर्जितः।

साहित्यरहितः पंगुः, मूकस्तर्कविवर्जितः ॥

किसी भाषा पर अधिकार प्राप्त करना है तो व्याकरण का ज्ञान अच्छी तरह करना होगा, तब प्रकाश मिलेगा। अगर व्याकरण का ज्ञान नहीं होता है तो भाषा की दृष्टि से उस आदमी को अंथा माना गया है। व्याकरण से आँखें खुलती हैं। जिस आदमी के पास शब्द भंडार नहीं होता है, वह आदमी बहरा होता है। क्योंकि जब कोई आदमी भाषण देगा तो वह नये-नये शब्दों का प्रयोग करेगा। यदि श्रोता को शब्दों का ज्ञान नहीं होगा तो उसके लिए उन शब्दों को सुनना और न सुनना प्रायः समान होगा। इसलिए शब्द भंडार के बिना आदमी को बहरा बताया गया है। जिसकी साहित्य में गति नहीं होती, वह भाषा की दृष्टि से पंगु होता है और जिसके पास तर्क बल नहीं होता, वह शास्त्रों को सुन लेता है किन्तु प्रश्न नहीं उठा सकता। इसलिए उसे मूक कहा गया है। परिश्रम करने से आदमी किसी भाषा को भी आत्मसात् कर सकता है, शास्त्रों की गहराई में भी जा सकता है। जिसकी ज्ञान के प्रति रुचि नहीं होती, वह कैसे और कितना ज्ञान का विकास कर सकेगा।

पूज्य गुरुदेव तुलसी बड़े ज्ञानी पुरुष थे, शास्त्रों के वेत्ता थे, कई भाषाओं के वेत्ता थे। उन्होंने कितने-कितने शिष्यों को ज्ञान



आर्षवाणी में सुन्दर कहा गया कि स्वाध्याय के द्वारा, पठन-पाठन, अनुप्रेक्षा, जिज्ञासा आदि के द्वारा ज्ञान को आवृत्त करने वाला ज्ञानावरणीय कर्म क्षीण होता है और आदमी में ज्ञान का विकास होता है। ज्ञान का विकास होना जीवन की एक उपलब्धि होती है। हम ज्ञान का विकास करें, जिससे हमें प्रकाश प्राप्त हो सकें।

का दान दिया। एक बार उन्होंने साधुओं की सभा में फरमाया था कि तुम लोगों को तत्त्वज्ञान का विकास करना चाहिए। हम लोग हमेशा तुम्हारे सामने नहीं रहेंगे। आखिर स्वयं को ज्ञान का विकास करना चाहिए। अपना ज्ञान ज्यादा काम आता है। दूसरों के भरोसे ज्यादा नहीं रहना चाहिए। ज्ञान के बिना आदमी सदगुणों से वंचित भी रह सकता है, अपना नुकसान भी कर सकता है। इसलिए व्यक्ति ज्ञान-प्राप्ति के लिए अध्यवसाय युक्त बने। मात्र साधु-साध्वियों को ही नहीं, गृहस्थों को भी आध्यात्मिक ज्ञान का विकास करना चाहिए। आजकल तो ज्ञान प्राप्ति की बहुत सुलभता है, इतना साहित्य, इतनी अनुकूल साधन सामग्री उपलब्ध है और इंटरनेट आदि के माध्यम से भी ज्ञान आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। ऐसी स्थितियों में अपने समय का कुछ उपयोग यथासंभव ज्ञानात्मक विकास में भी अवश्य ही करना चाहिए ताकि जीवन में कुछ प्राप्त हो सके।

हमारे धर्मसंघ में बड़े नामी और ज्ञानी सन्त हुए हैं - मुनिश्री घासीरामजी स्वामी। उनके जीवन का एक प्रसंग है। वे जब वैरागी अवस्था में थे, तब पूज्य आचार्य श्री कालूगणी के दर्शन करने सुजानगढ़ गये। वहां के लोढ़ा परिवार ने उनको भोजन के लिए आमंत्रित किया। भोजन में उनको संभवतः खीर परोसी गयी। उस खीर के ऊपर बादाम, पिस्ता आदि के पतले टुकड़े करके डाले गये थे। वैरागीजी ने खीर नहीं खायी। लोगों ने कहा - वैरागीजी, खीर खाइए।

वैरागी ने कहा - खीर कैसे खाऊँ? इसके ऊपर तो कितनी लटें तैर रही हैं। वे मेवाड़ के एक गाँव के रहने वाले थे। उस जमाने में शायद मेवाड़ में खाद्य पदार्थों का इतना विकास नहीं हुआ होगा। तभी उनके लिए अज्ञात बात थी कि ऐसा भी कोई खाद्य पदार्थ होता है। ज्ञान के अभाव में पौष्टिक चीजें भी उनके लिए लटें बन गयीं।

आदमी में ज्ञान का सम्यक् विकास हो। चाहे अध्यात्म का क्षेत्र हो अथवा व्यवहार का क्षेत्र हो। ज्ञान का अभाव सर्वत्र त्याज्य होता है। इसलिए आर्षवाणी में सुन्दर कहा गया कि स्वाध्याय के द्वारा, पठन-पाठन, अनुप्रेक्षा, जिज्ञासा आदि के द्वारा ज्ञान को आवृत्त करने वाला ज्ञानावरणीय कर्म क्षीण होता है और आदमी में ज्ञान का विकास होता है। ज्ञान का विकास होना जीवन की एक उपलब्धि होती है। हम ज्ञान का विकास करें, जिससे हमें प्रकाश प्राप्त हो सकें।

## चरित्र में गिरावट एक चिन्तन

■ सिद्धार्थ शर्मा - बैंगलुरु ■

आज औसत समझदार भारतीय का यह मानना है कि समाज के चरित्र में लगातार गिरावट आ रही है। यह आश्वर्यजनक है कि पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या के साथ-साथ धर्मगुरु भी बढ़े, धर्मस्थान भी बढ़े, धार्मिक साहित्य भी बढ़ा, धार्मिक अनुष्ठान भी बढ़े, यहां तक कि धार्मिक टीवी चैनल तक की प्रचुरता के बावजूद हम सब मान रहे हैं कि औसत चरित्र घट रहा है। यह विसंगति क्यों? यह विसंगति इसीलिए है क्योंकि भारतीय संस्कृति आज परिचय के संकट से गुजर रही है।

यह परिचय का संकट क्या है? स्वस्थ समाज में कार्य विभाजन स्पष्ट रहता है और कर्ता चिह्नित होते हैं। जैसे हम बीमारी में मॉल नहीं, अस्पताल जाते हैं और वहां पर भी सेकड़ों लोगों में हमारी नजर सफेद कोट पहने हुए व्यक्ति पर होती है, क्योंकि हम डॉक्टर को खोज रहे होते हैं। ठीक वैसे ही, नैतिकता पर कुछ बोलने का हक केवल तपस्वी चारित्रितामाओं को होता है, जिन्होंने अपना सारा जीवन केवल चरित्र निर्माण में लगाया हो।

असामान्य काल में यह स्पष्टता धूमिल हो जाती है और रावण जैसे धूर्त भी संन्यासी का भेष बना सीता हरण करने लगते हैं। आजकल राजनेता भी समाज को नैतिकता का प्रवचन देने लगते हैं। चूँकि राजनीति के पास चरित्र प्रधान इकाइयों से अधिक संसाधन और सामर्थ्य होता है, तो उनका उपदेश अधिक लोगों तक पहुँचता भी है और उसे सुनने में जनता को अधिक आनंद भी आता है।

परिचय के इस सामाजिक संकट से निकले बगैर निकट भविष्य में भारत में चारित्रिक अवनति ही स्वाभाविक परिणति है, जब तक चरित्र प्रधान इकाइयां सीधे सत्ता से सत्य का संबाद करके चरित्र के विषय पर अपना निर्णायिक एकाधिकार पुनः स्थापित नहीं कर लेतीं।



# अहिंसक चेतना का विकास है अणुव्रत

एक दिन मानव समाज के सामने चरित्र, सत्य, संयम, अहिंसा आदि का बहुमूल्य स्थान था लेकिन दुर्भाग्य से आज उनका स्थान सत्ता, राजनीति व पैसों ने ले लिया। इन शाश्वत मूल्यों के विघटन के कारण मानवता आज कराह रही है। इसलिए आवश्यक है कि व्यक्ति-व्यक्ति में अणुव्रत के प्रति आस्था जागे और वह अणुव्रत अपनाये।

**अ**हिंसा जीवन का एक उजला प्रभात है। हिंसा जीवन की काली स्याह रात है। अहिंसा जीवन की मंजिल है। हिंसा जीवन का भटकाव है। अहिंसा जीवन का आधार है। अहिंसक चेतना का विकास ही अणुव्रत है। हिंसा जीवन का पूर्ण असंयम है और अहिंसा जीवन का पूर्ण संयम। पूर्ण असंयम में रहना मनुष्य के लिए अहितकर है और पूर्ण संयम की साधना कठिन है। अणुव्रत इस निष्कर्ष का चिन्तन है कि मनुष्य पूर्ण संयम न कर सके तो च्यूनतम संयम अवश्य करे।

अणुव्रत आंदोलन का 75वां वर्ष चल रहा है, जिसे अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस एक वर्ष के लिए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की यात्रा 'अणुव्रत यात्रा' के रूप में निर्धारित है। 'अणुव्रत यात्रा' का मुख्य उद्देश्य है सद्भावना, नैतिकता और नशायुक्ति का विकास। हर व्यक्ति के जीवन में नैतिकता एवं आध्यात्मिकता का समावेश हो। आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा, चार प्रकार का विकास अपेक्षित होता है - भौतिक विकास - अच्छी सड़कें, बिजली, मकान आदि जीवन की आवश्यकताएं। इस भौतिक विकास का समाज में अच्छा उपयोग और महत्व होता है।

भौतिक विकास के लिए आर्थिक विकास भी अपेक्षित होता है। ये दोनों विकास महत्वपूर्ण और आवश्यक भी हैं, किन्तु यह विकास का आधा भाग माना जा सकता है। विकास का दूसरा आधा भाग है कि जनता में नैतिकता का विकास हो और आध्यात्मिकता का भी विकास हो। अहिंसा, नैतिकता के विकास के बिना चेतना भी दूषित हो जाती है और बाह्य विकास में भी बाधा आ सकती है। आज अणु की शक्ति व व्रत के महत्व से मानव अपरिचित नहीं है। आज तो प्रश्न यह है कि मानव अणु का उपयोग किस प्रकार करे, जिससे जीवन आनंदमय एवं कल्याणकारी बन सके और व्रत को कैसे अपनाये कि वह बंधन नहीं, स्वभावमय बन जाये। अणुव्रत किसी जाति, वर्ग, वर्ण व सम्प्रदाय विशेष का नहीं है। इसका क्षेत्र मानव मात्र है। आज मानव समाज के सामने सबसे बड़ा संकट है मूल्यों के विघटन का। एक दिन मानव समाज के सामने चरित्र, सत्य, संयम, अहिंसा आदि का बहुमूल्य स्थान था लेकिन दुर्भाग्य से आज उनका स्थान सत्ता, राजनीति व पैसों ने ले लिया। इन शाश्वत मूल्यों के विघटन के कारण मानवता आज कराह रही है। इसलिए आवश्यक है कि व्यक्ति-व्यक्ति में अणुव्रत के प्रति आस्था जागे और वह अणुव्रत अपनाये। ■■■



# सत्य और अहिंसा का यथार्थ

सत्य का पथ एक प्रकाश-पथ है और असत्य का मार्ग अंधकार का मार्ग है। जो व्यक्ति अहिंसा में पूर्ण प्रतिष्ठित हो जाता है, वह सत्यनिष्ठा होगा ही। अहिंसा का क्षेत्र मात्र 'किसी को न मारने' तक ही सीमित नहीं है। हिंसा कार्मिक, वाचिक और मानसिक हो सकती है। इस प्रकार की हिंसा को रोकने का नाम ही अहिंसा है।

**अ**पने वन्य जीवन से आज तक की मानव की यात्रा सभ्यता और संस्कृति की यात्रा रही है। सत्य और अहिंसा के प्रत्यय उसके ज्ञानोदय के प्रतिफलन हैं। अनेकानेक दार्शनिक अवधारणाएँ भी इसी प्रक्रिया की कड़ी हैं। विश्व के प्रायः सभी भूखण्डों में जहाँ मानव ने सभ्यता का सूर्योदय देखा, ज्ञान का सतत अन्वेषण एवं उसका अनुप्रयोग निर्बाध चलता रहा। परिणामस्वरूप, सभ्यताएँ और संस्कृतियाँ क्रमशः पुष्टि एवं पलवित होती रही हैं।

भारत के मंत्रद्रष्टा ऋषियों और चिन्तकों ने सत्य और अहिंसा के बारे में चिन्तन-मनन करके इन प्रत्ययों को जीवन में समाविष्ट करने की सलाह दी थी। उन्होंने स्वयं अपने जीवन में सत्य और अहिंसा का अनुप्रयोग करके एक आदर्श जीवनशैली का उदाहरण प्रस्तुत किया था। व्यष्टि के स्तर पर किये गये ये अनुप्रयोग कालान्तर में समष्टि के लिए 'बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय' जीवनादर्शों के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। हालाँकि विश्व की अन्य प्राचीन सभ्यताओं में भी सत्य और अहिंसा के संबंध में वहाँ के मनीषियों ने प्रभूत विचार-विमर्श किया था।

जहाँ तक सत्य की अवधारणा की बात है, उसे परिभाषा की परिधि में बाँधना प्रायः कठिन रहा है। कहा भी गया है कि सत्य

एक है, विप्रा: बहुधा वदन्ति। सत्य का मुख हिरण्यमय पात्र से ढका हुआ है, इसलिए इसका सही स्वरूप जानना दुष्कर ही है। सत्य निरपेक्ष होते हुए भी सापेक्ष होता है। इसे 'अंधों का हाथी' भी कहा गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि सत्य एक तात्त्विक प्रत्यय है जिसे परम सत्य (Absolute Truth) भी कहा जाता है। इस परम सत्य को जो ब्रह्म का ही एक रूप है, संसार के ऋषियों और मुनियों ने युगों-युगों से जानने की चेष्टा की है, पर 'नेति नेति' कहकर वे सभी एक खोज से दूसरी खोज में ही लगे रहे। परिणामतः परम सत्य को कोई नहीं जान पाया है सिवाय उनके जो समाधिस्थ स्थिति में उस सत्य का साक्षात्कार करते हैं। सत्यान्वेषण की इस जटिलता को देखते हुए सत्य की व्यावहारिक परिभाषा का सहारा लेना संभवतः उचित होगा। मोटे अर्थ में 'सम्यक् दृष्टि' को सत्य का कामचलाऊ पर्याय माना जा सकता है। जो वस्तु जैसी है, वैसी ही उसे देखने की कोशिश सत्य के ज्यादा करीब दीखती है।

जब हमारी 'सम्यक् दृष्टि' किन्हीं क्षुद्रताओं, संकीर्णताओं, मूढ़ताओं, दुराग्रहों या पूर्वाग्रहों से धुंधला जाती है तो हम सत्य से दूर चले जाते हैं। इसे असत्य की दिशा में बढ़ना भी कहा जा सकता है। इसे अंधकार की ओर भी जाना कह सकते हैं।





अहिंसा कोई मिथक नहीं, यह तो जीवन का अनुभूत सत्य है। अहिंसा दुर्बलता नहीं है, शक्ति का पुंजीभूत स्वरूप है, आत्मिक तेज की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। अहिंसा की तेजस्विता का प्रतिफल हम गांधीजी जैसे महान व्यक्तियों में देख सकते हैं। भारत में ही क्या, विश्व के प्रायः सभी दर्शनों में अहिंसा का किसी न किसी रूप में प्रतिपादन मिलता है।

इसीलिए प्रार्थना में कहा गया है 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, असत्य से सत्य की ओर ले चलो। कुल मिलाकर कहना ठीक रहेगा कि सत्य का पथ एक प्रकाश-पथ है और असत्य का मार्ग अंधकार का मार्ग है।

जहाँ तक अहिंसा की बात है, सत्य उसका उत्पाद है। योगदर्शन में यम के अंतर्गत अहिंसा को पहला स्थान दिया गया है, सत्य को दूसरा। जो व्यक्ति अहिंसा में पूर्ण प्रतिष्ठित हो जाता है, वह सत्यनिष्ठ तो होगा ही। अब अहिंसा का क्या अर्थ है, इसे समझ लें। तभी सत्य और अहिंसा के युग्म को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, इनके यथार्थ में समझना आसान होगा। अहिंसा एक सकारात्मक जीवन दृष्टि है। अहिंसा का क्षेत्र मात्र 'किसी को न मारने' तक ही सीमित नहीं है। हिंसा कार्मिक, वाचिक और मानसिक हो सकती है। इस प्रकार की हिंसा को रोकने का नाम ही अहिंसा है।

विश्वप्रेम, सहिष्णुता, करुणा, सहानुभूति, समानानुभूति आदि मानवीय उदात्त गुणों का ही नाम अहिंसा है। अहिंसा मानव धर्म है। जब कभी मानव इस धर्म से च्युत होने लगता है तो वह मानव नहीं रह जाता। पर इतना कहना जरूरी है कि हिंसा का प्रतिशामक (Antidote) अहिंसा ही है, हिंसा नहीं। जो लोग हिंसा का प्रतिरोध हिंसा से करते हैं, वे विनाश के कर्दम में फँस जाते हैं।

अहिंसा कोई मिथक नहीं, यह तो जीवन का अनुभूत सत्य है। अहिंसा दुर्बलता नहीं है, शक्ति का पुंजीभूत स्वरूप है, आत्मिक तेज की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। अहिंसा की तेजस्विता का प्रतिफल हम गांधीजी जैसे महान व्यक्तियों में देख सकते हैं। भारत में ही क्या, विश्व के प्रायः सभी दर्शनों में अहिंसा का किसी न किसी रूप में प्रतिपादन मिलता है।

यह सही है कि पाश्चात्य दर्शन में अहिंसा शब्द का प्रयोग न मिलता हो, पर अहिंसा के जो घटक प्रेम, करुणा, त्याग, अपरिग्रह आदि हैं, उनका प्रकारान्तर से विवेचन अवश्य मिलता है। 'अहिंसा परमो धर्मः' से हम सभी परिचित हैं। पारसी, यहूदी, ईसाई, इस्लाम, सूफी, शिन्तो, ताओ तथा सिख धर्मों में भी अहिंसा का समर्थन किया गया। जैन और बौद्ध धर्म में अहिंसा तो उनका प्राण तत्त्व है ही।

इस्लाम धर्म में भी हिंसा की निन्दा की गयी है और अहिंसा को प्रधानता देते हुए मदिरापान, ईर्ष्या, लालच, असत्य, कृपणता, अभिमान, हिंसा, युद्ध आदि को त्याज्य बताया गया है। मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी हजरत अली ने मानवों को संबोधित करते हुए कहा - "हे मानव, तू पशु-पक्षियों की कब्जा अपने पेट में मत बना।" कहने का तात्पर्य यह है कि संसार के सभी धर्मों में अहिंसा जैसे मानवीय गुण का सर्वत्र समर्थन और संपोषण मिलता है।

अहिंसा और सत्य का अविच्छिन्न संबंध है। अहिंसा हमें न केवल हिंसा से बचाती है, अपितु अपनी विलक्षण तेजस्विता से हमें सत्यनिष्ठ भी बनाती है। जो अहिंसक होगा, वह उदात्तमना भी होगा, वह सत्याग्रही भी होगा। वह सम्यक दृष्टि वाला भी होगा, समतावादी होगा, प्रेमिल और करुणाशील भी होगा। जो अहिंसक होगा, वह विभिन्न क्षुद्रताओं, दुर्बलताओं, जड़ताओं, संकीर्णताओं, मूढ़ताओं और पूर्वाग्रहों से मुक्त होगा। वह छद्म और मिथ्याचरण से मुक्त होगा। वह सत्य के अधिक निकट होगा। अहिंसा और सत्य में प्रतिष्ठित होकर वह एक आदर्श मानव होगा। ऐसी अहिंसक दृष्टि से संपन्न लोग ही एक अहिंसक समाज की संरचना में एक महत्वपूर्ण घटक बन सकते हैं। अहिंसा और सत्य का यथार्थ तो यही है कि मानव का धर्म पारस्परिक प्रेम ही है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव सत्य और अहिंसा की सुदृढ़ भित्ति पर ही टिका रह सकता है।

निस्सन्देह आज का वैश्विक परिप्रेक्ष्य नितांत निराशाजनक है। सत्य और अहिंसा हाशिये पर हैं। असत्य और हिंसा का सर्वत्र बोलबाला है। आज के भोगवादी और उपभोक्तावादी समाज में सत्य और अहिंसा की बात न केवल अव्यावहारिक समझी जा रही है, अपितु इनके रास्ते पर चलने वालों को नितांत अव्यावहारिक और उपहासास्पद माना जा रहा है।

बड़ा विचित्र-सा विरोधाभास है कि 'न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्' और 'अशरफ उल मखलूकात' जैसे शब्दों का प्रयोग कर मनुष्य की श्रेष्ठता का परिचय दिया गया है, वही मनुष्य हिंसा और असत्य जैसी असद् प्रवृत्तियों में लिस है। लगता है जैसे

आदिम हिंसक प्रवृत्ति पर तथाकथित सभ्यता का कोई विशेष असर नहीं पड़ा है। हमारा वर्तमान परिप्रेक्ष्य हिंसा, असत्य, मिथ्याचरण जैसी अमानवीय प्रवृत्तियों को सींच रहा है। हमारी वर्तमान भौतिक दौड़ हमें हिंसा की अंधेरी गली में ले जा रही है। हमारे दृश्य श्रव्य मीडिया हमें और हमारे बच्चों को हिंसा और असत्य का सबक सिखा रहे हैं। विज्ञान के नित्य नूतन आविष्कार हमें नितान्त स्वार्थप्रेरित और हिंसक बना रहे हैं। मोबाइल हमें झूठ बोलना सिखा रहा है। आदमी, आदमी से बेगाना बनता जा रहा है। सम्यक् हार्ड के अभाव में सर्वत्र अशान्ति, असंतोष, अविश्वास, मनोमालिन्य, शोषण, गैरबराबरी, गैर इंसाफी जैसी दुष्प्रवृत्तियों की 'ऑक्टोपस' गिरफ्त में हम सब फँसे हुए हैं। 'वैश्विक ग्राम' (ग्लोबल विलेज) बनती यह दुनिया क्या वास्तव में विघटन के कागर पर नहीं खड़ी हुई है? माना कि हमारी भौतिक उपलब्धियाँ अनुपमेय हैं, पर अहिंसा और सत्य के अभाव में मानवता हीन बच्ची तो इन उपलब्धियों को कौन भोगेगा?

आज हम सर्वत्र विषमताओं के बीहड़ जंगल में भटक रहे हैं। हिंसा और असत्य इसीलिए हम पर हावी हो रहे हैं। विषमताओं से क्या कोई सुख मिल सकता है?

अज्ञान कर्दमे मग्नः जीवः संसार सागरे।  
वैषम्येण समायुक्तः प्रासुमहति नो सुखं॥

संसार-सागर के अज्ञान रूपी कीचड़ में लिप, विषमता से युक्त जीवन कभी भी सुख को प्राप्त नहीं कर सकता। हिंसा और असत्य की उर्वरा भूमि में विषमता का पौधा पनपता है, यह हमें याद रहना चाहिए। ऐसी विपर्यस्त स्थिति में अहिंसा और सत्य के द्वारा अर्जित समता दृष्टि तथा 'मैत्रिं भूयेषु कप्पए' (प्राणियों से मैत्री करो) 'आयतुले पयासु' (सबको अपने तुल्य समझो) की भावना ही मानवीय गुणों के संरक्षण और अनुपालन में अधिक सहायक हो सकती है।

'सर्वे भवन्तु सुखिनो' केवल अहिंसा और सत्य के द्वारा ही संभव है। यह सही है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य अनेकानेक चुनौतियों से भरा हुआ है। भौतिकता की अंधी दौड़ में लगे मनुष्य को सत्य और अहिंसा की तेजस्विता पर भरोसा नहीं, पर वह भूल रहा है कि जब तक वह इन मानवीय गुणों का जीवन में मनसा-वाचा-कर्मणा अक्षरशः पालन नहीं करेगा, तब तक 'सुख' उसके लिए मात्र मृगमरीचिका ही बना रहेगा।

यह सच है कि हमारा वर्तमान परिप्रेक्ष्य सत्य और अहिंसा जैसी मानवीय प्रवृत्तियों के विकास हेतु अनुकूल प्रतीत नहीं होता। सर्वत्र हिंसा का साम्राज्य दिखायी दे रहा है। आतंकवाद, सांप्रदायिक अलगाव, धार्मिक मतान्धता, शोषण, ये सब हिंसा और असत्य के कुनबे के सदस्य ही तो हैं, मगर अहिंसा और सत्याचरण ही हमें इनसे मुक्ति दिला सकता है। यह ठीक है कि ऐसा रातों-रात संभव नहीं, पर सतत प्रयत्न करते हुए उस दिशा में निष्ठा और विश्वास से बढ़कर ही हम एक अहिंसक समाज की नींव रख सकते हैं।

अभी भी देर नहीं हुई है। गलत दिशा में हजार-दो हजार मील तक चले आने के बाद भी सही दिशा पकड़ने के लिए हमें फिर हजार-दो हजार मील नहीं चलना है। सिर्फ पलटना भर है। हम पलटे नहीं कि सही दिशा में होंगे। हजार साल से अंधेरे कमरे को प्रकाशित करने के लिए हजार साल नहीं चाहिए। सिर्फ स्विच ऑन करना है। कमरा प्रकाश से भर जाएगा। तो आइए, सत्य और अहिंसा की प्रतिस्थापना के लिए हम सब मिलकर प्रयत्न करें और समाज को एक बेहतर समाज बनाने में मदद करें।

 जयपुर निवासी लेखक सुप्रसिद्ध साहित्यकार, शिक्षाविद् एवं योगाचार्य हैं। इन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी में 45 कृतियों का सुजन तथा 11 कृतियों का सम्पादन किया है। आप अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित हैं।

## नेह नीर सा राखिए...

■ डॉ. पूनम गुजरानी-सूरत ■

माटी पानी में मिले, सहन करे फिर आग।  
सबकी प्यास बुझाय फिर, गाए शीतल राग।।

माटी मटका रूप धर, करती बड़ा कमाल।  
कीमत जिसकी शून्य थी, हो गयी मालामाल।।

गागर में सागर भरे, पनिहारिन घर जाय।  
तृप्ति दे परिवार को, सुख स्वर्ग सा पाय।।

माटी जब मटका बने, कीमत करते लोग।  
मिहनत करते जो यहां, उसे मिले संजोग।।

दो गागर माथे धरी, दो गागर धर हाथ।  
टुमक चले पनिहारियां, बातें सखि के साथ।।

नेह नीर सा राखिए, बूंद बूंद अनमोल।  
इसके बिन जीवन नहीं, लो अंतर्मन तोल।।





अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

# अणुव्रत अमृत महोत्सव

21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024

## प्रत्येक मंगलवार : संयम दिवस

प्रत्येक मंगलवार अर्थात् "संयम दिवस" संयम के अभ्यास का दिन है। मुख्यतः तीन संकल्प इस दिन के लिए निर्धारित हैं। संयम के प्रति हमारी यह जागरुकता हमारे आचार, विचार और व्यवहार में संयम को अभिन्न हिस्से के रूप में शामिल करने में मददगार सिद्ध होगी। संयम दिवस के ये तीन संकल्प हैं -

1. एक घण्टा मौन साधना करूँगा/करूँगी।
2. नशे से मुक्त रहूँगा/रहूँगी।
3. मांसाहार नहीं करूँगा/करूँगी।

### संयम अभ्यास के सुझाव

संयम को हमारे दैनंदिन जीवन का हिस्सा बनाने के लिए हम अपने विवेक से, अपनी रुचि अनुरूप छोटे-छोटे व्रत संयम दिवस के लिए निर्धारित कर सकते हैं। ये व्रत हमारे जीवन को श्रेष्ठता के नये पायदान चढ़ने का आधार बन सकते हैं। सुझाव स्वरूप प्रस्तुत हैं कुछ सूत्र -

- किसी प्राणी को अपने आमोद-प्रमोद के लिए न सताना।
- प्राणियों का वध करके बनायी गयी प्रसाधन सामग्री का उपयोग न करना।
- संयत भाषा में बात करना, गाली-गलौज या अपशब्दों का प्रयोग न करना।
- गुस्सा न करना। गुस्सा आये तो कुछ क्षणों के लिए मौन का अभ्यास करना।
- सुबह उठने के बाद और रात्रि को सोने से पहले महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करना।
- किसी के साथ दुर्व्यवहार न करना, हो जाये तो क्षमा माँगना।
- कम से कम 15 मिनट ध्यान का अभ्यास करना।
- सुबह या रात को सोने से पहले कम से कम 15 मिनट सत्साहित्य पढ़ना।
- वीडियो गेम्स न खेलना।
- सोशल मीडिया पर सक्रिय न रहना।
- झूठ बोलने से बचना।
- स्नान, ब्रश और शोविंग आदि करते समय पानी का उपयोग कम से कम करना।
- एक किलोमीटर की दूरी के लिए वाहन का उपयोग न करना।
- भोजन जूठा न छोड़ना।
- फास्ट फूड न खाना।



# सा विद्या या विमुक्तये

विद्या सहजता, सरलता, स्पष्टता, सादगी, सच, स्नेह, व्यापकता की ओर ले जाती है। इससे शुभ, लाभ, मंगल, कल्याण, साधना, संकल्प, निष्ठा का विकास होता है। इसको सही दिशा, अवसर, मौका, माहौल, समझ, सोच, विचार मिल जाये तो विद्या सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की राह आसान कर देती है।

## वि

द्या में समग्रता, ब्रह्माण्ड, विविधता, अनेकता में एकता का भाव समाया हुआ है। एक को साथे सब सधे की बात है। विद्या सहजता, सरलता, स्पष्टता, सादगी, सच, स्नेह, व्यापकता की ओर ले जाती है। इससे शुभ, लाभ, मंगल, कल्याण, साधना, संकल्प, निष्ठा का विकास होता है। इसको सही दिशा, अवसर, मौका, माहौल, समझ, सोच, विचार मिल जाये तो विद्या सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की राह आसान कर देती है। दुनिया में विद्या प्राप्त करने वाले असंख्य लोग हैं जो अशिक्षित, अनपढ़ रहते हुए अद्भुत क्षमता के धनी रहे हैं। इनके अनेक उदाहरण हमारे समक्ष उपस्थित हैं।

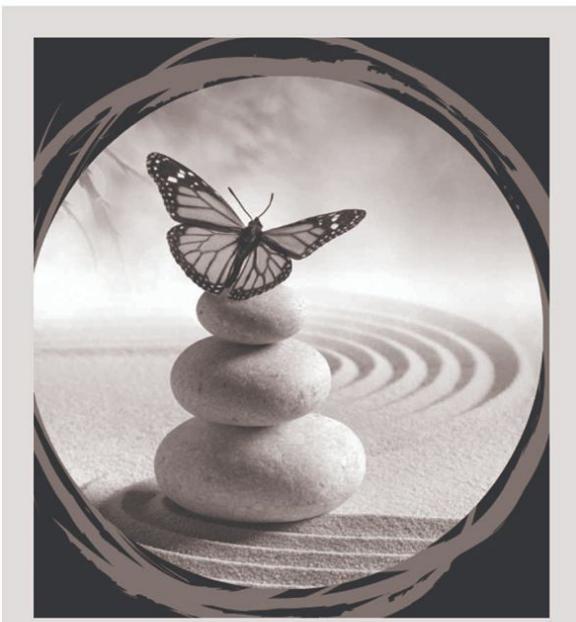
ऐसी शिक्षा जो साक्षरता, पुस्तक, जानकारी, सूचना तक सीमित रह जाती है, वह खंड, पिंड, सीमित, संकुचित मानसिकता की ओर धकेलती है। लाभ, लोभ, शोषण, लूट के रास्ते खोलती है। भाव को समझने के लिए विद्या और शिक्षा शब्द का प्रयोग किया गया लगता है। कुछ जगह शिक्षा, सबक, सीख, विद्या, ज्ञान आदि शब्दों को पर्यायवाची भी माना जाता है। विद्या का मनुष्य जीवन में बहुत बड़ा योगदान, महत्व है। विद्या विकास के द्वार खोलती है। एक सार्थक जीवन जीने का माध्यम बनती है। मुक्ता

के द्वार खोलती है। यह विद्या आखिर है क्या? इसे जानने, समझने, पहचानने, अपनाने की आवश्यकता है।

अक्षर ज्ञान, साक्षरता, लिखना-पढ़ना तो शिक्षा का अंग है। विद्या का वास्तविक सही स्वरूप तो बहुत ही वृहद्, विस्तृत है। शिक्षा पर पुरातन काल से तरह-तरह से काम किया जाता रहा है। इसके विभिन्न स्वरूप, परिभाषा, प्रकार प्रकट हुए। अनेक प्रकार के प्रयोग, विचार होते रहे हैं। घर, समाज, आश्रम, गुरुकुल, विद्यालय, पाठशाला, शिक्षण संस्थानों के द्वारा शिक्षा मिलती रही। मुफ्त से लेकर महंगी, मुक्त से लेकर बंधन युक्त, सामान्य से लेकर विशेष, खुले आसमान से लेकर बंद भवन तक शिक्षा ने अनेक उत्तार-चढ़ाव, प्रयोग देखे हैं। यह क्रम अभी भी जारी है और आगे भी जारी रहेगा। इसलिए संवाद, चर्चा, गोष्ठी, सम्मेलन, कार्यशाला, प्रयोग, विचार-मंथन, चिंतन-मनन की सतत आवश्यकता है।

विद्या का मतलब है मनुष्य का मानसिक, शारीरिक, भौतिक, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक सभी प्रकार का विकास यानी समग्र विकास। जीने की कला का अभ्यास, आचरण, पालन ही विद्या है। जिससे जीवन में विनम्रता,





विद्या का मतलब है मानसिक, शारीरिक, भौतिक, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक यानी समग्र विकास। जीने की कला का अभ्यास, आचरण, पालन ही विद्या है। जिससे जीवन में विनम्रता, चिंतन, मनन, श्रम, सादगी, सहजता, सरलता, निर्भयता, निष्पक्षता, कला, संगीत, रोजगार, साहित्य, सामूहिकता, सामंजस्य, सौहार्द, स्वावलंबन सधे, वह विद्या है।

चिंतन, मनन, श्रम, सादगी, सहजता, सरलता, निर्भयता, निष्पक्षता, कला, संगीत, रोजगार, साहित्य, सामूहिकता, सामंजस्य, सौहार्द, स्वावलंबन सधे, वह विद्या है। संक्षेप में कहें तो हाथ, हृदय, मस्तिष्क का विकास जिससे संभव हो, वह विद्या है।

सीखना-सिखाना, पढ़ना-पढ़ाना, तालीम लेना-देना, सूचना का आदान-प्रदान, अभ्यास, दक्षता, निपुणता, उपदेश, साधना, मंत्र, तप, जप, सबक, शासन, न्याय, समता, संयम, श्रम, स्वानुशासन, करुणा, दंड, विनय, शिष्टता, विनप्रता, विज्ञान, कला, प्रयोग, ज्ञान, साहित्य, सुजनशीलता, रचना, कौशल विद्या के अंग हैं। विद्या जन्म से मृत्यु तक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। विद्या क्षेत्र, समाज, देश, प्रकृति की जरूरत के अनुसार अपनी पांडिती, राह तलाश लेने की क्षमता, कुशलता रखती है।

श्रम निष्ठा द्वारा स्वास्थ्य, उद्योग द्वारा स्वावलंबन, कर्म द्वारा सत्य निष्ठा और वैज्ञानिक वृत्ति, कार्य द्वारा व्यवस्था तथा स्वच्छता का अभ्यास, सामूहिक जीवन द्वारा सहिष्णुता, सहयोग द्वारा सेवा वृत्ति, कार्य कुशलता द्वारा ज्ञान पिपासा की पूर्ति और स्वाध्याय,

निर्माण द्वारा कल्पना, मूल प्रवृत्तियों का शोधन, कर्तव्य निष्ठा आदि मानवीय गुणों से ही विद्या की बुनियाद मजबूत होती है।

स्वच्छ और स्वस्थ जीवन, सामाजिक शिक्षण और समाज सेवा, मूल उद्योग और स्वावलंबन, सांस्कृतिक और कलात्मक जीवन, तत्संबंधी सिद्धांत, ज्ञान की प्राप्ति एवं उसका अभ्यास भी विद्या के अंग हैं। आत्म संरक्षण, जीविकोपार्जन, पालन-पोषण, नागरिकता की शिक्षा, अवकाश का सदुपयोग - ये पाँच तत्त्व विद्या के अभिन्न भाग हैं।

अंग्रेजी विद्वान हेक्सले का कहना है, "उस आदमी को सच्ची शिक्षा मिली है जिसका शरीर इतना सधा हुआ है कि उसके काबू में रह सके और आराम व आसानी के साथ उसका बताया हुआ काम करे। उस व्यक्ति को सच्ची शिक्षा मिली है, जिसकी बुद्धि शुद्ध है, शांत है और न्यायदर्शी है। उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पायी है, जिसका मन कुदरत के कानूनों से भरा है और जिसकी इन्द्रियां अपने वश में हैं, जिसकी अन्तर्वृत्ति विशुद्ध है और जो नीच आचरण को धिक्कारता है तथा दूसरों को अपना जैसा समझता है। ऐसा आदमी सचमुच शिक्षा पाया हुआ माना जाता है, क्योंकि वह कुदरत के नियमों पर चलता है। कुदरत उसका अच्छा उपयोग करेगी और वह भी कुदरत का अच्छा उपयोग करेगा।" यहाँ शिक्षा शब्द जिससे हम विद्या कह रहे हैं, उस भाव में ही प्रयोग किया गया है।

यह सच्चाई है कि सदाचारी, नैतिक, इन्द्रियों को वश में रखने वाला विद्या ग्रहण करेगा तो उसका सदुपयोग कर सकता है। ऐसे आधार पर बनी इमारत ही टिक सकती है। वही जनहित में काम कर सकता है। सबके भले में ही अपना भला देख सकता है। अच्छा सफल नागरिक सिद्ध हो सकता है। मानवता, प्रकृति, मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं को समझकर आगे बढ़ सकता है।

ऐसी कहावतें बहुत प्रचलित हैं कि यथा राजा तथा प्रजा, यथा गुरु तथा शिष्य, यथा जनक (माता-पिता) तथा संतान, यथा भाषाक तथा भाषा अर्थात् जैसा बोलने वाला वैसी बोली। संगत, सत्संग, संगीत, साथ, सोच, समझ, माहौल, वातावरण पर विद्या का बड़ा प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा मातृभाषा में हो, शिक्षा मुफ्त हो, शिक्षा लोगों की जरूरतों को पूरा करती हो, शिक्षा स्वावलंबी बनाने का काम करे, श्रम शिक्षा का अभिन्न अंग रहे, शिक्षा काम-धंधे, उत्पादन, कृषि, उद्योग से जुड़ी हो, शिक्षा की व्यवस्था पर जनता का अंकुश रहे, शिक्षा और व्यक्ति, परिवार, घर, समाज, देश की स्थिति के बीच आपस में मेल हो, शिक्षा समग्रता में हो।

एकांगी अक्षर ज्ञान बहुत खतरनाक है। यह शिक्षा के लिए जरूरी है। चिंतन-मनन की स्पष्टता, अपने लक्ष्य, प्रेरणा को प्राप्त करने के लिए प्रभावी ढंग से कर्म करने की शक्ति, कुशलता सीखना शिक्षा और विद्या दोनों की जरूरत है।



गांधीजी ने भी शिक्षा के बारे में बहुत कुछ कहा, लिखा, प्रयोग किया। एक नयी दिशा, सोच, समझ पैदा की। बुनियादी शिक्षा, नयी तालीम के प्रयोग काफी चर्चित रहे हैं। गांधीजी ने कहा, "सार्थक शिक्षा वही है जो अच्छाई और बुराई में फर्क करना सिखाये। अच्छाई को आत्मसात करते हुए बुराई से बचने की राह दिखाये। बिना हिम्मत की शिक्षा ऐसी ही है, जैसे मोम का पुतला। दिखने में सुंदर होते हुए भी किसी गरम चीज के जरा छू जाने से ही वह पिघल जाता है।

"सा विद्या या विमुक्तये" यानी विद्या वही है जो मुक्त करे- इस प्राचीन मंत्र को सिद्ध करे। विद्या यानी केवल आध्यात्मिक ज्ञान और मुक्ति यानी छुटकारा, इतना ही इसका अर्थ न करें। विद्या का अर्थ है लोकोपयोगी सारा ज्ञान प्राप्त करना और मुक्ति से मतलब है इस जीवन में सब तरह की गुलामी से छुटकारा पाना।

गुलामी का अर्थ है किसी दूसरे के अधीन होना या अपने आप पैदा की हुई बनावटी जरूरतों का गुलाम बनना। इस प्रकार की मुक्ति जिसके द्वारा मिले, वही असली शिक्षा है। शिक्षा जीवन भर चलती है। उसका प्रारंभ जन्म से ही हो जाता है और मृत्यु के साथ ही समाप्त होती है। जाने-अनजाने भी मनुष्य शिक्षा ग्रहण करता है। बापू ने कहा है कि "सुसंस्कृत घर जैसी कोई पाठशाला नहीं और ईमानदार, सदाचारी माता-पिता जैसे शिक्षक नहीं।" गांधीजी के ये भाव विद्या को ही स्पष्ट करते हैं, चाहे शब्द शिक्षा का प्रयोग किया गया है।

संत विनोबा भावे के ये शब्द जय जगत की ऊँचाई पर पहुँचाते हैं -

"हम किसी भी देश विशेष के अभिमानी नहीं।  
किसी भी धर्म विशेष के आग्रही नहीं।  
किसी भी सम्प्रदाय व जाति विशेष में बद्ध नहीं।  
विश्व में उपलब्ध सद् विचारों के उद्यान में विहार करना,  
यह हमारा स्वाध्याय।  
सद् विचारों को आत्मसात करना हमारा धर्म।  
विविध विशेषताओं में सामंजस्य प्रस्थापित करना,  
विश्व वृत्ति का विकास करना, यह हमारी वैचारिक साधना।  
हमारे जीवन का ध्येय है, हृदयों को जोड़ना।"

हमारी चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए, समझने के लिए विद्या और शिक्षा शब्दों का प्रयोग किया गया है। हमें अब विद्या और शिक्षा शब्द पर बहस में नहीं पड़कर इनके भाव, आत्मा, सत को समझने, जानने की आवश्यकता है। आज के जमाने में जो पढ़ाई है, वह विद्या की श्रेणी में नहीं आती है, ऐसा लगता है।

दिल्ली में रहने वाले लेखक प्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक व कार्यकर्ता हैं।  वे गांधी युवा विरादी के माध्यम से देशभर में गांधी का संदेश फैला रहे हैं।

## धड़कन में बसते पिता...

■ मनोज जैन 'मधुर' - भोपाल ■

हर छवि में दिखते पिता, हमको सदा अनूप।  
आशीषों की छाँव हैं, उपकारों की धूप।।

सिखलाये तुमने हमें, जीवन में सद्कर्म।  
पिता तुम्हारी राह पर, निभा रहे हम धर्म।।

सुन लेते हैं आज भी, हम अक्सर पदचाप।  
ऐसे लगता सामने, पिता खड़े हैं आप।।

अपलक राह निहारते, अनथक मेरे नैन।  
पिता तुम्हारी याद में, अब भी हूँ बेचैन।।

थाम पिता की ऊँगलियाँ, रखते नन्हे पैर।  
दुर्गम राहें भी लगीं, हमें सुबह की सैर।।

कठिन डगर हो सामने, या हो अंधा मोड़।  
पिता कभी जाते नहीं, हमें अकेला छोड़।।

झीनी यादों का बजा, जब मोहक संतूर।  
तब मन को ऐसा लगा, पिता नहीं हैं दूर।।

धड़कन में बसते पिता, रहते दिल के पास।  
इस मीठे एहसास से, हर मौसम है खास।।

पीड़ा हो कितनी सघन, या हों कष्ट अनंत।  
पिता स्वयं सब झेलकर, करते दुःख का अंत।।

रिथितियाँ चाहे रहीं, बदतर या विपरीत।  
लिखी समय के भाल पर, सदा पिता ने जीत।।



## ज्वेलर्स शॉप इंश्योरेंस



## लाईफ इंश्योरेंस



## कैशलेस मेडीक्लेम



हमारे विशेषज्ञों द्वारा  
अपनी पुरानी ज्वेलर्स ब्लॉक पॉलिसी  
या मेडिक्लेम पॉलिसी की जाँच करवाएँ और  
अनुकूल नियमों और शर्तों के साथ  
मुफ्त कोटेशन प्राप्त करें।

नो रुम कैटगरी वाली  
कैशलेस मेडिक्लेम पॉलिसी लें  
और इसे केवल 2600/- की  
मामूली राशि से सुपर टॉप अप  
पॉलिसी के साथ जोड़ें

### इंश्योरेंस टिप्प

अपने पुराने जीवन बीमा पॉलिसी  
नंबर के साथ शेयर करें,  
हम एक परिवार पोर्टफोलियो प्रदान करेंगे  
और उसी के अनुसार बेहतरीन योजना  
की सलाह देंगे।

यदि किसी इंश्योरेंस कंपनी ने आपके  
मौजूदा क्लेम को खारिज कर दिया है  
और आपको किसी सहायता या सलाह  
की आवश्यकता होती है, तो हम  
मदद के लिए तैयार हैं।

Legacy of  
**39**  
Years

**25000**  
HAPPY  
CUSTOMERS  
INDIA & ABROAD

**11000**  
Claims  
Solved

**300**  
National &  
International  
Awards

वर्ष 2020-21 में हमने 50+ करोड़ की वैल्यु के क्लेम सैटल किए हैं जिसमें पॉलीसी है  
ज्वेलर्स ब्लॉक, लाईफ इन्शुरेन्स, मेडीक्लेम, फायर एवं बर्गलरी।



Ganpat Dagliya  
Gold Medalist  
T.O.T - U.S.A.

 **NICE**<sup>TM</sup>  
INSURANCE LANDMARK

One Stop Insurance Solution in India !

हम देश विदेश में सभी ग्राहकों को ऑनलाइन सुविधा द्वारा सेवा देते हैं।



Chirag Dagliya  
M.B.A & Harvard Cert.  
T.O.T - U.S.A

#### Contact Details :

A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th Floor, Dr. A. Merchant Road Kabutar Khana, Near Kalbadevi,  
Marine Lines (East) Mumbai- 400002 • Email : [info@niceinsure.com](mailto:info@niceinsure.com) | [www.niceinsure.com](http://www.niceinsure.com) | Inter Com : 5050  
LIC Department : 7045850013 | 7045850014 • Jewellers Department : 7045850015 | 9167860661 | 7045850013  
Mediclaim Department : 7045850016 | 7047850017 | 9167860665 | 7045850013 • Motor Department : 9167860661  
Claim Support Team : 7045850012 | 9167860663 • Landline : 022 - 46090022 | 46090023 | 46090024 | 40062222



अनुज्वत | जून 2023 | 23

# योग-अनुभूत साधना का वैचारिक आदर्श

योग विद्या भारतवर्ष की अमूल्य संपत्ति है जो सुदूर अतीत काल से गुरु परंपरा पूर्वक चली आ रही है। पतंजलि ने चित्त वृत्ति के निरोध को योग कहा है। चित्तवृत्ति के निरोध द्वारा योग संपन्न होता है। चित्तवृत्ति के निरोध के संपन्न हो जाने पर व्यक्ति सांसारिक उलझनों से मुक्त हो जाता है।

**यो** ग हमारे ऋषियों, महर्षियों और तपस्वियों की अनुभूत साधना का वैचारिक आदर्श है। महर्षि पतंजलि का योग दर्शन समस्त साधकों, भक्तों एवं उपासकों के लिए परम उपयोगी शास्त्र है। इसमें अन्य दर्शनों की भाँति खंडन-मंडन न करते हुए सरलता पूर्वक संयमित जीवन पद्धति पर प्रकाश डाला गया है। इसीलिए आज के युग में न केवल आध्यात्मिक बल्कि धार्मिक क्षेत्र में भी योग दर्शन के महत्व को स्वीकार किया गया है।

प्राणियों के भवसागर पार करने हेतु महर्षि पतंजलि ने योग का निरूपण किया। उन्होंने अष्टांग योग का प्रतिपादन किया जो यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि के रूप में जाने जाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी इसका महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। योग विद्या भारतवर्ष की अमूल्य संपत्ति है जो सुदूर अतीत काल से गुरु परंपरा पूर्वक चली आ रही है।

पतंजलि ने चित्तवृत्ति के निरोध को योग कहा है। उनके दर्शन के अनुसार योग का अर्थ समाधि ही होता है। चित्तवृत्ति के निरोध द्वारा योग संपन्न होता है। चित्तवृत्ति के निरोध के संपन्न हो जाने पर व्यक्ति सांसारिक उलझनों से मुक्त हो जाता है।

एक दिन श्री रामकृष्ण परमहंस ने अपने भक्तों से कहा, "क्या तुम ऐसा चित्रला सकते हो जिसमें अपने अंडे को सेते किसी पक्षी की आँखें, किसी साधनारत योगी की तरह दिखायी दे रही हो।"

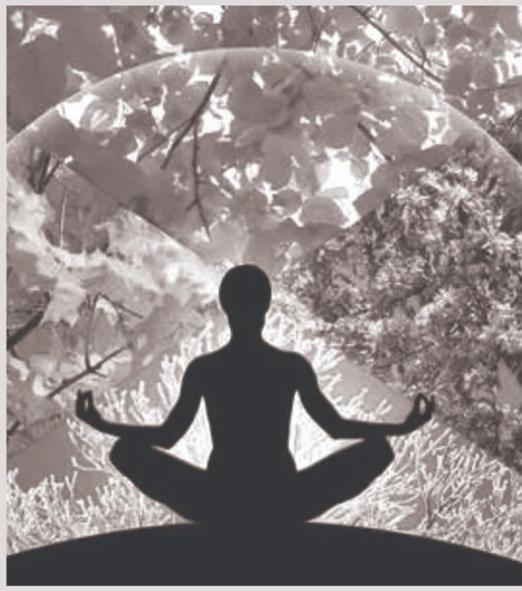
एक शिष्य ने कहा- "गुरुदेव! मैं समझा नहीं, योगी की आँखें कैसी होती हैं? मैं नहीं जानता।"

तब परमहंस जी ने कहा- "योगी के नेत्र वैसे ही होने चाहिए जैसे अंडा सेते हुए पक्षी के हो जाते हैं। अंडा सेते समय पक्षी का पूरा मन अंडों पर ही केंद्रित हो जाता है। यही बात एक सच्चे योग साधक के संबंध में भी है।" श्री रामकृष्ण सभी साधकों को ऐसा ही अंतर्मुखी जीवन बनाने का उपदेश देते थे।

बौद्ध दर्शन के अनुसार ध्यान अवस्था में आंतरिक चेतना को क्षमतावान बनाने का सतत प्रयास करना ही योग है। बौद्ध संघ के सदस्यों के दैनिक जीवन का मुख्य भाग ध्यान का अभ्यास करना ही है। बौद्ध धर्म के ध्यान एवं योग संबंधी दोनों ही सिद्धांत इस बात पर बल देते हैं कि मानसिक प्रशिक्षण के लिए शारीरिक एवं स्वास्थ्य संबंधी अवस्थाओं का अनुकूल होना आवश्यक है।

गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने संपूर्ण साहित्य में भगवत् प्राप्ति के मुख्य साधन में योग, ध्यान एवं तल्लीनता को ही प्रधान





आत्मा को मन और इत्रियों के साथ विषयों के संपर्क से दुःख-सुख के अनुभव होते हैं। जब मन आत्मा में स्थित हो जाता है तब दुःख-सुख की अनुभूति नहीं होती। मन की आत्मा, परमात्मा में लीन हो जाने की अवस्था को योगियों ने योग कहा है।

कारण माना है। विनय पत्रिका, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, कवितावली आदि में योग पर प्रचुर सामग्री प्राप्त होती है। मानस में पद-पद पर योग की महिमा ही गायी गयी है, वह चाहे कर्मयोग हो, चाहे ज्ञान योग हो, चाहे भक्ति योग। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कल्याण के लिए भगवत् प्राप्ति के इन साधनों की निष्ठापूर्वक उपासना करनी चाहिए, क्योंकि योग, जीव को भगवान से जोड़ने की भी विधा है। योग का तात्पर्य ही जोड़ से है अर्थात् आत्मा का परमात्मा से मिलन का नाम योग है। यह संभव भी तभी हो सकता है जब बाह्य चित्तवृत्ति का पूर्णतया निरोध हो।

भगवान् व्यास देव ने प्रायः सभी पुराणों, लघु एवं वृहद् व्यास स्मृतियों और महाभारत के लघु प्रसंगों में अनेक ऋषियों के मतों एवं योग का अनेकप्रकार से वर्णन किया है।

प्राचीन ऋषि-महर्षि त्रिकालदर्शी थे। उन्होंने जिन ग्रंथों का निर्माण किया, उनमें कल्याणकारी भावना निहित थी। इसीलिए वैदिक सूक्तों, वेदांगों तथा दर्शन शास्त्रों में भी योग शक्ति ही प्रमुख रूप से वर्णित हुई है। मनुष्य के शारीरिक लाभ तथा रोग आदि के निराकरण के लिए ऋषियों ने आर्योवेद शास्त्र का भी निर्माण किया जिनमें चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि आचार्यों ने अपने देश-काल-परिस्थिति के अनुसार योग विद्या का भी वर्णन किया है। इन

राम, कृष्ण, ईशा मसीह, गौतम बुद्ध, महावीर, गुरुनानक, मूसा और मोहम्मद आदि सभी ने मस्तिष्क की संकीर्णता से ऊपर उठकर उदार एवं गंभीर चिंतन का और समस्त विश्व के साथ आत्मभाव करने का निर्देश दिया है और इस प्रकार सभी प्राणियों तथा परमात्मा के साथ तादात्य स्थापित करने का संदेश दिया है, यही योग का मुख्य लक्ष्य है।

सबका मूल चरक संहिता मानी गयी है जो महर्षि पतंजलि की रचना के रूप में मान्य है। इसमें मनुष्य के अंतर्मन में स्थित विविध प्रकार के भावों और आत्मा-परमात्मा के कोमल विचारों को उल्लेखित किया गया है।

चरक संहिता में योग की व्याख्या करते हुए कहा गया है, आत्मा को मन और इंद्रियों के साथ विषयों के संपर्क से दुःख-सुख के अनुभव होते हैं। जब मन आत्मा में स्थित हो जाता है तब दुःख-सुख की अनुभूति नहीं होती। मन की आत्मा, परमात्मा में लीन हो जाने की अवस्था को योगियों ने योग कहा है। वेद, उपनिषद्, आरण्यक, ब्राह्मण ग्रंथ, इतिहास-पुराण सभी में योग की व्याख्या एवं विवरण मिलता है। योग विशिष्ट में योग पर 32 सौ श्लोक हैं।

महाभारत में एक जगह कहा गया है कि योग के द्वारा सारी सिद्धियों, समस्त सुफल और भगवान को भी प्राप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार भगवद्गीता में तथा अन्य शास्त्रों में योग की सर्वाधिक महिमा देखने को मिलती है। योग में हिंदू, ईसाई, जैन, बौद्ध, सिख, मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर आदि का भेदभाव नहीं दिखता है। योगी तो सर्वत्र निर्विकार भाव से परमात्मा को देखता है। योगी सब में एक ही पूर्ण ब्रह्म परमात्मा को देखता है।

भगवद्गीता में श्रीकृष्ण अपने प्रिय भक्त अर्जुन को कहते हैं - "हे अर्जुन! अपनी वृत्तियों को मुझमें तन्मय करते हुए अपनी पूरी इच्छाशक्ति द्वारा मन को वश में कर लो और मुझ में नित्य युक्त हो जाओ, सारी योग साधना का इतना ही सार तत्त्व है।"

राम, कृष्ण, ईशा मसीह, गौतम बुद्ध, महावीर, गुरुनानक, मूसा और मोहम्मद आदि सभी ने मस्तिष्क की संकीर्णता से ऊपर उठकर उदार एवं गंभीर चिंतन का और समस्त विश्व के साथ आत्मभाव करने का निर्देश दिया है और इस प्रकार सभी प्राणियों तथा परमात्मा के साथ तादात्य स्थापित करने का संदेश दिया है, यही योग का मुख्य लक्ष्य है।

लेखक मनेन्द्रगढ़ कोरिया (छत्तीसगढ़) में रहकर अध्यापन करने के साथ ही 20 वर्षों से योग साधना में रत हैं। साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए वे जगदगुरु शंकराचार्य पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं।



# The Psychology of Peace : A Unique Way



The Tea Ceremony is a kind of meditation-in-motion with a flowing, coming-into-focus of the object and movement of each moment, then letting it go in the next moment, and with a simultaneous global awareness of guests, self, and the whole seamless context as one. Ideally this kind of meditative awareness-in-action generalizes to one's everyday activities and spreads peace naturally.



**T**he history of The Way of Tea goes back to the 12th century when monks brought tea along with Zen Buddhism from China to Japan. Perhaps partly in reaction to the violence of the warring states of Japan, Green tea drinking there developed by the 16th century into a refined ritual. This ritual has been practised for 400 years to survive today in the same form. Anthropologist Jennifer Anderson says the purpose of such ritual is to help one relate to a transcendent order behind the perceived chaos in the world. Surely it fosters peace within oneself, with others, and with the environment.

In 16th century Japan, warriors left their swords in a rack outside the tea hut, because it was a place of tranquility where nobility, warlords, merchants, and Buddhist monks came together to relish a time of silence, being in nature, and enjoying a bowl of tea. Although conflicts still occurred, finely crafted tea utensils were sometimes exchanged to avoid battle.

The most famous tea master of all time, who lived then, Sen Rikyu, was a Zen Buddhist monk who practiced The Way of Tea in simple, rustic austerity as a meditative path to spiritual enlightenment. Descendent of that famous tea master, the current Grand Master of the Urasenke tradition that I follow, left his Japanese home for World War II with a new tea ritual his father developed for use on board ship with his navy compatriots. It must have given them great comfort. He returned after Japan's devastating defeat to find his father in the tearoom cordially serving tea to the enemy American soldiers.

He realized then that, as he often says, peace can begin with a bowl of tea prepared with all the heart and received with all the heart. He has now spread The Way of Tea to about 30 countries.

The 16th century tea master Sen Rikyu said that the most important purpose of tea is spiritual enlightenment, "It is to practice and realize the way in accord with the





In 16th century Japan, warriors left their swords in a rack outside the tea hut, because it was a place of tranquility where nobility, warlords, merchants, and Buddhist monks came together to relish a time of silence, being in nature, and enjoying a bowl of tea. Although conflicts still occurred, finely crafted tea utensils were sometimes exchanged to avoid battle.

Buddha's teaching". He taught the 4 principles of tea: "wa", "kei", "sei," and "jaku".

"Wa" embodies the Taoist concept of harmony between persons as well as between humans and nature and the environment. The tea host carefully selects everything to harmonize: the guests, season, theme of the event, flowers, tea, sweets, and utensils. The humble politeness of participants to each other becomes more than mere form, as an emptying of self leads to an experience of oneness with others.

"Kei" or respect is evident in the reverence extended to each person and to the artists involved and the careful handling of their works and to nature. This can also give rise to a sense of oneness with the participants, with each utensil being used, the tea itself, and nature. Another example of

this respect is that students are admonished not to kill insects but to carefully "relocate" any that visit the tearoom.

"Sei" or purity is the meticulous ceremonial purification of the setting and utensils and, most importantly, of oneself. For example, holding the bamboo ladle in the "mirror position" symbolically mirrors not the face but the heart to examine its purity in preparing the bowl of tea for the guest.

"Jaku" or tranquility or enlightenment is not a goal for which to strive but a natural result of following the first three principles. If one practices consistently the harmony, respect, and purity within oneself, with others, with human-made objects, and with nature a profound peace and wisdom and compassion for all will arise from the emptiness/oneness experienced. Sen Rikyu spoke of entering the serenity of nothingness and then returning to the world to behold that everyone and everything, even a tiny blade of grass. share that glorious nothingness as the basis of being. We cannot help bowing to each other.

Our current Grand Master summarizes the purpose of the Tea-Way thus: "to realize tranquility in communion with others within our world". This speaks of peace: 1. within the individual as well as 2. in relationship with others as well as 3. in harmony with the environment--both nature and human-made objects. The tea ceremony is a kind of meditation-in-motion with a flowing, coming-into-focus of the object and movement of each moment, then letting it go in the next moment, and with a simultaneous global awareness of guests, self, and the whole seamless context as one. Ideally this kind of meditative awareness-in-action generalizes to one's everyday activities and spreads peace naturally.

The author is a Clinical Psychologist & Japanese Tea Ritual Teacher, Driftwood, Texas, United States. The tea ceremony has become a "way of life" for her.



# अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

दादू, मेरे सबसे अच्छे टी-शर्ट  
कुतरने वाला चूहा आज  
पकड़ा गया.....



बच कर कहाँ  
जाएगा बच्चू...,  
अब तो मैं तुझे मार कर  
ही रहूँगा।



कुतरना तो चूहे की प्रकृति है,  
इसका अपराध नहीं।  
किसी निरपराध को कभी  
मारना नहीं चाहिए बेटा !



समझ गया दादू,  
मैं इसे दूर कहीं खाली जगह  
पर छोड़ आता हूँ।  
...यही इसकी सजा है।



# कदमों के निशां

आचार्य तुलसी ने कहा था,  
अणुव्रत चरित्र निर्माण का  
आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार  
की स्थापना के पीछे उद्देश्य है  
उन लोगों का आदर जो चरित्र  
निर्माण के लिए कृत संकल्प है।  
अणुव्रत के आदर्शों के प्रति  
जिनके मन में गहरी निष्ठा है।  
ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से  
समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति  
आस्था बढ़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था,  
“सत्य की खोज करना बड़ी बात है  
और उससे भी बड़ी बात है  
सत्य को क्रियान्वित करना।  
अणुव्रत पुरस्कार सत्य को  
क्रियान्वित करने वालों को  
मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ  
कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।”

आचार्य महाश्रमण कहते हैं,  
“भारत के नागरिकों में नैतिकता  
के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत  
इसी दिशा में कार्यशील है।  
अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के  
महत्व को प्रतिपादित करने वाला  
अभिक्रम है।”

वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की  
शुरुआत की गयी। तब से 28  
विभूतियों को इस पुरस्कार से  
सम्मानित किया जा चुका है।  
अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत  
प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और  
एक लाख इक्यावन हजार रुपये

की राशि प्रदान की जाती है।  
अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने  
वालों की जीवन गाथा से  
परिचित होना मानवीय मूल्यों से  
साक्षात् करना है। आने वाली  
पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा  
लेकर स्वस्थ समाज की संरचना  
की दिशा में कदम बढ़ाएं, इसी  
उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से  
सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का  
परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित  
किया जा रहा है।

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित व्यक्तित्व

## टी. एन. शेषन नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए सदैव समर्पित



टी. एन. शेषन के नाम से प्रसिद्ध तिरुनेल्वड़ नारायण अच्यर शेषन का जन्म 15 दिसम्बर 1932 को केरल के पलककड़ जिले के तिरुनेलै में हुआ था। उन्होंने मद्रास के क्रिश्चियन कॉलेज से भौतिकी में विज्ञान स्नातक (ऑनर्स) की परीक्षा उत्तीर्ण की और कुछ समय तक वहां व्याख्याता भी रहे। उन्होंने 1954 में संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण की और तमिलनाडु कैडर के प्रशिक्षु के रूप में भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल हुए तथा विभिन्न विभागों में महत्वपूर्ण पदों का दायित्व सफलतापूर्वक निभाया।

1985 में शेषन को पर्यावरण और वन मंत्रालय में सचिव का पद मिला। उनके कार्यकाल में पर्यावरण और वनों को लेकर कई सख्त कानून लागू किये गये। वन्यजीवों के शिकार को लेकर भी वे काफी सख्ती बरतते थे। श्री शेषन को आजाद भारत के ऐसे नौकरशाह के रूप में याद किया जाता है, जो देश को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने के लिए प्रतिबद्ध थे। भ्रष्टाचार मिटाने के लिए वे किसी के भी खिलाफ जाने का साहस रखते थे।

वर्ष 1990 में टी. एन. शेषन के मुख्य चुनाव आयुक्त बनने के पहले तक निर्वाचन आयोग की भूमिका से आम आदमी प्रायः अपरिचित था लेकिन शेषन ने इसे जनता के दरवाजे पर ला खड़ा किया। नैतिक मूल्यों को स्थापित करने की दिशा में शेषन ने पहली बार कदम उठाये। चुनाव प्रक्रिया में सुधार के लिए उठाये गये कदमों के कारण सरकार से आपका टकराव भी हुआ, मगर आप पीछे नहीं हटे। देश के हर वाजिब वोटर के लिए मतदाता पहचान पत्र उन्हीं की पहल का नतीजा है।

ईमानदारी और कानून के प्रति अपनी निष्ठा की वजह से वे बहुतों को खटकते भी थे। लेकिन वे व्यवस्था में क्रांति लाने वाले इंसान, मेहनती, सक्षम प्रशासक, योग्य नौकरशाह तथा बुद्धिजीवियों और मध्य वर्ग के नायक थे। श्री शेषन तमिल, मलयालम, संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी, कन्नड़, मराठी, गुजराती सहित कई भाषाओं के जानकार थे। उनके पास जायदाद के नाम पर किताबों का एक बड़ा संग्रह था। उन्होंने ‘द डीजेनरेशन ऑफ इंडिया’, ‘ए हर्ट फूल ऑफ बर्डन’ नाम की पुस्तकें भी लिखीं। मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में 1996 में श्री शेषन का कार्यकाल खत्म हुआ। उन्हें रैमन मैग्सेस अवॉर्ड से भी सम्मानित किया गया।

चारित्रिक मूल्यों के विकास एवं सार्वजनिक जीवन में पारदर्शिता लाने के सार्थक प्रयासों के लिए श्री टी. एन. शेषन को 2012 में अणुव्रत पुरस्कार प्रदान किया गया। 10 नवंबर, 2019 को चेन्नई में उनका निधन हो गया।





# लाखों की लॉटरी

शांत स्वभाव वाले दीपक की मर्मभेदी बातें सुनकर अंजना निःशब्द रोने लगी और वह भी उनके पीछे चल गई। अंजना का मन चीरव-चीरवकर कह रहा था, "...तीवी, तुमने कहा था कि तेरी लाखों की लॉटरी निकल आयी है। क्या यही होता है लाखों की लॉटरी का सुख...?"

**दी** पक ने जैसे ही घर को बेचने की हरी झंडी दिखायी, रवि और अवि घर के सामान की सूची बनाने में जुट गये। चल-अचल संपत्ति का पूरा ब्यौरा तैयार करने के साथ यह भी ध्यान रखा कि कौन-सा सामान कौन और कब लाया था तथा कौन-सा सामान कब किसको उपहार में मिला था। अंजना दो घंटे से खाना लगाये, बार-बार उनसे खाने का आग्रह कर रही थी, पर वे कह देते, "बस...पाँच मिनट माँ!"

अंजना अपने दोनों पुत्रों तथा पुत्रवधुओं के व्यवहार को देखकर आश्वर्यचकित थी। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी परवरिश में कहाँ कमी रह गयी? आखिर क्या कमी है इस घर में...दोनों के लिए अलग-अलग कमरे, अलग-अलग गाड़ियाँ...धूमने-फिरने की पूरी आजादी। हाँ, पारिवारिक एकता की प्रतीक रसोई अवश्य उन्होंने एक ही रखी थी। रात का भोजन

भी वे एक साथ करते, क्योंकि दीपक के अनुसार इससे परिवार में प्रेम और सौहार्द बढ़ता है। अंजना का मन अनायास अतीत के गलियारों में भटकने लगा...

दीपक सेल्फमेड व्यक्ति हैं। वे रीजनल इंजीनियारिंग कॉलेज में प्राध्यापक रहे थे। वे कुशल अध्यापक तो थे ही, विद्यार्थियों की हर समस्या को सुलझाने के कारण अपने विद्यार्थियों के चहेते भी थे। घर में दिन भर विद्यार्थियों की भीड़ लगी देखकर एक बार अंजना ने झुझलाकर दीपक से कह दिया था, "आपके साथी धनार्जन हेतु शिक्षा का दान कुछ विशेष घंटों में ही करते हैं और आप हैं कि जब भी कोई समस्या लेकर आता है, तुरंत उसके समाधान में जुट जाते हैं। आखिर क्यों?"

"अंजना, छात्र जीवन में मैं जब अपनी समस्याओं और प्रश्नों के समाधान हेतु शिक्षकों के पास जाता था तो वे 'अभी



समय नहीं है' या फिर 'कल आना...' कहकर टाल देते थे। शायद वे अपने कीमती समय के एवज में मुझसे कुछ उम्पीद रखते होंगे!! उस समय मेरे पास उन्हें देने के लिए कुछ नहीं था। अब मैं अपने जैसे ही छात्रों की कुछ मदद करना चाहता हूँ।" उन्होंने अतीत में झाँकते हुए उत्तर दिया था।

उसके बाद फिर अंजना ने उन्हें कभी नहीं टोका था। वह अपने छोटे-से घर परिवार में सुखी थी। विवाह के दो वर्ष बाद ही रवि के जन्म ने उसके आंचल में खुशियों के फूल छितरा दिये थे। कुछ वर्षों पश्चात् फिर नवागंतुक की आहट मिली तो दीपक ने यह कहकर कि मुझे अब तुम्हारा प्रतिरूप चाहिए, हँसती-खेलती बच्चियों के चित्र लाकर बेडरूम में लगा दिये थे किन्तु होनी को कौन टाल पाया है!! नर्स से पुत्ररन की प्राप्ति की सूचना मिलने पर अंजना यह सोचकर मायूस हो गयी कि वह दीपक की एकमात्र इच्छा पूरी नहीं कर पायी। उसे उदास देखकर उसकी बड़ी बहन संजना ने उसका मनोबल बढ़ाते हुए कहा था, "अंजना, बेटा या बेटी होना तेरे हाथ में तो नहीं है। यह सोच कि बैठे-बिठाये ही तेरी लाखों की लॉटरी निकल आयी है।"

"दीदी, बेटा-बेटी दोनों से मिलकर ही परिवार पूर्ण होता है। बेटी की चाह मुझसे अधिक दीपक को थी।"

"तेरा कहना सच है, किन्तु नियति पर किसी का वश नहीं...मेरी दो बेटियाँ हैं। दोनों ने मेरे मातृत्व को पूर्ण कर मुझे हर तरह से सुख और संतोष दिया है। आज अगर तेरे पास आपायी हूँ तो सिर्फ उनके कारण ही...किन्तु आज भी सासु माँ के ताने मेरे हृदय को मथ देते हैं, नहीं भूल पाती हूँ उनकी बात...जो औरत वंश आगे न बढ़ा पाये, वह निपूती ही कहलाएगी।" कहते हुए संजना की आँखें छलछला आयी थीं।

दीदी की बात सुनकर अंजना सोच रही थी कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन क्यों होती है? विशेषतया वह स्त्री जो अपने बेटे के लिए खुशी-खुशी बहु लाती है, पर वह उसमें अच्छाई देखने के बजाय बुराई ही क्यों ढूँढ़ने लगती है। उसी समय उसने निर्णय लिया था कि वह अपनी बहुओं को बेटियों जैसा ही प्यार देगी। आखिर प्यार देकर ही तो प्यार पाया जा सकता है।

समय पंख लगाकर उड़ता रहा...वह उन भाग्यशालियों में से थी जिसको बिना माँगे ही सब कुछ मिलता गया। रवि और अवि पढ़ाई में तो तेज थे ही, खेलकूद तथा अन्य गतिविधियों में भी अपनी छाप छोड़े बिना नहीं रहते थे। उनके हर्ष की सीमा न रही जब रवि प्रथम बार में ही मेडिकल की प्रवेश परीक्षा में सफल हो गया। उसके दो वर्ष बाद ही अवि का इंजीनियरिंग में चयन अनंत खुशियाँ दे गया था। तब उन्होंने एक सपना बुना था। पढ़ाई के लिए भले ही इस समय बच्चे उनसे दूर हो गये हैं, लेकिन पढ़ाई के बाद वे सब साथ-साथ रहेंगे। इस महानगर में उन्हें उनकी मनपसंद नौकरी मिल ही जाएगी।

अंजना जानती थी कि आज की युवा पीढ़ी किसी का अंकुश नहीं चाहती है। वह स्वतंत्र रहना तथा अपनी जिंदगी अपने

अनुसार जीना चाहती है। उसका मानना था यदि बच्चों को उनकी सोच के अनुसार जीने दिया जाये तो कोई कारण नहीं कि सब मिलकर न रह पाएं। इससे आर्थिक एवं भावनात्मक सुरक्षा के साथ प्रेम और विश्वास के बंधन भी मजबूत होंगे। बच्चों को क्रेच या आया के भरोसे छोड़ने के बजाय दादा-दादी के संरक्षण में रखकर वे अधिक निश्चित रहेंगे। बच्चों से उसे बेहद प्रेम था...उसका मानना था कि बच्चों की मासूम हँसी इंसान को अपना दर्द-ए-गम भुलाने में सहायक होती है।

इस योजना को क्रियान्वित करने के लिए दीपक और अंजना ने एक बार फिर अपने मकान में कुछ बदलाव करवाया जिससे कि साथ रहने पर भी वे अपनी स्वतंत्रता, गोपनीयता कायम रख सकें। रवि और अवि का भी उनको मौन समर्थन प्राप्त था। समय रहते रवि का विवाह भी हो गया। बहू दीपि डॉक्टर होने के साथ-साथ अत्यंत ही सुलझे विचारों की स्त्री थी। उसने घर-बाहर में अच्छा सामंजस्य बिठालिया था। वह उन्हें बहू से ज्यादा बेटी ही नजर आती थी।

रवि की तरह अवि के लिए भी उन्होंने काफी छान-बीन के बाद रीना को पसंद किया। दहेज की माँग न उन्होंने रवि के समय की थी और न ही अवि के समय। उनकी चाहत सिर्फ संस्कारवती, सुशीलकन्या की थी जो उनके घर-संसार में रम सके। रीना उनकी आशाओं के अनुरूप ही लगी थी, अतः धूमधाम से उन्होंने उनका विवाह कर दिया।

अंजना जानती थी स्त्रियों के मनमुटाव का कारण घर के काम होते हैं। उसने घर के कामों के लिए लगी नौकरानी के अतिरिक्त दीपि के आते ही खाना बनाने के लिए महाराजिन रख ली थी। तीज-त्योहारों पर कोई स्पेशल डिश बनानी होती तो वह बहुओं का इंतजार करने के बजाय स्वयं बना लेती थी। दीपि कभी-कभी उसकी सहायता करवाने किंचन में आ जाया करती थी किन्तु रीना किंचन में झाँकती भी नहीं थी। वह बेड टी से लेकर नाश्ता, खाना भी, अपने कमरे में ही करना चाहती थी।

रीना के शक्की और जिद्दी स्वभाव के कारण अवि के विवाह के साथ ही बिखराव की प्रक्रिया प्रारंभ हो गयी थी। रीना घर के सदस्यों के साथ बैठकर न तो स्वयं बात करना चाहती थी और न ही अवि को बैठने देना चाहती थी। अगर कभी अवि और दीपि बात करते दिख जाएं तब वह जल-भुनकर अपना आक्रोश अवि पर निकालने लगती थी। छोटी-छोटी बात पर रूठकर मायके जाना तो उसके स्वभाव में शामिल हो गया। अंजना के सारे प्रयासों के बावजूद वह अलग-थलग ही रहती। उसके व्यवहार से अंजना को ऐसा लगने लगा था कि किसी ने ठीक ही कहा है कि खुशियाँ ज्यादा दिन नहीं टिकती हैं। इंसान को स्वर्ग-नरक इसी जन्म में भोगना पड़ता है।

दीपक ने सोचा कि कहीं रीना के इस व्यवहार का कारण विवाह के बाद उसकी नौकरी छूटना तो नहीं है, सो उन्होंने उसे नौकरी करने के लिए प्रोत्साहित किया। अंततः उसे उसकी

योग्यतानुसार एक अच्छी कंपनी में नियुक्ति मिल गयी। अब उसका ज्यादातर समय बाहर गुजरने लगा। स्थिति संभलने लगी थी।

दीपक एक दिन बाहर लॉन में सुबह धूप का सेवन कर रहे थे कि अवि और रीना उनके पास आये। दीपक के उनकी ओर प्रश्नवाचक नजरों से देखने पर रीना ने कहा, "पापा, हम चाहते हैं कि इस मकान को बेचकर तीन बेडरूम वाले दो फ्लैट खरीद लें। इन्होंने एक प्रॉपर्टी डीलर से बात की है। उसके अनुसार यह मकान तीन करोड़ में बिक जाएगा। इतने में दो फ्लैट पॉश लोकेलिटी में मिल जाएंगे, अगर कुछ लगाना भी पड़ा तो बैंक से लोन ले लेंगे।"

"लेकिन बेटी, इस बंगले के रहते फ्लैट खरीदने की क्यों सोच रहे हो? हम कहाँ रहेंगे?" अचकचा कर दीपक ने पूछा।

"पापा, आजकल बंगले की देखभाल करना कठिन होता जा रहा है। चोरियाँ भी बहुत हो रही हैं। फ्लैट में इन सबका डर नहीं रहता, सिक्योरिटी होती है। समय के साथ बच्चों को भी अपना अलग कमरा चाहिए होगा। अभी भी कभी कोई गेस्ट आ जाता है तो समस्या हो जाती है। जिसके पास रहने का आपका मन हो, रह लिया करिएगा।" रीना ने स्वभाव के विपरीत नम्र स्वर में कहा।

"रवि से भी बात कर लो, फिर जैसा ठीक लगे, वैसा ही करो।" कहकर दीपक ने बात टालनी चाही।

"यह हमारा अपना मकान है, कितनी मुश्किल से हमने इसे बनवाया है। आप रीना का प्रस्ताव इतनी आसानी से कैसे मान गये?" उनके जाते ही दीपक से अंजना ने पूछा।

"अंजना, हम अपनी जिंदगी जी चुके हैं, अब बच्चों को अपनी जिंदगी जीने दो...।" कहकर दीपक निष्पृह भाव से अखबार पढ़ने लगे। पति की यही आदत अंजना को सदा बुरी लगती थी। दो टूक फैसले लेना तथा जब किसी बात पर ध्यान न देना हो तो अखबार पढ़ने बैठ जाना। दुखते मन को उसने यह सोचकर सांत्वना दी कि शायद यह रीना के दिमाग का फिरू है जो कुछ दिनों में शांत हो जाएगा या फिर शायद रवि और दीसि ही उसके इस प्रस्ताव को न मानें किन्तु आशा के विपरीत वे दोनों भी खुशी-खुशी इस प्रस्ताव को मान गये, मानो वे इस प्रस्ताव का इंतजार ही कर रहे थे।

अतीत के गलियारों में खोयी अंजना अचानक दीपक का कर्कश स्वर सुनकर चौंक पड़ी। रवि और अवि को किसी बात पर बहस करते देखकर वे कह रहे थे, "वाह बेटा, वाह... आज तुम इस बात पर बहस कर रहे हो कि इस टीवी में दोनों का पैसा लगा है, अतः इसको कौन रखे? लेकिन उन सामानों का क्या होगा जो मैंने और तुम्हारी माँ ने खरीदे थे? उन यादों का क्या होगा जो इस घर में



रही-बसी हैं। बेटा, जब रिश्तों में स्वार्थ आ जाता है तब रिश्ते टूटने लगते हैं... और मैं इन रिश्तों को टूटने नहीं देना चाहता क्योंकि तोड़ना बहुत आसान है पर जोड़ना बहुत ही कठिन है...। टूटे घर तो एक बार जुड़ भी सकते हैं लेकिन दिलों में आयी दरार को पाटना बहुत ही मुश्किल है।" कहते हुए

उनकी आवाज कंपकंपा उठी थी।

कुछ रुककर स्वयं को संयमित कर उन्होंने पुनः कहना प्रारंभ किया, "तुम अपने अलग-अलग घर खरीदना चाहते हो, अलग रहना चाहते हो तो शौक से रहो, हमें कोई आपत्ति नहीं है लेकिन कल शायद तुम दोनों हमसे पूछे बिना यह फैसला भी कर लो कि छह महीने हम रवि के पास रहेंगे तथा छह महीने अवि के पास या मैं रवि के पास रहूँ तथा तुम्हारी माँ अवि के पास रहे... और शायद हम दोनों में से किसी एक के न रहने पर खाना देने की जिम्मेदारी एक लेगा तथा बीमारी में दवा देने की दूसरा। अब तक तुम दोनों अपनी मर्जी करते रहे लेकिन अब मेरी बात भी सुन लो... इस घर से हमारी यादें जुड़ी हैं, स्वन्ज जुड़े हैं... मेरे जीते जी इस घर का बंटवारा नहीं होगा और न ही यह बिकेगा... जिसे यहाँ रहना हो वह रहे जिसे जाना हो वह जाये।" कहते हुए वह भावुक हो उठे थे, गला रुँध गया था। वे अचानक उठे और अपने कमरे की ओर चल दिये।

शांत स्वभाव वाले दीपक की मर्मभेदी बातें सुनकर अंजना निःशब्द रोने लगी और वह भी उनके पीछे चल दी। अंजना का मन चीख-चीखकर कह रहा था, "...दीदी, तुमने कहा था कि तेरी लाखों की लॉटरी निकल आयी है। क्या यही होता है लाखों की लॉटरी का सुख...?"

"माँ, प्लीज हमें क्षमा कर दीजिए। हम भटक गये थे, हम कहीं नहीं जाएंगे। हम दोनों आपके साथ इसी घर में रहेंगे। पापा से भी हम अभी जाकर क्षमा माँग लेते हैं।" पापा की प्रतिक्रिया देख रवि और दीसि ने उसके पास आकर क्षमायाचना के स्वर में कहा।

अंजना अभी अपना हाथ उनके सिर पर रख भी नहीं पायी थी कि रवि और दीसि को उसके सामने झुकते देखकर रीना क्रोध से काँपते हुए अंदर चली गयी। अवि ने भी उसका अनुसरण किया। कुछ देर के लिए तो तूफान थम गया था किंतु बारिश होने की संभावना अभी बाकी थी, बारिश हल्की होगी या अपनी तीव्रता से विनाश की ओर ले जाएगी इसका किसी को भी पता नहीं था, पर अंजना ने सोच लिया था कि वह हारेगी नहीं, न ही झुकेगी... हर तूफान का सामना पूरी दिलेरी से करेगी।

लखनऊ निवासी लेखिका पिछले चार दशकों से स्वतंत्र लेखन कर रही हैं। विभिन्न विधाओं में इनकी कई दर्जन से अधिक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।





# परिचर्चा

## ‘बच्चों के साथ कैसा हो हमारा व्यवहार !’

मई अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु –

### सकारात्मक हो व्यवहार

जो गुण और संस्कार हम बचपन में अर्जित करते हैं, वे ही जीवनभर चलते हैं। कबीर ने कहा था, 'अनुभौ सांचा' यानी अनुभव ही सत्य है। शिक्षा अनुभवों का विस्तार ही तो है, पर आज वही तथाकथित शिक्षा ऐसी अनंत महत्वाकांक्षाओं और दिशाहीन प्रतिस्पर्धाओं की शिकार हो गयी है जिसका कोई औचित्य नहीं है। एक समान्य बच्चा दिनभर 'ना' सुन-सुनकर इतना कुठित हो जाता है कि उसकी अपनी कोई इच्छा ही नहीं रह जाती। सच तो यह है कि हर बच्चा नकारात्मक व्यवहार का नहीं, आत्मिक और सच्चे सकारात्मक व्यवहार का ही हकदार है।

-भगवती प्रसाद गौतम, कोटा

### अनुकरणीय हो आचरण

संस्कारों का सृजन गर्भावस्था से ही शुरू हो जाता है। शास्त्रों में निर्देश मिलते हैं कि गर्भवती माता को संयमित, अनुशासित, अहिंसक और नैतिक जीवन जीना चाहिए, महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़नी चाहिए। स्वाध्याय करना चाहिए। दान, सहयोग, भलाई आदि परोपकार के कार्य करने चाहिए। ऐसी जीवनचर्या और प्रशस्त भावधारा का सुप्रभाव गर्भस्थ शिशु पर भी पड़ता है तथा वह शिशु आगे चलकर देश का श्रेष्ठ नागरिक बनता है। बालक अपने माता-पिता और परिवारजनों के वचन, व्यवहार और आचरण से हर क्षण कुछ न कुछ सीखता रहता है। इसलिए माता-पिता को चाहिए कि वे अपने आचरण और व्यवहार को अनुकरणीय बनाएँ।

- डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई

### रुचि के क्रियाकलाप भरेंगे आत्मविश्वास

हर बच्चे की अपनी रुचि और क्षमता अलग-अलग होती है। सुबह से शाम तक एक के बाद दूसरी क्लास का बोझ बच्चे के मन को बोझिल तथा उसके व्यक्तित्व को कुठित बनाकर अवसाद की तरफ धकेल देता है। सफलता के लिए सिर्फ किताबी ज्ञान ही समुचित नहीं है। अपनी रुचि के क्रियाकलाप बच्चों के अंदर आत्मविश्वास भरेंगे जो उनके भावी जीवन की मजबूत

आधारशिला रखेंगे। बच्चों पर भरोसा कर उन्हें अपने आप आगे बढ़ने दें। जरूरत से ज्यादा सुख-सुविधा उन्हें कमज़ोर बना रही है। उन्हें पिंजरे का रद्द तोता नहीं बनना है। वे ऐसे फुर्तीले बाज बनें कि सारा आसमान नाप लें।

-सरोज दुगड़ 'सविता', खारुपेटिया

### संवेदनाएँ समझकर करें मार्गदर्शन

न सख्त होन न रम हो,  
न कड़वा होन मीठा हो,  
व्यवहार में संतुलन हो सदा,  
कभी डांट कभी प्यार हो।

आप अपने बच्चों को जैसा बनाना चाहते हैं, पहले खुद वैसा बनें। बच्चों को कभी लालच का सहारा नहीं देना चाहिए। उन्हें नकारात्मक सोच से दूर रखते हुए उनमें स्वस्थ मानसिकता का विकास करना चाहिए। बच्चों के सामने बहुत-सी चुनौतियाँ होती हैं, उन चुनौतियों का वे सफलतापूर्वक सामना कर सकें, इसके लिए उनकी संवेदनाओं को समझकर उनका मार्गदर्शन करना चाहिए।

-डॉ. राजमती पोखरना सुराणा, भीलवाड़ा

### ...वैसे पाए प्रेम का, बचपन आशीर्वाद

जैसे नहीं पौथ को, देते पानी खाद।  
वैसे पाए प्रेम का, बचपन आशीर्वाद।।  
बच्चों को देते रहें, प्रोत्साहित कर प्यार।  
जिससे वे अवसाद के, ना हों कभी शिकार।।  
केवल सुविधा की नहीं, बच्चों को दरकार।।  
मिले उन्हें माँ-बाप की, प्यार भरी मनुहार।।  
कुछ बनने का डालकर, मन पर अधिक तनाव।।  
अभिभावक छीनें नहीं, बच्चों का हर चाव।।  
काटें ना परिवार से, बच्चों की जड़-मूल।।  
पत्तों के ही बीच में, अच्छे लगते फूल ॥

-सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा', कोटा

## अच्छा इंसान बनाएं

मौजूदा भागमध्ये भरी जिंदगी में हमारे बच्चे हमारी महत्वाकांक्षाओं के प्रतिबिंब बनते जा रहे हैं। उन्हें जो अपनापन, जो स्नेह मिलना चाहिए, वे उससे वंचित हैं। जो संस्कार परिवार के बड़े-बुजुर्ग स्वाभाविक रूप से खेल-खेल में ही दे देते थे, अब हमारे बच्चे उनसे वंचित हैं। परिणामस्वरूप एक संस्कारहीन पीढ़ी तैयार हो रही है जिसका एकमात्र लक्ष्य होता है मोटी रकम वाली नौकरी पाना। माता-पिता या समाज के प्रति उनकी कोई जिम्मेदारी है, यह उन्होंने सीखा ही नहीं है। ऐसे में बच्चों के साथ समय बिताकर, स्नेहिल वातावरण देकर उन्हें अच्छा इंसान बनाने की महती आवश्यकता है।

-नीलम राकेश, लखनऊ

## मित्र बनें, शासक नहीं

बच्चे जिज्ञासु और संवेदनशील होते हैं, इसलिए उनकी जिज्ञासाओं का समाधान अति आवश्यक है। उनके मन में अनेक सवाल होते हैं जिनके उत्तर न मिलने से वे कुंठित रहते हैं। ऐसे में जरूरी है कि अभिभावक उनके साथ समय बिताएं, उनसे बात करें, उन्हें व्यस्त रखें। बच्चों में विलक्षण प्रतिभा होती है, उसे पहचानें और पढ़ाई के साथ-साथ उनकी रुचि को सही दिशा दें ताकि वे कुशल नागरिक बनें। उनके मित्रों से अवश्य परिचित रहें और उनसे सम्पर्क बनाये रखें। बच्चों से उनकी दैनिक गतिविधियों पर चर्चा करें, उनके हमराज बनें। उनके मित्र बनें, शासक नहीं।

-मुशीला शर्मा, जयपुर

## अपने अनुरूप न ढालें

बच्चे फूलों के जैसे होते हैं। उन्हें पूरा पोषण दें ताकि वे खिल सकें। साथ ही उपवन की बाड़ की तरह उन्हें अनुशासन से भी बांधें। उन्हें शिक्षा एक अवसर के रूप में दें न कि प्रतिस्पर्धा की तरह, नहीं तो उन्हें एक बोझ की प्रतीति होगी। उन्हें प्रोत्साहन देना ज्यादा कारगर है। इससे बच्चे स्वतः बेहतर हो जाते हैं। सबसे जरूरी बात बच्चों को अपने अनुरूप न ढालें, उन्हें बस दिशा देते हुए स्वतंत्र बढ़ने दें। इससे वे नदी की तरह दूर तक जाएंगे।

-राजू मेहता, जोधपुर

## उपदेशात्मक शैली न अपनाएं

नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों और गुरुकुलों से धनी भारत में किताबी ज्ञान के साथ नैतिक, समाजिक मूल्यों की घुट्टी के द्वारा व्यक्तित्व निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। उज्ज्वल भविष्य के लिए विज्ञान का ज्ञान जितना जरूरी है उतना ही जरूरी है संस्कार, व्यवहार, संवेदनाओं, कर्तव्यों का सही ज्ञान। जरूरत है बच्चे में छिपे नैसर्गिक गुणों को खोजने की, जहाँ

वह अपनी रुचि के अनुसार बेहतर कर सकता है। उपदेशात्मक शैली छोड़िए, आपका प्रभावशाली और सामंजस्ययुक्त व्यक्तित्व बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में अहम भूमिका निभाएगा।

-छाया अग्रवाल, बरेली

## सुविधाएं दें, सुविधावादी न बनाएं

बच्चों को सिर्फ पढ़ाना ही हमारा मकसद नहीं होता, उन्हें अच्छे संस्कार, संवेदनशीलता, औरों की मदद करना आदि भी सिखाना होता है। बच्चों को सुविधाएं दें, पर सुविधावादी न बनाएं। धन और समय का सही सदुपयोग करना सिखाएं। बच्चों को अनुशासन सिखाना बहुत जरूरी है, पर दूसरों के सामने डांटना सही नहीं है। बच्चों के साथ माता-पिता का व्यवहार दोस्त जैसा होना चाहिए। स्कूल के समय से ही उन्हें परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रतिदायित्व का पाठपढ़ाना शुरू करें।

-कुसुम सुराणा, गाजियाबाद

## बात करें, अच्छा साहित्य दें

प्रतिदिन अपनी व्यस्त दिनचर्या में से कुछ समय निकाल कर बच्चे से बात करें। आज बच्चे उपदेश सुनना नहीं चाहते। यदि उपदेश देना ही है तो अपने आचरण और व्यवहार से दें। बच्चों के लिए पढ़ाई जरूरी है लेकिन उनके सकारात्मक, भावनात्मक व संवेगात्मक विकास के लिए उन्हें अच्छा साहित्य उपलब्ध कराना अत्यावश्यक है। यदि आप संयुक्त परिवार में नहीं रहते तो अच्छे साहित्य की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है।

-यशपाल शर्मा 'यशस्वी', चित्तौड़गढ़

## मित्रवत व्यवहार करें

आज के दौर में माता-पिता दोनों कामकाजी होते हैं। एकल परिवार का चलन अधिक होने के कारण घर में बड़े-बुजुर्गों की सर्वथा कमी होती है। वहीं इंटरनेट और मोबाइल ने बच्चों को अपनी गिरफ्त में जकड़ रखा है। ऐसे में माता-पिता को कोशिश करनी चाहिए कि किशोरावस्था की ओर अग्रसर बच्चे ज्यादा समय तक अकेले न रहें। उनके साथ मित्रवत व्यवहार कर उनके दिलों के अंदर झाँका जा सकता है और दूरी को पाटा जा सकता है।

-आर. शैलजा, जमशेदपुर

## खुद जैसा चाहते थे, वैसा करें व्यवहार

"और बेटा, पढ़ाई कैसी चल रही है?" "कितने नंबर आ जाएंगे?" "फस्ट आओंगे न?" "तुम्हारे कॉम्पीटिशन का क्या हुआ?" हम जब भी किसी बच्चे से मिलते हैं, ऐसे सवालों की बोछार कर देते हैं। नतीजा? बच्चे हमारे सामने आना ही नहीं चाहते। हम यह क्यों भूल जाते हैं कि हम भी कभी बच्चे थे। हमारे बड़ों ने हमें लताड़ा नहीं बल्कि समझाया, हमें अब्बल होने की



दौड़ में धकेला नहीं बल्कि हमारे साथ दौड़कर हमें अंतिम रेखा तक पहुँचने की हिमात दी। आज हमारी बारी है बच्चों के लिए वैसा बनने का।

-हंसा नाहटा, बीरभूम

### अनुभव सुनें, राय लें

आज से 30 वर्ष पूर्व तक माता-पिता और शिक्षकों के लिए बच्चों का दायरा पता लगाना आसान था, किन्तु अब हम इंटरनेट और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की दुनिया में कदम रख चुके हैं। आज बच्चों के कोमल मन पर किसका प्रभाव पड़ रहा है, यह पता करना मुश्किल है। ऐसे में आवश्यक है कि हम बच्चों के रोज के अनुभव को सुनें, उनकी चिंताओं को समझें तथा उचित समाधान भी सुझाएं। कुछ बड़े हो जाने पर उनकी राय अवश्य लें, खासकर उन मुद्दों पर जो उनके जीवन को सीधे प्रभावित करते हैं।

-श्रुति पाण्डेय, जयपुर

### कथनी और करनी में हो समानता

यदि हम स्वयं झूठ बोलेंगे, नशा-व्यसन, फैशन करेंगे और बच्चों को इनसे दूर रहने का उपदेश देंगे तो उन पर प्रभाव कैसे पड़ेगा? इसलिए अभिभावकों की कथनी और करनी में समानता आवश्यक है। परिवार में प्रेम-सौहार्द से रहें। बच्चों को सामाजिकता के साथ-साथ आध्यात्मिकता भी सिखाएं। उनकी इच्छा, कार्यशैली पर नजर रखें। बार-बार टोकें नहीं। यार से समझाने पर बच्चे संस्कारी बनेंगे।

-इंद्रचंद बैद 'कवि', नोखा

### आत्मविश्वास जगाएं

बच्चे की तुलना उसके दोस्त या दूसरे बच्चे से न करें। उन्हें बार-बार पढ़ाई या अन्य किसी कार्य के लिए न कहें। ऐसा करने से

### अगले अंक का विषय

## परिचर्चा

# क्या संयम में छुपा है हर समस्या का समाधान?

अणुव्रत का उद्घोष है - 'संयमः खलु जीवनम्' अर्थात् संयम ही जीवन है। अणुव्रत दर्शन में संयम को जीवन की समस्याओं के समाधान सूत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में असंयम को समस्याओं के स्रोत के रूप में भी देखा जा सकता है। इस सन्दर्भ में आपका क्या चिंतन है? अपने स्वयं के जीवन में आप संयम को कितना महत्व देते हैं और समस्या समाधान के रूप में इसका कैसे उपयोग करते हैं? अपने विचार को आप उद्हारण के साथ स्पष्ट कर सकें तो बेहतर होगा।

"क्या संयम में छुपा है हर समस्या का समाधान?" इस विषय पर सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। अपने विचार हमें 200 शब्दों में 15 जून तक 9116634512 पर व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें। चयनित विचार जुलाई अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

बच्चे ढीठ हो जाते हैं और कोई काम नहीं करते। चाहे लड़का हो या लड़की, उनमें इतना आत्मविश्वास व आत्मशक्ति जगाएं कि समय आने पर वे अपनी सुरक्षा खुद कर सकें। बच्चों को भूलकर भी किसी के सामने न डाँटें। अगर उनसे कोई गलती हो भी जाये तो उन्हें यार से समझाएं। बच्चों को हार व जीत दोनों का सामना करना सिखाएं।

-मंजू दुग्ध, अहमदाबाद

### सहयोगी बनें, मालिक नहीं

बच्चे किसी भी राष्ट्र की सच्ची संपत्ति होते हैं क्योंकि बड़े होकर उनके ही कंधों पर देश की जिम्मेदारी आनी होती है। मगर हम बच्चों की बात, जिज्ञासा और प्रश्न को हँसी में उड़ा देते हैं। उन्हें मातहत या अपनी प्रॉपर्टी मानकर व्यवहार करते हैं। बच्चों को कम आंकने की गलती न करें। उनके प्रश्नों को गंभीरता से हल करें। उनके सहयोगी बनें, मालिक नहीं। मित्रता का व्यवहार रखेंगे तो बच्चों का व्यक्तित्व समुचित रूप से विकसित होगा और वे सही अर्थों में अच्छे नागरिक बन सकेंगे।

-इंद्रजीत कौशिक, बीकानेर

### संस्कारों का उपहार दें

संस्कार, संस्कृति और शिक्षा को सैद्धांतिक के बजाय व्यावहारिक बनाया जाये ताकि बच्चे स्कूली परीक्षाओं के बाद जीवन की परीक्षाओं में भी प्रवीण कहलाएं। उन्हें बोध कराएं कि चरित्र से बढ़कर कोई मित्र नहीं है। यदि नयी पीढ़ी को हम संस्कारों का उपहार न दे पाएंगे तो बाद में उसके साथ हम भी पछताएंगे। बच्चों को संवाद के माध्यम से यह जरूर एहसास कराएं कि विचार ही आचार का आधार है। कृतित्व से ही व्यक्तित्व का निर्माण संभव है।

-राजा चौरसिया, कटनी





# पाठ्कों के लिए विशेष प्रतियोगिता



आपको  
करना है  
बस इतना

- ❖ 'अणुव्रत पत्रिका' के दिसम्बर 2022 अंक को ध्यानपूर्वक आद्योपांत पढ़ना
- ❖ दिसम्बर 2022 अंक पर आधारित 10 सरल प्रश्नों के उत्तर प्रेषित करना

श्री भैरोंसिंह शेखावत को अणुव्रत पुरस्कार कब और कहां दिया गया? **01**

वर्तमान में अणुविभाके प्रबंध न्यासी कौन हैं? **02**

आचार्य महाप्रज्ञ और डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम द्वारा संयुक्त रूप से लिखी गई पुस्तक का क्या नाम है? **03**

निष्काम योग का निर्दर्शन करने वाला पद्म- 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' -किस ग्रंथ से लिया गया है? **04**

वर्ष 2022 का अणुव्रत गौरव सम्मान किसे दिया गया? **05**

आचार्य तुलसी ने कार्यक्षेत्र में सफलता का पहला सूत्र किसे माना है? **06**

विंग्स ऑफ फायर किसकी जीवनी है? **07**

सदाचार की प्रेरक शक्ति क्या है? **08**

"पृथ्वी पर आने वाला हर नया बच्चा यह बतलाता है कि भगवान् अभी तक मनुष्य से निराश नहीं हुए हैं" -यह कथन किसका है? **09**

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन 1 मार्च, 1949 को किया, उस दिन कौन सा वार था? **10**

- ज्ञातव्य बिंदु •
- ❖ प्रतियोगिता के प्रश्न दिसम्बर 2022 के अंक पर आधारित।
- ❖ परिवार के एक सदस्य की प्रविष्टि ही मान्य होगी।
- ❖ प्रतिभागी उत्तर के साथ पता और मोबाइल नं. अवश्य उल्लेख करें।
- ❖ उत्तर संक्षेप में दें। पत्रिका में उल्लेखित शब्द ही मान्य होंगे।
- ❖ काट-छांट व शब्दों में त्रुटि होने पर अंक काट लिये जायेंगे।
- ❖ सर्वाधिक सही उत्तर लिखकर भेजने वाला पाठक विजेता होगा।
- ❖ एकाधिक विजेता होने की स्थिति में लॉटरी द्वारा निर्धारण होगा।
- ❖ विजेता का नाम मय फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।
- ❖ सही उत्तरदाताओं के नाम का पत्रिका में उल्लेख होगा।



मई 2023 अंक में प्रकाशित प्रतियोगिता के परिणाम

(नवम्बर 2022 अंक पर आधारित)

एकाधिक विजेता होने के कारण निर्णय लॉटरी द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है -

विजेता



:: प्रोत्साहन पुरस्कार ::

नेहा मेहता

जोधपुर

सिद्धार्थ नाहर

जोधपुर

श्रीमती सारिका कोठारी

अजमेर

अन्य सही उत्तरदाताओं के नाम

कोमल तातेड़, जोहर

नेहा बोरड, जोधपुर

मंजू लूनिया, फरीदाबाद

मीनाक्षी शर्मा, अजमेर

प्रणत नाहर, जोधपुर

जयश्री सिंहा, हनुमानगढ़

अणुव्रत Q10  
प्रतियोगिता

प्रश्नों के सही उत्तर

उत्तर 01	प्रेमेस्त घेन डी.पेज ने	पृष्ठ 40
उत्तर 02	श्री सीताशरण शर्मा ने	पृष्ठ 39
उत्तर 03	मशहूर ग्रीक दार्शनिक हेरोडोटस का	पृष्ठ 22
उत्तर 04	विश्व बाल दिवस	पृष्ठ 05
उत्तर 05	ओडिया भाषा के	पृष्ठ 17
उत्तर 06	कर्मजा शक्ति का विकास	पृष्ठ 11
उत्तर 07	पारस पथर	पृष्ठ 18
उत्तर 08	सुदर्शन	पृष्ठ 13
उत्तर 09	सी.एस.लेविस का	पृष्ठ 23
उत्तर 10	माली जेठराम ने	पृष्ठ 27



## गौरवशाली अतीत के झरोखे से...

**‘** अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष स्वर्णिम इतिहास के असंख्य पन्नों से परिपूर्ण हैं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक प्रसंग पर इन्हीं में से कुछ पन्ने हम सुधी पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, इस आशा और विश्वास के साथ कि ये संस्मरण हम सब को अणुव्रत-पथ पर कदम दर कदम आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करेंगे।

इन संस्मरणों की आधारभूमि है आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर आधारित एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित महाग्रंथ "मेरा जीवन : मेरा दर्शन"। **’**





अणुव्रत आंदोलन  
अणुव्रत अमृत महोत्सव



## अणुव्रत चेतना दिवस : अणुव्रत के नये आयाम

आचार्य तुलसी के सान्निध्य में आयोजित अखिल भारतीय अणुव्रत समिति का बयालीसवां वार्षिक अधिवेशन व्यवस्थित और नवीनता लिये हुए था। कई नये आयाम उद्घाटित हुए। अणुव्रत परिवार योजना बनी। उसका दायित्व साधीप्रमुखा कनकप्रभा जी को सौंपा गया। प्रथम चरण में हजार अणुव्रत परिवार बनाने की बात निर्णीत हुई। उसकी रूपरेखा प्रस्तुत करते ही तत्काल पचास नाम आ गये। कार्य का दायित्व भी बाँटा गया। अणुव्रत की दृष्टि से एक वर्ष का नया कार्यक्रम निर्णीत किया गया। उसके अनुसार प्रतिमास शुक्ल पक्ष की द्वितीया को यह कार्यक्रम आयोजित होगा। वह दिन 'अणुव्रत चेतना दिवस' के रूप में मनाया जाएगा, ऐसा सोचा गया है। अन्य अनेक नयी योजनाएं सामने आयी हैं। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष धर्मचन्द्र चौपड़ा का दिमाग उर्वर है। उसकी कार्यप्रणाली पसन्द की गयी। अणुव्रत एक मिशन के रूप में और अधिक प्रभावी बने, यह अपेक्षा है। इसकी पूर्ति तभी संभव है, जब कार्यकर्ता एकनिष्ठ होकर इस दिशा में प्रस्थान करें।

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति द्वारा निर्धारित 'अणुव्रत चेतना दिवस' का न्यूनतम वार्षिक कार्यक्रम या प्रारूप अग्रांकित है-

- प्रतिमास शुक्ल पक्ष की द्वितीया को अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन हो, जिसमें सामूहिक प्रार्थना, अणुव्रत गीतों का सामूहिक संगान, अणुव्रत आचार संहिता का वाचन तथा अणुव्रत के बारे में निर्धारित एक विषय पर वक्तव्य हो। प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के प्रयोग हों। इस कार्यक्रम में यथासंभव सभी साधु-साधिवायां, समण-समणियां सम्मिलित हों।
- उस दिन छोटी-छोटी टोलियां बनाकर आसपास के गाँवों में या कॉलोनियों में जाकर अणुव्रतों का प्रचार करें, प्रशिक्षण दें। महापुरुषों की वाक्य पढ़िकाओं का उपयोग हो।
- अणुव्रत आचार संहिता एवं एक सूत्री कार्यक्रम-'नशामुक्ति' का अधिक से अधिक लोगों को संकल्प कराया जाये।
- राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय समाचार पत्रों में अणुव्रत पर आधारित लेखों का प्रकाशन हो तथा दूरदर्शन, आकाशवाणी आदि माध्यमों से भी अणुव्रत की गतिविधियों का प्रसार हो।
- उस दिन दोपहर या सायंकाल वर्गीय गोष्ठियां भी रखी जाएं। उनमें अध्यापक, व्यापारी, अधिकारी, छात्र, मजदूर, किसान आदि सम्मिलित हों। बड़े क्षेत्रों में प्रतिमास अलग-अलग वर्गों की गोष्ठियां रखी जा सकती हैं।
- इन गोष्ठियों में जैन साधु, जैनेतर साधु, महन्त, विद्वान आदि लोगों का भी सहयोग लिया जाये।
- अणुव्रत संगठन का विस्तार हो तथा ऐसा प्रयास हो कि पूरे देश में एक हजार स्थानों पर यह दिवस मनाया जाये।
- शहरों, कस्बों के मुख्य चौराहों पर एवं विशेष स्थलों पर होर्डिंग्स लगें, जिन पर अणुव्रत आचार संहिता के वाक्य या घोष लिखे हों।
- उस दिन अणुव्रत पत्रिका तथा अणुव्रत साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने का विशेष प्रयास हो। यथासंभव विसर्जन भी किया जाये, जिसका उपयोग स्थानीय अणुव्रत समितियां अणुव्रत के कार्यों के लिए करें।

## अणुव्रत परिवार की प्राथमिक अर्हता

मनुष्य की जीवनशैली में बदलाव लाने तथा अणुव्रत को व्यापक एवं व्यवहार्य बनाने के लिए अणुव्रत परिवार की योजना बनायी गयी। योजना के आधार पर काम भी शुरू हो गया। साधीप्रमुखा कनकप्रभा जी ने अणुव्रत परिवार प्रमुखा का दायित्व निभाते हुए अणुव्रत परिवार की रूपरेखा प्रस्तुत की। अणुव्रत परिवार की सदस्यता स्वीकार करने वाले परिवार की प्राथमिक अर्हता इस प्रकार निर्धारित की गयी-

- परिवार का प्रमुख व्यक्ति सम्पूर्ण अणुव्रती हो।





आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "परिवारों की टूटनभरी स्थितियों को रोकने के लिए 'अणुव्रत परिवार' एक बहुत अच्छी एवं आवश्यक योजना है। व्यक्ति खुले दिमाग से सोचे, समझे और आचरण में उतारने के लिए प्रयत्नशील हो, तभी बदलाव संभव हो सकता है। हमें केवल नाम नहीं चाहिए। जिन व्यक्तियों को स्वस्थ एवं उन्नत जीवनशैली के साथ जीना हो, वे पहले बारीकी से अपना आत्मनिरीक्षण करें, परिवार का प्रतिलेखन करें। निधारित बिन्दुओं के अनुसार कहीं भी अंगुलि-निर्देश की स्थिति न हो, वे व्यक्ति स्वयं को अणुव्रत परिवार में शामिल कर सकते हैं।" आचार्य श्री ने अनेक चिन्तनशील प्रबुद्ध व्यक्तियों के बीच इस योजना को प्रस्तुत किया। वे व्यक्ति जैन भी थे, तेरापंथी भी थे और जैनेतर भी थे। उन्होंने एक स्वर में इसे स्वीकार किया तथा इसकी सराहना भी की।



- परिवार के सभी सदस्य व्यसनमुक्त हों।
- परिवार में पारिवारिक सौहार्द हो।
- परिवार का हर सदस्य खान-पान की शुद्धि रखे।
- धार्मिक सद्भावना का वातावरण हो।

आचार्य श्री तुलसी ने उक्त विषय को लक्ष्य बनाकर अपने प्रवचन में कहा- "अणुव्रत परिवार की व्यापक चर्चा हमने सुनी। परिवारों की टूटनभरी स्थितियों को रोकने तथा स्वरस्थ समाज-निर्माण के लिए यह एक बहुत अच्छी एवं आवश्यक योजना है। परिवर्तन कानून व डंडे के बल पर नहीं आ सकता। व्यक्ति खुले दिमाग से सोचे, समझे और आचरण में उतारने के लिए प्रयत्नशील हो, तभी बदलाव संभव हो सकता है। हमें केवल नाम नहीं चाहिए। जिन व्यक्तियों को स्वस्थ एवं उन्नत जीवनशैली के साथ जीना हो, वे पहले बारीकी से अपना आत्मनिरीक्षण करें, परिवार का प्रतिलेखन करें। निधारित बिन्दुओं के अनुसार कहीं भी अंगुलि-निर्देश की स्थिति न हो, वे व्यक्ति स्वयं को अणुव्रत परिवार में शामिल कर सकते हैं।" आचार्य श्री ने अनेक चिन्तनशील प्रबुद्ध व्यक्तियों के बीच इस योजना को प्रस्तुत किया। वे व्यक्ति जैन भी थे, तेरापंथी भी थे और जैनेतर भी थे। उन्होंने एक स्वर में इसे स्वीकार किया तथा इसकी सराहना भी की।

## अणुव्रत का नौकर बना लीजिए

19 मई 1994। अपराह्न चार बजे का समय। आचार्य श्री तुलसी के दर्शनार्थ मुख्य चुनाव आयुक्त श्री टी. एन. शेषन दिल्ली के अध्यात्म साधना केन्द्र पहुँचे। औपचारिक वार्तालाप के बाद आचार्य श्री ने कहा- "लगभग पचास वर्षों से हम अणुव्रत मिशन को लेकर देश के कोने-कोने में घूमे हैं। हमारा उद्देश्य है देश का नैतिक, चारित्रिक विकास करना। अणुव्रत असाम्प्रदायिक धर्म है। इसमें उपासना गौण और आचरण प्रमुख है। वर्तमान की विकृत होती जीवनशैली को बदलने के लिए आप और हम सब मिलकर एक-दूसरे के साथ जुड़कर काम करें, यह बहुत आवश्यक है।"

आयुक्त महोदय ने आचार्य श्री की बात ध्यान से सुनी। आचार्य श्री के मौन होने पर वे बोले- "मैं अणुव्रत के विषय में काफी कुछ सुनता रहा हूँ, किन्तु अभी तक उससे पूरा परिचय नहीं हूँ। फिर भी मैंने अपनी जगह पर वही काम किया है, जो आप करना चाहते हैं। मैं हार सकता हूँ, पर भाग नहीं सकता। मुझे तो आप अणुव्रत का नौकर बना लीजिए। जब तक कुर्सी पर हूँ, नैतिकता के साथ काम करता रहूँगा।" भावी पीढ़ी के जीवन निर्माण की चिन्ता व्यक्त करते हुए श्री शेषन ने कहा- "पिछले दिनों मैं तीन लाख छात्रों से मिला। उनके सामने विचार रखे। छात्रों का कथन है कि वे अपने आपको चरित्रसम्पन्न बनाना चाहते हैं। किन्तु करें क्या? न तो उनको विद्यालयों में चरित्र-निर्माण का वातावरण मिलता है। और न अभिभावकों द्वारा ऐसी सीख दी जाती है। छात्रों के सामने मैं निरुत्तर हो गया। मैंने अनेक लोगों के समक्ष यह बात प्रस्तुत की, पर कहीं सन्तोष नहीं मिला। मेरा अभिमत है कि बच्चों का चरित्र सुधर गया तो चुनाव स्वतः सही हो जाएगे।"

आयुक्त महोदय की भावना को समझकर आचार्य श्री ने कहा- "मैं चाहता हूँ कि शेषन साहब अणुव्रत कार्य के नौकर होकर नहीं, सहभागी बनकर काम करें। कुर्सी पर रहें, तब तक ही नहीं, उसके बाद भी काम करते रहें। आपकी कार्यशैली से नैतिकता को बल मिला है। स्वतंत्र भारत के प्रथम चुनाव आयुक्त श्री सुकुमार सेन तथा तत्कालीन प्रमुख राजनेताओं के सामने हमने सर्वप्रथम चुनाव आचार संहिता रखी। उसे सभी ने मान्य किया था। उस समय से लेकर आज तक हम निरन्तर कार्य कर रहे हैं।"

आचार्य महाप्रज्ञ ने पूरक विचार प्रस्तुत करते हुए कहा- "भावी पीढ़ी के बारे में आपकी चिन्ता निष्कारण नहीं है। वर्तमान शिक्षा पद्धति ने बौद्धिक विकास के पर्याप्त



अवसर दिये हैं। उससे आजीविका चलायी जा सकती है, किन्तु आध्यात्मिक, भावनात्मक और मानसिक विकास के लिए उसमें अवकाश नहीं है। फलतः जीवन निर्माण नहीं हो रहा है। हमने जीवन विज्ञान के रूप में शिक्षा का एक नया प्रारूप तैयार किया है, जिससे मानसिक एवं भावनात्मक विकास पर ध्यान दिया गया है। इस प्रायोगिक शिक्षा पद्धति को अनेक स्कूलों में चालू किया गया, जिसके परिणाम अच्छे आये हैं। आप भी इसको अच्छी तरह से देखें और समझें।" श्री शेषन इस मुलाकात और चिन्तन से बहुत प्रभावित थे। उनका जुड़ाव निरंतर अणुव्रत आंदोलन से बना रहा। सन् 2012 में उन्हें अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया।

## संसद की पवित्रता सुरक्षित रहे

22 मई, 1994 रविवार। प्रवचन के समय एक विशेष संगोष्ठी आयोजित की गयी। संगोष्ठी का विषय था-लोकतंत्र और अणुव्रत। प्रमुख वक्ता के रूप में मुख्य चुनाव आयुक्त श्री टी. एन. शेषन आमंत्रित थे। वे समय से पहले ही अध्यात्म साधना केन्द्र पहुँच गये। संगोष्ठी से पहले आचार्य श्री तुलसी के साथ लगभग आधा घंटा बातचीत हुई। चुनाव में आयी विकृतियों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा- "उत्तर प्रदेश विधानसभा में 425 सदस्य हैं। उनमें 180 सदस्यों पर मुकदमे चल रहे हैं। इकीस सदस्यों पर तो हत्या के मुकदमे चल रहे हैं। यह किसी एक पार्टी की बात नहीं है। सभी दलों में अपराधी तत्त्व प्रविष्ट हो गये हैं। अनेक प्रदेशों में तो कानून नाम की कोई चीज ही नहीं है। सांसदों के चुनाव में भी भारी गड्बड़ियां होती हैं। सामान्यतः एक सांसद को चुनाव में डेढ़ लाख रुपये तक खर्च करने का अधिकार है। मैं ऐसे सांसदों को जानता हूँ, जिन्होंने अपने चुनाव में करोड़ों रुपये पानी की तरह बहाये हैं। एक सांसद ने तो अपने क्षेत्र की महिलाओं को सोने की नथ तक बाँटी है। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि चुनावों पर कितना खर्च किया जाता है। पहले चुनावों में अपराधी तत्त्वों का सहारा मिलता था, मदद मिलती थी। किन्तु अब तो वे स्वयं इस क्षेत्र में प्रविष्ट हो गये हैं। जब तक संसद के मन्दिर में ऐसे अपराधी तत्त्व प्रवेश करेंगे, उसकी पवित्रता कैसे सुरक्षित रहेगी?"

आयुक्त महोदय के मुख से निराशा एवं असन्तोष की अभिव्यक्ति सुनकर आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "शेषन साहब! क्या आपको लगता है कि देश में कुछ नहीं होगा?" आचार्य श्री के इस प्रश्न ने एकाएक श्री शेषन का स्वर बदल दिया। वे बोले- "नहीं, नहीं आचार्यजी! ऐसी बात नहीं है। अब भी बहुत कुछ किया जा सकता है। कमजोर कानून को सुधारा जा सकता है।" चालू प्रसंग को मोड़ देते हुए आचार्य श्री ने कहा- "वर्तमान में हर क्षेत्र में जो विसंगतियां दृष्टिगत हो रही हैं, वे भले ही राजनीति में हों, धर्मनीति में हों या समाज-नीति में हों, उन्हें दूर करने का निरन्तर प्रयास होना चाहिए। प्रश्न है कि इस कार्य का प्रारम्भ कहां से किया जाये?" श्री शेषन ने कहा कि यह कार्य छात्रों से शुरू होना चाहिए। उनके कथन से सहमत होते हुए आचार्य श्री ने कहा- "आपका कथन ठीक है। इस कार्य को सुव्यवस्थित रूपरेखा के साथ प्रारम्भ करना है। हम आशा करते हैं कि इस कार्य में आपका उचित सहयोग मिलता रहेगा।"

## आज की सबसे बड़ी कठिनाई

व्यक्तिगत वार्तालाप के बाद सभी प्रवचन पंडाल में गये। वहाँ लोकतंत्र एवं अणुव्रत-विषय पर कई वक्तव्य हुए। अच्छे विचार सामने आये। आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में कहा- "आज की सबसे बड़ी कठिनाई है-सही बात को प्रस्तुति देने के साहस का अभाव। श्री शेषन को साधुवाद देना चाहिए कि वे सही बात को सही ढंग से कह रहे हैं। लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए अणुव्रत की आचार संहिता, विशेष रूप से चुनाव की आचार संहिता पर ध्यान देने की अपेक्षा है। आप क्या बनना चाहते हैं, इसका निर्धारण आप स्वयं करें। झरने को अपना आदर्श मानें। झरना सदा पवित्र, गतिशील और उपयोगी बना रहता है। आप सबसे पहले अपने चरित्र की पवित्रता पर ध्यान दें। गलत व्यक्ति को कभी वोट न दें, अन्यथा सांसद अपराधी होंगे और आप सारे भ्रष्टाचार के जनक होंगे। जनता जागृत

उन दिनों भारतीय संसद में जे. पी. सी. की रिपोर्ट के कारण अभूतपूर्व गतिरोध उत्पन्न हो गया। आचार्य तुलसी ने अपने संदेश में लिखा - 'पक्ष और प्रतिपक्ष के सांसद इस मुद्दे को प्रतिष्ठा का प्रतीक न बनाएं, बल्कि राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि मानकर इसका समाधान खोजें।'

होगी तो जननेता भी अच्छे होंगे। हम सभी मिलकर जन-जागरण का अभियान चलाएं। भारत अपने पुरातन गौरव को पुनः प्राप्त करे, इसके लिए हम सबको प्रयास करना होगा, सामुदायिक चेतना को जगाना होगा।"

## चुनाव पद्धति का परिष्कार जरूरी

23 मई को लोकसभा के अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल अध्यात्म साधना केन्द्र आये। आचार्य श्री तुलसी की उनके साथ विभिन्न विषयों पर लम्बी चर्चा हुई। चर्चा मुख्यतः तीन बिन्दुओं पर केन्द्रित थी। पहला बिन्दु था चुनाव। श्री पाटिल ने कहा- "चुनाव पद्धति में परिष्कार की अपेक्षा सभी महसूस कर रहे हैं। 13, 14 एवं 15 मई को लोकसभा का विशेष अधिवेशन होने जा रहा है। उसमें इसी सन्दर्भ में विशेष चर्चा होनी है। उसमें तीन बातें प्रमुख हैं-

- चुनाव में पैसे का प्रभाव कम हो ?
- चुनाव हिंसा से मुक्त हो।
- परस्पर गलतफहमियों को बढ़ने का मौका न मिले।

इस दृष्टि से काफी चिन्तन-मंथन के बाद संभवतः कुछ विशेष परम्पराएं लागू की जा सकें। प्रस्तुत सन्दर्भ में आपका दिशादर्शन अपेक्षित है।" पाटिल साहब के विचार सुनकर आचार्य श्री तुलसी ने उन्हें मुख्य चुनाव आयुक्त श्री टी. एन. शेषन के साथ हुई दो मुलाकातों की जानकारी दी। श्री पाटिल बोले- "श्री शेषन एक अच्छे आदमी हैं। वे जो कर रहे हैं, वह सही है।"

## सांसदों और नेताओं के लिए सन्देश

उन दिनों भारतीय संसद में जे. पी. सी. की रिपोर्ट के कारण अभूतपूर्व गतिरोध उत्पन्न हो गया। देश के कई प्रबुद्ध व्यक्ति आचार्य श्री तुलसी के पास आये और बोले- "ऐसे समय में अपने आध्यात्मिक ओजस का उपयोग करें।" आचार्य श्री ने महाप्रज्ञाजी से विचार-विमर्श किया और संयुक्त रूप में एक सन्देश तैयार किया। सन्देश की भाषा इस प्रकार थी -

"संसद का गतिरोध एक सप्ताह पार कर चुका है। दोनों पक्ष- सरकार और प्रतिपक्ष अपने-अपने विचारों को यथार्थ प्रमाणित करने में लगे हुए हैं। इससे राष्ट्रीय सम्पदा की हानि ही नहीं हो रही है, अपितु जनता में उपहास भी हो रहा है। हम लोग दिली में प्रवास कर रहे हैं। सारी स्थिति का निकटता से अध्ययन कर रहे हैं। मन में विचार आता है कि प्रत्येक सांसद और संसदीय दल के नेताओं से साक्षात् मिलकर इस समस्या के समाधान में सहभागी बनें। पक्ष और प्रतिपक्ष के सांसद हमारे निकट सम्पर्क में हैं और आत्मीय भाव रखने वाले हैं। इसलिए अपने आत्मीयजनों से साझगह अनुरोध करना चाहते हैं कि वे इस मुद्दे को प्रतिष्ठा का प्रतीक न बनाएं, बल्कि राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि मानकर इसका समाधान खोजें। इस कार्य में महावीर की अनेकान्त दृष्टि और सापेक्ष चिन्तन बहुत सहयोगी बन सकता है। प्रत्येक कार्य में पुनर्विचार के लिए अवकाश होता है और होना भी चाहिए। दरवाजा बन्द होना अच्छा नहीं होता। साक्षात् मिलन हो तो समाधान की विशेष चर्चा की जा सकती है। हर हालत में इस अवरोध को समाप्त करना ही चाहिए।" सांसदों और नेताओं के पास सन्देश पहुँचा। सबने सन्देश पढ़ा। उन्हें प्रसन्नता हुई और तटस्थ दृष्टि से सोचने की प्रेरणा मिली। कुछ सांसद और मंत्री अध्यात्म साधना केन्द्र पहुँचे। उनके साथ प्रत्यक्षतः बातचीत हुई। पूर्व प्रधानमंत्री श्री वी. पी. सिंह, वित्तमंत्री श्री मनमोहन सिंह, भाजपा के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी, सोमपाल, श्री रामचन्द्र विकल आदि के साथ हुई मुक्त चर्चा के आधार पर ऐसा प्रतीत हुआ कि गतिरोध की स्थिति से सन्तुष्ट कोई भी नहीं है। सब लोग समाधान की प्रतीक्षा में हैं। समाधान की प्रक्रिया चल रही है।



## गतिरोध समाप्ति की घोषणा

17 अगस्त को लोकसभा के केन्द्रीय सभागार में अटल बिहारी वाजपेयी का सम्मान समारोह था। यह समारोह श्री वाजपेयी को मिले सर्वश्रेष्ठ सांसद 1994 के सम्मान में आयोजित था। उसमें उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, केन्द्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य तथा पक्ष-विपक्ष के अनेक सांसद उपस्थित थे। कार्यक्रम में लम्बे समय से चले आ रहे गतिरोध को दूर करने का निर्णय किया गया। सभी दलों के सांसदों, मंत्रियों, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष आदि ने आचार्य श्री तुलसी द्वारा किये गये सामयिक प्रयत्न की सराहना की। उनका प्रयत्न सफल माना गया।

गतिरोध समाप्त होने की घोषणा से पूर्व आचार्य श्री के साथ व्यक्तिगत बातचीत के संदर्भ में श्री आडवाणी ने कहा- "आचार्य तुलसी की जो भावना थी, मैंने उसका पालन कर लिया है। मैं जब उनके पास गया, तब तक मेरी मानसिकता नहीं थी। उनके सामने बैठने के बाद न मालूम क्या हुआ, एकाएक मेरा मन बदल गया। मैंने आकर जसवन्त सिंह से कहा कि रास्ता निकाल लेना चाहिए।"

लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल ने सन्देश पढ़ने के बाद आचार्य श्री के परोक्ष में कहा- "आचार्य तुलसी ने जो मार्ग दिखाया है, उसी से रास्ता निकलेगा और यही सर्वोत्तम तरीका है। आचार्य श्री का यह सामयिक और सूझबूझपूर्ण योगदान है।"

## प्रधानमंत्री नरसिंहा राव अध्यात्म साधना केन्द्र में

सायंकाल आठ बजकर पच्चीस मिनट पर प्रधानमंत्री श्री नरसिंहा राव अध्यात्म साधना केन्द्र पहुँचे। आचार्य श्री तुलसी ने प्रधानमंत्री से कहा- "संसद में आये गतिरोध को आज आपने समाप्त कर दिया, यह अच्छा किया। अवरोध आये जब एक सप्ताह हो गया तब हमने लोकसभा के सदस्यों के नाम एक सन्देश दिया।" प्रधानमंत्री बीच में ही बोल उठे- "उस सन्देश का अच्छा प्रभाव रहा।" अपनी अधूरी बात को पूर्णता तक पहुँचाते हुए आचार्य श्री ने कहा- "आपने समय पर गतिरोध समाप्त करने का निर्णय ले लिया, इसके लिए साधुवाद। संसद में ऐसा होने से बाहर उसकी प्रतिक्रिया ठीक नहीं होती। ऐसी स्थिति में हमारा भी दायित्व है कि हम भी सोचें।" प्रधानमंत्री बोले- "हां, ऐसा होना ही चाहिए। इससे हमें भी एक दिशा मिलती है।"

लगभग पन्द्रह मिनट तक साधना केन्द्र के हॉल में सार्वजनिक रूप में बात करने के बाद एकान्त में बातचीत करने का प्रसंग आया तो प्रधानमंत्री ने पूछा- "अब हम कहां बैठेंगे?" आचार्य श्री ने कहा- "उसी ऐतिहासिक कमरे में, जहां हमने कुछ वर्ष पहले रात्रि में बात की थी। आपको याद होगा, वह एक अंधेरी रात थी। बिजलियां कौंध रही थीं। बादल गरज रहे थे। अन्धड़ और तूफान के साथ वर्षा हो रही थी। रात्रि के लगभग दस बज रहे थे। हम सोने की तैयारी कर रहे थे। अचानक सूचना मिली कि मानव संसाधन मंत्री श्री नरसिंहाराव आ रहे हैं।" आचार्य श्री के मुँह से अनायास ही निकल पड़ा- "ऐसे भयंकर मौसम में आने का साहस तो कोई नरसिंह ही कर सकता है। उस समय बिजली भी नहीं थी। घोर अंधेरे में बैठकर हमने बात की थी।"

## ऐतिहासिक कक्ष में वार्तालाप

वार्तालाप का दूसरा दौर भीतरी कक्ष में चला। वहां आचार्य श्री तुलसी, महाप्रज्ञजी और प्रधानमंत्रीजी तो थे ही, महाश्रमण मुनि मुदित और मुनि महेन्द्रकुमार जी आदि भी थे। आचार्य श्री ने दो बिन्दुओं की ओर प्रधानमंत्री का ध्यान आकृष्ट किया- लोकतंत्र की शुद्धि और शिक्षा नीति।

आचार्य श्री ने कहा- "जब तक चुनाव में धांधली चलती रहेगी, लोकतंत्र शुद्धि कैसे रहेगा?" इस पर प्रधानमंत्री बोले- "आप ठीक कह रहे हैं। लोकतंत्र की शुद्धि के



अधिवेशन के समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "संयम ही जीवन है-अणुव्रत का यह घोष केवल उच्चारण के लिए नहीं है, मन में और शरीर के कण-कण में आत्मसात करने के लिए, जीने के लिए है। अणुव्रत निर्विशेषण धर्म है। इसमें अच्छाई का समाकलन है।"



लिए चुनाव प्रक्रिया का ठीक होना बहुत जरूरी है। चुनाव ठीक न होने से संसद में ऐसे-ऐसे व्यक्ति आ जाते हैं कि...।"

शिक्षा नीति के बारे में अपना मन्तव्य प्रस्तुत करते हुए आचार्य श्री ने कहा- "मैं यह नहीं कहता कि हमारी शिक्षा पद्धति ठीक नहीं है। यदि वह ठीक नहीं होती तो आप जैसे व्यक्तित्व कैसे निकलते। मुझे लगता है कि वह अपर्याप्त है। उससे बौद्धिक एवं शारीरिक विकास यथेष्ट रूप में हो रहा है, पर भावात्मक विकास नहीं होता। हम चाहते हैं कि शिक्षा के साथ जीवन विज्ञान का उपक्रम जोड़ दिया जाये तो भावनात्मक विकास हो सकता है। अनेक स्कूलों में इसके प्रयोग चल रहे हैं और परिणाम भी अच्छे आ रहे हैं। हमने इस विषय में मानव संसाधन मंत्री अर्जुन सिंहजी एवं शिक्षा सचिव श्री गिरि से बातचीत की है।" प्रधानमंत्री बोले- "वे भी अच्छे व्यक्ति हैं। मैं उनसे बात करूँगा। अच्छा हो, पब्लिक स्कूलों और नवोदय विद्यालयों में प्रयोग चालू किये जाएं।"

शिक्षा में जीवन विज्ञान की चर्चा के साथ सरकारी अधिकारियों को प्रशिक्षण देने का प्रसंग चला तो आचार्य श्री ने कहा- "आज हिंसा का प्रशिक्षण व्यवस्थित रूप से चल रहा है। सेना, पुलिस आदि की दृष्टि से देश में उसकी उपयोगिता हो सकती है, पर अहिंसा के प्रशिक्षण की कोई योजना नहीं है।"

इस सन्दर्भ में प्रधानमंत्री ने जिज्ञासा की- "आचार्यजी! अहिंसा का प्रशिक्षण जरूरी तो बहुत है, पर इसकी प्रक्रिया क्या होगी?" इस जिज्ञासा के समाधान में अहिंसा-प्रशिक्षण की पूरी योजना प्रस्तुत की गयी। अब तक हुए अन्तरराष्ट्रीय अहिंसा सम्मेलनों की जानकारी के साथ निकट भविष्य में होने वाली कॉन्फ्रेंस के बारे में भी उन्हें बताया गया।

## श्री शिवराज पाटिल नये अध्यक्ष

29 अगस्त, सोमवार। अणुव्रत अधिवेशन के अवसर पर जय तुलसी फाउण्डेशन के अध्यक्ष गुलाबचन्द चिंडालिया ने सन् 1993 का अणुव्रत पुरस्कार अमेरिका के डॉ. ग्लेन डी. पेज को दिये जाने की घोषणा की। अमेरिका की हवाई यूनिवर्सिटी में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर डॉ. पेज विश्व राजनीति में अहिंसात्मक राजनीति का विकल्प खोजने में प्रयत्नशील थे। अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने वाले वे तेरहवें व्यक्ति थे।

अधिवेशन के खुले सत्र में लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष चुने गये। निर्वत्मान अध्यक्ष धर्मचन्द चौपड़ा ने श्री पाटिल का नाम प्रस्तावित किया और सर्वसम्मति से उनका नाम स्वीकृत हो गया। नये अध्यक्ष श्री पाटिल की अनुमति से अ. भा. अणुव्रत समिति की कार्यकारिणी गठित हो गयी। धनराज बैद (फरीदाबाद) कार्यकारी अध्यक्ष, महेन्द्र कर्णाविट (राजसमंद) महामंत्री और हनुमान चिंडालिया को संयुक्त मंत्री का दायित्व सौंपा गया। निर्वत्मान अध्यक्ष धर्मचन्द चौपड़ा ने खड़े-खड़े श्री पाटिल के बैज लगाकर अध्यक्षीय दायित्व का हस्तान्तरण किया। पाटिल ने अच्छा वक्तव्य दिया।

अधिवेशन के समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "संयम ही जीवन है-अणुव्रत का यह घोष केवल उच्चारण के लिए नहीं है, मन में और शरीर के कण-कण में आत्मसात करने के लिए, जीने के लिए है। अणुव्रत निर्विशेषण धर्म है। इसमें अच्छाई का समाकलन है तथा जातिवाद, सम्प्रदायवाद आदि को कहीं भी स्थान नहीं दिया गया है। इंसानियत की सुरक्षा करो, अपनी चिन्ता करो, अपना सुधार करो, यही इसका मुख्य ध्येय है।"





## अणुव्रत अनुशास्ता के 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव वर्ष का शुभारम्भ निर्मल रहे संयम की साधना : आचार्य श्री महाश्रमण

वेसु, सूरत। अणुव्रत अनुशास्ता अणुव्रत यात्रा प्रणेता आचार्य श्री महाश्रमणजी के 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव वर्ष का शुभारम्भ समाप्तरोह भव्य रूप में समायोजित हुआ। वैशाख शुक्ल चतुर्दशी पर 4 मई को महावीर समवसरण में आयोजित कार्यक्रम में आचार्य श्री महाश्रमण ने उपस्थित जनमेदिनी को पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए कहा कि दीक्षा दिवस का होना तो सामान्य बात है। सभी चारित्रात्माओं का अपना-अपना दीक्षा दिवस होता है। आज संयम पर्याय के 49 वर्ष पूर्ण हुए हैं। दीक्षा में संसारपक्षीय परिजनों का भी सहयोग होता है। मेरी संसारपक्षीय माँ मुझे संतों के पास ले जाती थीं और इसका प्रभाव हुआ कि मेरे भीतर भी वैराग्य भाव जागृत हुआ।

### अणुव्रत पत्रिका के ई-संस्करण का लोकार्पण



गुरुदेव तुलसी ने दीक्षा का आदेश दिया और मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनू) द्वारा मेरी और मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी की दीक्षा हुई। आज पचासवें वर्ष में प्रवेश हुआ है। जीवन में कितनों से प्रेरणा और प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। मूल बात है हमारे तेरह नियम सुरक्षित और संरक्षित रहें, इसका प्रयास करना चाहिए। संयम की साधना निर्मल रहे। संयम रत्न बना रहे। आज साधीप्रमुख विश्रुतविभाजी का मनोनयन दिवस भी है। वे भी धर्मसंघ की खूब अच्छी सेवा करती रहें। युवकों में त्याग-संयम की चेतना का विकास होता रहे। युवा धार्मिक-आध्यात्मिक उन्नति करते रहें। इस अवसर पर प्राप्त प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बधाई संदेश का वाचन मुख्य मुनिश्री महावीरकुमार ने किया।

10 मई 2023 को अणुव्रत विश्व भारती की ओर से अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के समक्ष अणुव्रत पत्रिका का ई-संस्करण लोकार्पित किया गया। इस अवसर पर अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा, पत्रिका के सम्पादक संचय जैन तथा अणुविभा के अन्य प्रतिनिधि उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए तैयार किये गये ई-संस्करण को मोबाइल फोन पर भी सहजता के साथ देखा व पढ़ा जा सकता है। मोबाइल स्क्रीन के अनुरूप ही पृष्ठ सज्जा को संयोजित किया गया है। साथ ही, ई-संस्करण में प्रस्तुत आलेख, समाचार, गीत आदि से संबंधित अनेक ऑडियो व वीडियो आदि वहाँ दिये गये लिंक को स्पर्श करने के साथ ही देखे व सुने जा सकते हैं। हालाँकि मुद्रित संस्करण की तुलना में ई-संस्करण में लगभग 20 प्रतिशत सामग्री ही शामिल की जाती है, जो व्यक्ति 'अणुव्रत' पत्रिका की मुद्रित प्रति मँगाना चाहे, उसके लिए ऑनलाइन लिंक के रूप में आसान सुविधा भी इसमें उपलब्ध करायी गयी है। अणुव्रत पत्रिका का ई-संस्करण हजारों व्यक्तियों तक निःशुल्क पहुँचाया जाएगा ताकि अधिक से अधिक लोग अणुव्रत दर्शन को जान-समझ सकें और अणुव्रत के विभिन्न प्रकल्पों से स्वयं को जोड़ सकें।



अणुव्रत अमृत महोत्सव

अणुव्रत यात्रा



## अणुव्रत यात्रा से जन-जन तक पहुँच रहा सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन का 75वां वर्ष अणुव्रत अमृत महोत्सव के रूप में व्यापक स्तर पर मनाया जा रहा है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष की अपनी पदयात्रा को 'अणुव्रत यात्रा' के रूप में घोषित करने के साथ ही सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को इसके मुख्य उद्देश्य के रूप में निर्धारित किया है।

अणुव्रत अनुशास्ता के नेतृत्व में अणुव्रत यात्रा जन-जन को अणुव्रत के दर्शन से परिचित कराने के साथ ही सामाजिक समरसता और व्यक्तिगत विकास की दिशा में एक पथदर्शक की भूमिका निभा रही है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी तथा अणुव्रत समितियों से जुड़े कार्यकर्ता अणुव्रत यात्रा से जुड़कर स्वयं को कृतार्थ मान रहे हैं।

अणुव्रत यात्रा के सूरत में लगभग दो सप्ताह के पड़ाव के बाद अणुव्रत अनुशास्ता के चरण मुंबई की बढ़ चले। तपती गर्मी के बीच डामर की काली सड़कों पर श्वेत वस्त्रधारी साधुओं का पैदल काफिला जब गुजरता है तो हर व्यक्ति की नजरें उधर ही मुड़ जाती हैं। यह आचार्य प्रवर के तपोमय आभामंडल का प्रभाव है कि जन-जन के हाथ श्रद्धा से जुड़ जाते हैं और सकारात्मक संदर्भों से वातावरण पवित्र बन जाता है। आचार्य प्रवर की वाणी से जब सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्प गुंजायमान

होते हैं तो व्यक्ति की अन्तरात्मा झंकृत हो उठती है और वह अपने जीवन को नया मोड़ देने को उद्यत हो उठता है भले ही वह किसी भी जाति, धर्म या पंथ में विश्वास रखता हो।

अणुव्रत यात्रा के साथ चल रही 'अणुव्रत वाहिनी' में अणुव्रत कार्यकर्ताओं का दल जन-जन को अणुव्रत यात्रा के तीन मुख्य उद्देश्यों से परिचित करता हुआ चलता है। वे विभिन्न डॉक्यूमेंट्री फिल्मों के माध्यम से जनता में जागरूकता फैलाने का प्रयास करते हैं कि कैसे छोटे-छोटे संकल्पों से हम जीवन को बेहतर बना सकते हैं। दल में शामिल प्रशिक्षित कार्यकर्ता जीवन विज्ञान व योग के प्रयोग सिखाते हैं। विशेषतः स्कूलों, छात्रावासों में जा कर नयी पीढ़ी के सम्यक् दिशादर्शन का विशेष प्रयास किया जाता है।

सूरत से 5 मई को पुनः प्रारम्भ हुई अणुव्रत यात्रा 20 मई तक अनेक छोटे-छोटे गाँवों से हो कर गुजरी जहाँ अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने जन संपर्क किया। इनमें अनेक स्कूल, बस्तियाँ और चौराहे शामिल थे जिनकी संक्षिप्त जानकारी यहाँ प्रस्तुत है - सूरत की बुड़िया चौकड़ी, सचिन का एल डी हाई स्कूल, पलसाना के भाटिया टोल प्लाजा, एस डी जे इंटरनेशनल स्कूल एवं संस्कार विद्या संकूल, चलथान के शुगर फैक्ट्री पार्किंग यार्ड, सूची इंडस्ट्रीज लिमिटेड बगुमरा, दस्तान चौकड़ी, बारडोली के गंगाधरा व सभा भवन, चांददेवी, सरभोण, नवसारी के पेरागांव,



टाटानगर चौकड़ी एवं उदय पैलेस, केवीएस हाई स्कूल, दयालनगर, गंदेवा, थाला गांव, चिखली, सार्वजनिक हाई स्कूल, इंगरी, वलसाड के बैजलपुर - खैरगाम रोड चौकड़ी, सरस्वती इंटरनेशनल स्कूल, आरटीओ एवं पत्तरी, धर्मपुर चौकड़ी तथा धर्मपुर के काकड़कुवाँ, लकड़माड, स्वामी नारायण स्कूल, वलसाड के वाजावाड, अमेटी, कपराडा एवं जवाहर नवोदय विद्यालय।

यात्रा मार्ग में अनेक स्थानों पर स्वयं आचार्य प्रवर ने स्थानीय जनता को सद्ग्राव, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश दिया। अनेक स्थानों पर मुख्यमुनि श्री महावीरकुमारजी, अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार जी, मुनिश्री सुधांशु कुमारजी, मुनिश्री अनुशासन कुमारजी का मार्गदर्शन जनता को प्राप्त हुआ। अणुव्रत कार्यकर्ताओं का समर्पण भाव और श्रम शक्ति भी उल्लेखनीय है जो भीषण गर्मी में भी अणुव्रत मिशन को आगे बढ़ाने में संलग्न हैं।

मई माह में (20 मई तक) अणुव्रत यात्रा में सहभागी अणुव्रत कार्यकर्ताओं का विवरण -

### अणुविभाटीम

अविनाश नाहर, अध्यक्ष(3 दिन)

संचय जैन, संयोजक-अणुव्रत अमृत महोत्सव(2 दिन)

भीखम सुराणा, महामंत्री(2 दिन)

राजेश सुराणा, उपाध्यक्ष(3 दिन)

मनोज सिंघवी, सहमंत्री(4 दिन)

अर्जुन मेड़तवाल, गुजरात प्रभारी(11 दिन)

अनिल समदिया, संयोजक-अणुव्रत यात्रा प्रभारी(3 दिन)

राकेश चौरडिया, सहसंयोजक-चुनावशुद्धि अभियान(2 दिन)

रमेश डोडावाला, संयोजक-अणुव्रत गीत महासंगान(2 दिन)

जगजीवन चौरडिया, सहमंत्री(2 दिन)

विनोद बच्छावत, प्रभारी-बीकानेर संभाग(2 दिन)

### अणुव्रत समिति, बारडोली

पायल चौरडिया, अध्यक्ष(8 दिन)

राजेश चौरडिया, सदस्य(8 दिन)

### अणुव्रत समिति, जयपुर

विमल गोलछा, अध्यक्ष(1 दिन)

### अणुव्रत समिति, मुम्बई

सुभाष मेहता(4 दिन)

प्रकाश कच्छारा(4 दिन)

महावीर बडाला(3 दिन)

दिलीप मंडोत(3 दिन)

### अणुव्रत समिति, वारपी

विमल झाबक, अध्यक्ष(3 दिन)





## अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य में प्रबुद्ध सम्मलेन

बारडोली अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में 9 मई को अणुव्रत प्रबुद्ध सम्मलेन का आयोजन किया गया जिसमें अनेक वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, बिजनेसमैन एवं सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हुए। आचार्य प्रवर ने अणुव्रत जीवनशैली की व्याख्या करते हुए ईमानदारी, अहिंसा, संयम और अध्यात्म जैसे मूल्यों को लघु उद्धरणों के साथ प्रस्तुत किया।

अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार ने अणुव्रत अमृत महोत्सव एवं अणुव्रत यात्रा के बारे में जानकारी दी। आचार्य प्रवर के उद्बोधन के बाद संभागियों ने अपनी जिज्ञासाएँ व्यक्त कीं जिनका समाधान स्वयं आचार्य प्रवर ने दिया।

## बारडोली में अणुविभा कार्यसमिति बैठक आयोजित



अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की कार्यसमिति बैठक 10 मई 2023 को संस्था अध्यक्ष अविनाश नाहर की अध्यक्षता में बारडोली, गुजरात में आयोजित हुई। यह वर्तमान कार्यकाल 2022-24 की पाँचवीं कार्यसमिति बैठक थी। बैठक में अणुव्रत अमृत महोत्सव, अणुव्रत यात्रा, अर्थ सम्बल अभियान सहित

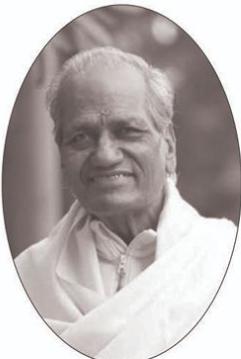
वकील योगेश पोखरना, दीपेन पारीख, डॉ. सुमित भाई, चैंबर ऑफ कॉर्मस के अध्यक्ष निरंजन मानाजी मिस्त्री, ब्रह्माकुमारी से प्रमुख जयश्री बहन, अरुणा दीदी, गंगाधरा गाँव के सरपंच कशिश बेन फारुख भाई, सेनसीरेते स्कूल के प्रिंसिपल अमरसर, मार्ले बा कॉलेज के प्रोफेसर डॉक्टर भावेश भाई आदि ने आत्म कल्याण और व्यावहारिक जीवन में संतुलन स्थापित करने की दिशा में आचार्य प्रवर के दिशादर्शन को प्रभावी व प्रेरक बताया।

कार्यक्रम में अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर, अमृत महोत्सव के संयोजक संचय जैन तथा अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। अभिलाषा बांठिया द्वारा अणुव्रत गीत के संगान के पश्चात् समिति अध्यक्ष पायल चौरड़िया ने सभी का स्वागत किया। अंत में आभार ज्ञापन मंत्री केतन मेडतवाल ने किया।

विभिन्न मुद्दों पर सार्थक चर्चा हुई और निर्णय लिये गये। विभिन्न प्रकल्पों के संयोजकों ने गति-प्रगति की जानकारी प्रस्तुत की। इनमें शामिल थे रमेश डोडावाला (अणुव्रत गीत महासंगान), प्रकाश भंडारी (संयम दिवस), रचना कोठारी (शिक्षक छात्र अणुव्रत), उमेंद गोयल (समिति मिनट बुक), पुष्पा कटारिया (अणुव्रत अमृत किट), राकेश चोरड़िया व उत्तमचंद पगारिया (चुनाव शुद्धि), अनिल समदड़िया (अणुव्रत यात्रा), सुरेश बागरेचा (अणुव्रत प्रदर्शनी) आदि।

बैठक में महामंत्री भीखम सुराणा एवं निवर्तमान अध्यक्ष संचय जैन के साथ ही उपाध्यक्ष राजेश सुराणा व विनोद कोठारी, संगठन मंत्री पायल चौरड़िया, सहमंत्री मनोज सिंघवी व उमेंद गोयल, राज्य प्रभारी अर्जुन मेडतवाल, रमेश धोका, कैलाश बोराणा, विनोद बच्छावत, विमल बैद ने भाग लिया। बैठक प्रारम्भ करने से पहले सभी सदस्य अणुव्रत अनुशास्ता की सन्त्रिधि में पहुँचे और आशीर्वाद प्राप्त किया।





## संयम साधना का महायज्ञ अणुव्रत गौरव श्री धनराज बैद की दुर्लभ तपस्या

अणुव्रत गौरव सम्मान से सम्मानित 'अणुव्रत सेवी' श्री धनराज बैद पिछले लगभग 5 वर्षों से एक ऐसी तपस्या कर रहे हैं जो एक गृहस्थ व्यक्ति के लिए कठिनतम तपस्या कही जा सकती है।

"श्रावक प्रतिमा" नामक संयम की यह कठोर साधना श्री बैद ने 1 दिसम्बर 2017 को प्रारम्भ की थी जो अनेक पड़ाव पार करते हुए 31 मई 2023 को संपन्न हुई है। करीब 40 वर्षों तक दिल्ली में एक सफल सी.ए. और सी.एस. के रूप में व्यापक प्रतिष्ठा अर्जित करने वाले बैद के जीवन में व्यावसायिक सफलता के साथ ही आत्मिक प्रकाश भी प्रदीप होता रहा।

48 वर्ष की आयु में बारह ब्रती श्रावक बनने के साथ ही अपने 50वें जन्मदिवस पर आपने 50 प्रकार के त्याग लिये तथा जीवन को संयम के मार्ग में प्रवृत्त करने का निश्चय किया। उस समय गुरुदेव श्री तुलसी ने आपको श्रावक से महाश्रावक बनने का आशीर्वाद प्रदान किया था। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने वर्ष 2003 में आपको अणुव्रत सेवी तथा वर्ष 2008 में शासन सेवी संबोधन प्रदान किया। अणुव्रत आंदोलन से आपका लम्बा जुड़ाव रहा है। आपने लंबे समय तक अनेक पदों पर रहते हुए संघीय सेवा के विभिन्न दायित्वों का निर्वहन कुशलतापूर्वक किया।

आपने 6 वर्ष तक अणुव्रत महासमिति के कार्यकारी अध्यक्ष, 3 वर्ष तक आदर्श साहित्य संघ के उपाध्यक्ष, 2 वर्ष तक जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष, 2 वर्ष तक अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष, 7 वर्ष तक जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की वित्त समिति के सदस्य व 5 वर्ष तक प्रबंध मंडल के सदस्य तथा 6 वर्ष तक जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा फरीदाबाद के अध्यक्ष तथा 3 वर्ष तक मंत्री पद का दायित्व सफलतापूर्वक निभाया।

आपने अपने पारिवारिक ट्रस्ट के द्वारा प्रतिवर्ष लगभग ढाई लाख रुपये का विसर्जन किया। अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन में अहिंसात्मक सहभागिता निभाने के साथ ही आप समाज में नैतिक मूल्यों के विकास के लिए सतत प्रयत्नशील रहे हैं।

वर्ष 2019 में आपको 'अणुव्रत गौरव' अलंकरण प्रदान किया गया। आप चाहे किसी भी भूमिका में रहे, संयम, श्रद्धा से भावित जीवन, आरंभ-समारंभ का त्याग तथा निरंतर तप के प्रयोग से आपका मनोबल दृढ़ हुआ है।

अणुव्रत विश्व भारती परिवार इस महान तप की सफल सम्पूर्णता पर आदरणीय श्री धनराज बैद का अभिनंदन करता है और आपके उत्तरोत्तर शुभ आध्यात्मिक भविष्य की मंगल कामना करता है।

### अणुव्रत भवन दिल्ली में वर्धापना समारोह आयोजित

दिल्ली। 21 मई को दिल्ली के अणुव्रत भवन में शासन सेवी, प्रतिमाधारी श्रावक धनराज बैद का वर्धापना समारोह आयोजित



किया गया। अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण की विदुषी शिष्याओं शासनश्री साध्वीश्री संघमित्राजी और शासनश्री साध्वीश्री रत्नश्रीजी के सान्निध्य में आयोजित समारोह में विभिन्न वक्ताओं ने श्री बैद के जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों को उजागर किया और इनके इस महान तप की अनुमोदना की। आचार्य श्री महाश्रमण जी के संदेश का वाचन किया गया।

इस अवसर पर श्री बैद की साधना पर आधारित वृत्तचित्र भी दिखाया गया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली के मुख्य आयोजकत्व में सम्पन्न इस समारोह में मांगीलाल सेठिया, के.एल. जैन, सुखराज सेठिया, हीरालाल गेलड़ा, सायर बैंगानी, लालचंद सिंघी, शांति जैन समेत अनेक गणमान्य जनों के वक्तव्य हुए।

अणुव्रत विश्व भारती के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा एवं महामंत्री भीखमचंद सुराणा ने इस अवसर पर अणुव्रत परिवार की ओर से श्री बैद के प्रति शुभकामना व्यक्त की। अणुव्रत महासमिति के दो पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा और अशोक संचेती भी इस अवसर पर उपस्थित थे। कार्यक्रम से पूर्व 'अणुव्रत' सम्पादक संचय जैन ने भी उनसे मुलाकात कर सम्मान व्यक्त किया।



## दिल्ली में त्रिदिवसीय जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर

दिल्ली। दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग की पहल पर अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी व अणुव्रत समिति दिल्ली द्वारा अणुव्रत न्यास व जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के सहयोग से जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर 24 से 26 अप्रैल तक तेरापंथ भवन, महरौली के महाप्रज्ञ भवन में आयोजित हुआ। दिल्ली के शिक्षा निदेशक हिमांशु गुप्ता ने शिविर का उद्घाटन करते हुए जीवन विज्ञान को अनिवार्य बताया। उन्होंने कहा कि जीवन विज्ञान का पाठ्यक्रम विद्यालयों में लागू होना चाहिए।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के मुख्य प्रबंध न्यासी के. सी. जैन ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव के लिए जीवन विज्ञान वरदान है। स्कूलों में जीवन विज्ञान का समावेश होने पर बच्चों में अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, समृद्धि, विकास, सहनशीलता आदि मानवीय गुणों का विकास होता है। दक्षिण दिल्ली के उप शिक्षा निदेशक डॉ. अशोक त्यागी, अणुविभा के महामंत्री भीखमचंद सुराणा, उच्च शिक्षा प्रभारी डॉ. हंसा संचेती, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने भी विचार रखे। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति, दिल्ली के अध्यक्ष शांतिलाल पटाकरी ने किया।

उद्घाटन सत्र में संयुक्त शिक्षा निदेशक नाहर सिंह, एस. सी. ई. आर. टी. की निदेशक रीता सिंह, डी.आई.ई.टी. के प्राचार्य अनिल सिंह, नोडल ऑफिसर व कोऑर्डिनेटर श्यामसुंदर सिंह, हैरिटेज स्कूल प्रमुख नमित जैन, अणुविभा कार्यसमिति सदस्य सुरेंद्र नाहटा समेत अनेक कार्यकर्ता व समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

तीन दिवसीय शिविर में अणुविभा के जीवन विज्ञान प्रशिक्षण प्रभारी राकेश खटेड़े ने जीवन विज्ञान के सिद्धांतों के बारे में बताया। जीवन विज्ञान प्रशिक्षक हनुमानमल शर्मा ने

प्रार्थना सभा में जीवन-विज्ञान का प्रयोगिक व सैद्धांतिक प्रशिक्षण दिया। अजय शर्मा ने शरीर विज्ञान के संदर्भ में जानकारी दी। रमेश कांडपाल ने कायोत्सर्ग के सैद्धांतिक व प्रयोगिक पक्ष के बारे में बताया। रीना गोयल ने अनुप्रेक्षा के प्रयोग करवाये एवं डॉ. काजल भट्ट ने प्राकृतिक चिकित्सा व जीवनशैली की जानकारी दी।

योग प्रशिक्षक धर्मेंद्र व रितिका ने विभिन्न आसनों की पद्धति एवं उनके लाभों से अवगत कराया। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की डॉ. सुमन लुथरा ने आहार सिद्धांत तथा राज गुनेचा ने मुद्रा विज्ञान पर प्रकाश डाला। 26 अप्रैल को समाप्त समारोह में प्रशिक्षणार्थीयों ने अनुभव साझा किये। शिविर में उपनिदेशक, प्रधानाचार्य व अध्यापकों समेत 102 प्रशिक्षणार्थी शामिल हुए। समाप्त कार्यक्रम का संयोजन जीवन विज्ञान दिल्ली के प्रभारी बाबूलाल दूगड़े ने किया।



## अणुविभा मुख्यालय में तीन दिवसीय अणुव्रत बालोदय शिविर संपन्न नयी पीढ़ी को सही राह दिखा रही अणुविभा



**राजसमंद।** अणुव्रत विश्व भारती मुख्यालय स्थित चिल्ड्रन्स पीस पैलेस में तीन दिवसीय आवासीय अणुव्रत बालोदय शिविर 13 मई को सम्पन्न हुआ। शिविर में ऑरेन्ज काउण्टी स्कूल, राजसमन्द, नोबल पब्लिक स्कूल, भावा एवं नवप्रभात स्कूल, एमडी के 51 विद्यार्थी शामिल हुए। समापन सत्र में बच्चों के भावुक चेहरे बता रहे थे कि वे यहाँ के माहौल में तीन दिनों में ही इतना रच-बस गये थे कि उनका जाने का मन नहीं हो रहा था।

बच्चों ने अणुव्रत के दर्शन को समझने के साथ ही अपने घर जाने से पहले अच्छा इंसान बनने का संकल्प लिया। इसमें सुबह जल्दी उठना, थाली में जूठा नहीं छोड़ना, अधिक टीवी-मोबाइल न देखना, बजुर्गों की सहायता करना, नशा नहीं करना, नकल नहीं करना, गुस्सा आने पर मौन रखना, गाली नहीं देना जैसे लघु व्रत भी शामिल थे। शिविर में बच्चों के साथ रहीं अध्यापिकाएँ भी यहाँ की संवाद आधारित शिक्षण-शैली से प्रभावित नजर आयीं।

शिविर संयोजक मोनिका बापना एवं मोनिका राठौड़ ने बताया कि पहले दिन परिचय सत्र के उपरान्त डॉ. विनिता पालीवाल ने बच्चों के समक्ष आत्मविश्वास एवं व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया। इस दौरान बच्चों ने 'मॉक पार्लियामेण्ट' का आयोजन किया। इसमें सोशल मीडिया की भूमिका पर चर्चा करते हुए बच्चों ने खुलकर विचार

रखे। दूसरे दिन नंदिनी सनादय ने बच्चों को नृत्य कला के विभिन्न चरण प्रायोगिक रूप में समझाये। स्थानीय पुलिस साइबर सेल की सीता शर्मा ने साइबर क्राइम के विभिन्न आयामों और बचाव के तरीकों पर प्रकाश डालने के साथ ही बच्चों को गुड टच एवं बैड टच की अवधारणा से अवगत करवाया। बाल संस्कारविज्ञ प्रकाश तातेड़ ने रोचक प्रश्नों एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के माध्यम से बच्चों को 'थिंक डिफरेन्टली' का संदेश दिया। प्रातःकालीन सत्र में डॉ. सीमा कावड़िया एवं विनोद बोहरा ने यौगिक क्रियाओं का अभ्यास करवाया।

शिविर की सम्पन्नता पर अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि आज के दिग्भ्रमित कर देने वाले वैश्विक व सामाजिक माहौल में अणुविभा नयी पीढ़ी को सही राह दिखाने वाले प्रकाश स्तम्भ के रूप में काम कर रही है। यहाँ से प्रवाहित होने वाली प्रकाश किरणें अधिक से अधिक बाल हृदयों को आलोकित कर सकें, यह हमारा विनम्र प्रयास है। शिविर के बाद उन्होंने बच्चों के अलग-अलग समूहों से बात की और उनकी भावनाओं को जाना। इस अवसर पर जगजीवन चौरड़िया, विमल मुसरफ, देवेन्द्र आचार्य, प्रतिभा जैन, अंजली शर्मा, लोक कल्याणी, हर्षिल कावड़िया, उमा हाड़ा, तारा बरिया एवं शिल्पा शर्मा आदि की उपस्थिति व सहभागिता रही।



# अणुव्रत व्याख्यानमाला

■■ राष्ट्रीय संयोजक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत आंदोलन के 75वें वर्ष को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में अणुव्रत अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। इस दौरान अणुव्रत विचार, मूल्य एवं सिद्धांत जन-जन तक पहुँचें, इसके लिए अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन पूरे देश में किया जा रहा है।



अहमदाबाद अणुव्रत समिति द्वारा 1 मई को शाहीबाग के तेरापंथ भवन में अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इसमें मुनिश्री डॉ. मदनकुमारजी ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन आचार्य तुलसी ने किया। आचार्य महाप्रज्ञ ने उसे अहिंसा यात्रा के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया। वर्तमान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण अणुव्रत यात्रा द्वारा अणुव्रतों के संदेश व संकल्पों से जन-जन को लाभान्वित कर रहे हैं। अणुव्रत असाम्प्रदायिक धर्म है। आमतौर पर व्यक्ति दूसरों को सुधारने का प्रयास करता है लेकिन अणुव्रत पहले खुद को सुधारने की बात कहता है। उन्होंने दृष्टितों के माध्यम से अणुव्रत आचार संहिता का विश्लेषण किया। मुनिश्री सिद्धार्थकुमार ने संयम की साधना करने की प्रेरणा प्रदान की ताकि व्यक्ति संयमित जीवन जीने के साथ आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ सके।

अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुरेश बागरेचा ने अणुव्रत को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया। मंत्री मनोज सिंधी ने आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर अणुव्रत गीत व आचार संहिता के पॉकेट कार्ड वितरित किये गये एवं अनेक लोगों ने अणुव्रत आचार संहिता व संयम दिवस के संकल्प पत्र भरे।

दिल्ली अणुव्रत समिति की ओर से 20 अप्रैल को अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन विवेक विहार के ग्रीनफील्ड्स पब्लिक स्कूल में किया गया। इसमें मुनिश्री कमल कुमार ने 'सफलता का सूत्र : अणुव्रत' विषय पर प्रेरणा पाठ्य प्रदान किया। अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुमुख लुनिया ने श्रोताओं को अणुव्रत के संकल्प दिलाये। समिति अध्यक्ष श्री शान्तिलाल

पटावरी ने भी विचार रखे। विद्यालय की प्रिंसिपल नमिता गुप्ता ने मुनिश्री व अणुव्रत परिवार का अभिनंदन किया।

अंबिकापुर अणुव्रत समिति की ओर से 11 मई को जन शिक्षण संस्थान में अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्था के निदेशक एम. सिद्दिकी, सांसद के प्रतिनिधि पंकज गुप्ता, सरगुजा साइंस ग्रुप संस्थापक अंचल औझा, अणुव्रत समिति के प्रचार प्रसार मंत्री हनुमान डागा, सहयोगी सुषमा जायसवाल उपस्थित रहे।

सरस्वती शिशु मंदिर की प्राचार्या मीरा साहू ने श्रद्धा, विनय, विवेक और नैतिकता पर प्रकाश डाला। एम. सिद्दिकी ने अणुव्रत को स्वयं अपनाने से शुरू कर समाज को जागरूक करने की बात कही। संस्थापक अंचल औझा ने पर्यावरण के प्रति जागरूक रहकर पौधे लगाने पर जोर दिया। उन्होंने संयम दिवस में मौन रहने और फोन से दूरी बरतने का आह्वान किया। कार्यक्रम का सफल संचालन ममोल कोचेटा ने किया। उन्होंने बीच-बीच में प्रश्न किये और जबाब देने वालों को पुरस्कार भी दिया।

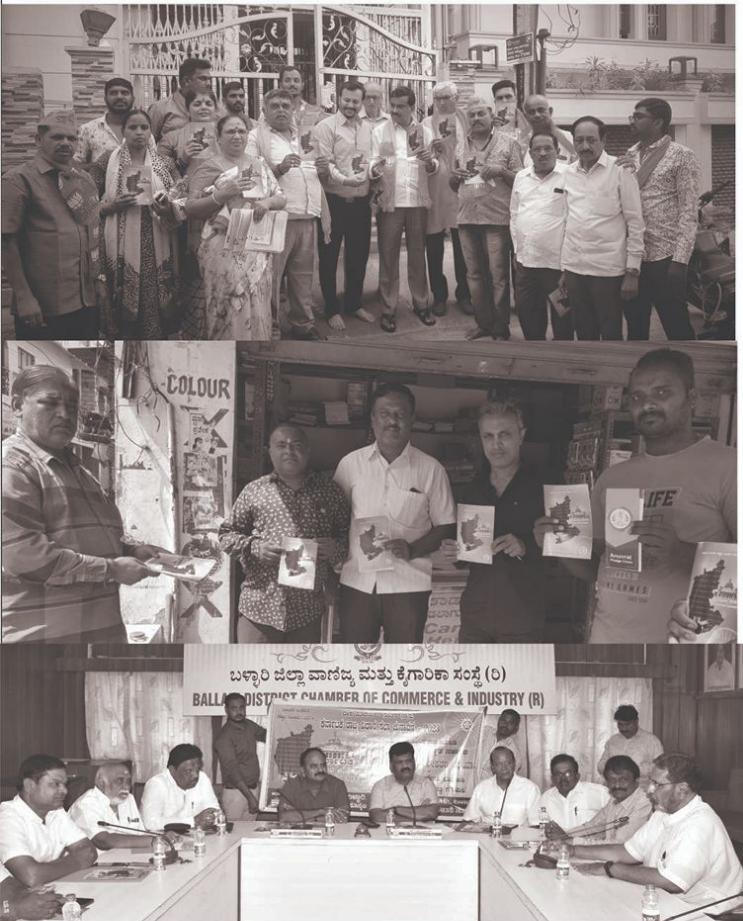
बरपेटा रोड अणुव्रत समिति की ओर से तेरापंथ भवन में साध्वीश्री स्वर्णरिखा जी के सान्निध्य में अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री स्वर्णरिखा जी ने कहा कि अणुव्रत को अपनाने से कषाय मंद होते हैं, जीवन संयम से परिपूर्ण बन जाये, संयम स्वभाव का अभिन्न अंग बन जाये तो जीवन शांतिपूर्ण और सुखी बन सकता है। अपने आमोद-प्रमोद के लिए किसी भी निरपराध प्राणी को नहीं सताना चाहिए। प्राणियों के वध से बने वस्त्र या प्रसाधन सामग्री का उपयोग नहीं करना जैसे संकल्प संयम की साधना के प्रयोग हैं।

इस अवसर पर प्रो. डॉ. जवाहरलाल नाहटा, समाजसेवी शिवरत्न राठी, कानाईलाल स्कूल के प्रध्यानाध्यापक कमलेश्वर कलिता उपस्थित रहे। प्रो. डॉ. नाहटा ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन ने देश में नैतिकता, सत्य निष्ठा, प्रामाणिकता और साम्प्रदायिक सद्भाव आदि सार्वभौम तत्त्वों की धारा बहाकर युग चेतना को झकझोरा। समिति की ओर से अतिथियों को अणुव्रत डायरी देकर सम्मानित किया गया। समिति के अध्यक्ष अनिल बेंगानी ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

# कर्नाटक की समितियों ने चुनाव शुद्धि अभियान

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशन में कर्नाटक की अणुव्रत समितियों ने विधानसभा चुनाव के दौरान चुनाव शुद्धि अभियान चलाया। इसके तहत विभिन्न स्थानों पर कन्नड़ में प्रकाशित बुकलेट का वितरण किया गया। इसमें अणुव्रत के नियमों के साथ ही किस तरह अपने मताधिकार का उपयोग करना चाहिए और उम्मीदवार कैसा होना चाहिए, इसके बारे में बताया गया है। भाजपा प्रत्याशी बॉबी वेंकटेश को चुनावशुद्धि अभियान की जानकारी प्रदान की गयी। वेंकटेश ने अन्य संगठनों द्वारा भी ऐसे अभियान चलाये जाने की आवश्यकता जतायी।

वहीं, होसकोटे में मुनिश्री दीपकुमार एवं मुनिश्री काव्यमुनि के सान्निध्य में धोका निवास पर अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान बैनर का अनावरण हुआ। इस अवसर पर अणुविभा के संगठन मंत्री राजेश चावत, अणुव्रत समिति बैंगलुरु के प्रचार प्रसार मंत्री चंद्रशेखर, विजयनगर क्षेत्रीय सहयोगी लाभेश कांसवा, चुनाव शुद्धि संयोजक रूपचंद देसरला व अन्य सदस्य उपस्थित थे। इस अभियान में अणुव्रत समिति बैंगलुरु सहित हुबली, बलारी, मांड्या, चित्रदुर्ग, नंजनगुड़ समितियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।



## अणुव्रत रैली निकाली



बंगाइयाँव। अणुव्रत समिति की ओर से 10 मई को पगलास्थान से तेरापंथ भवन तक अणुव्रत रैली निकाली गयी। रैली में सभी समाज के गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। रैली की समाप्ति पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए

साध्वीश्री स्वर्णरिखा जी ने अणुव्रत आंदोलन के उद्देश्यों की व्याख्या की। उन्होंने आहान किया कि अणुव्रतों का पालन कर अपने जीवन को सार्थक और सफल बनाएं। कार्यक्रम में 11 व्यक्तियों ने अणुव्रत आचार संहिता के 11 संकल्पों को बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बजरंग लुणवतनेधन्यवाद ज्ञापित किया।

## अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के विजेताओं का सम्मान

गुवाहाटी। अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा आयोजित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2022 के राष्ट्रीय एवं असम राज्य स्तर के विजेताओं का सम्मान कार्यक्रम स्थानीय साउथ प्लाइंट



स्कूल में अणुव्रत समिति की ओर से आयोजित किया गया। स्कूल के 33 विद्यार्थियों ने गायन, निबंध, भाषण, चित्रकला प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया था। इनमें 10 विद्यार्थी असम राज्य स्तर पर विजेता रहे। राष्ट्रीय स्तर पर निबंध प्रतियोगिता (कक्षा 6-8) में पहला स्थान योहेंबी चानु तथा चित्रकला (कक्षा 9-12) में तृतीय स्थान जूमोन ठाकुरिया ने प्राप्त किया। सभी विजेताओं को अणुविभा की ओर से पुरस्कार, मोमेंटो एवं

प्रशस्ति पत्र दिये गये। स्कूल के प्राध्यापक कृष्णांजन चंदा एवं डायरेक्टर मंदिरा चंदा का अभिनंदन मोमेंटो व अणुव्रत पट्ट से किया गया।

अणुव्रत समिति, गुवाहाटी के अध्यक्ष बजरंग लाल डोसी ने विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी। अणुविभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री बजरंग बैद ने अणुव्रत के विषय में तथा अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के राष्ट्रीय सह संयोजक एवं ईस्ट जोन प्रभारी संजय चौरड़िया ने कॉन्टेस्ट के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन कॉन्टेस्ट की स्कूल प्रभारी पांचाली सान्याल ने किया। इस अवसर पर अणुविभा के असम प्रभारी छत्तर सिंह चौरड़िया, मंत्री अशोक बोरड़, संगठन मंत्री प्रेमलता बैद, प्रचार प्रसार मंत्री संतोष काबरा, कार्यकारिणी सदस्य अशोक मालू, सम्पत मिश्रा, निर्मल बैद उपस्थित थे।

## आचार्य महाप्रज्ञ की शिक्षाओं से श्रेष्ठ विश्व का निर्माण संभव : विधानसभा अध्यक्ष

दिल्ली। विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल की पहल पर दिल्ली विधानसभा परिसर में महान दर्शनिक सन्त आचार्य महाप्रज्ञ का 14वाँ महाप्रयाण दिवस आयोजित किया गया। इस अवसर पर गोयल ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ की शिक्षाओं से



श्रेष्ठ विश्व का निर्माण हो सकता है। आचार्य श्री द्वारा प्रणीत जीवन विज्ञान व प्रेक्षाध्यान का बहुत महत्व है। मुनिश्री कमल कुमार ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जीवन दर्शन व अवदानों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ से प्रेरणा प्राप्त करके पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम ने शान्ति की मिसाइल बनायी। आचार्य श्री महाश्रमण के साथ पदयात्रा में लाखों लोगों ने प्रेरणा लेकर नशा का परित्याग किया। मंचासीन मिथिलेश गोयल, अणुविभा के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा, अणुव्रत न्यास के मुख्य न्यासी के.सी. जैन व तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने भी विचार रखे। इससे पहले दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने विषय का प्रवर्तन तथा अणुव्रत समिति दिल्ली के अध्यक्ष शान्तिलाल पटावरी ने आभार ज्ञापन किया।



**अणुव्रत आंदोलन** के सशक्त स्तम्भ रहे स्वतंत्रता सेनानी आदरणीय श्री देवेन्द्र कुमार कर्णाविट का यह जन्म शताब्दी वर्ष है। 'देवेन्द्र भाई' और 'काका' के नाम से लोकप्रिय रहे श्री कर्णाविट अणुव्रत के उन प्रारम्भिक प्रमुख कार्यकर्ताओं में शामिल थे जिन्होंने आचार्य तुलसी के निकट रहते हुए अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभायी। देवेन्द्र काका का जीवन अणुव्रत के आदर्शों का जीवंत स्वरूप था। 'अणुव्रत' पत्रिका के प्रथम संपादक रहे। 'अणुव्रत महारथी' के विशिष्ट सम्बोधन के साथ ही उन्हें 'अणुव्रत पुरस्कार' व 'समाज भूषण' जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 7 मई 2023 को देवेन्द्र भाई के 100वें जन्मदिवस पर राजसमंद के गांधी सेवा सदन में आयोजित कार्यक्रम में, जो बाल पीढ़ी के नव निर्माण के उनके सपनों की कृति है, शताब्दी वर्ष समारोह का आगाज हुआ। अणुविभा व अणुव्रत परिवार अणुव्रत के उस महान सेनानी का गौरव के साथ स्मरण करते हुए उनके प्रेरक व्यक्तित्व को प्रणाम करता है। यहाँ प्रस्तुत हैं श्री देवेन्द्र कुमार कर्णाविट के प्रति आचार्य तुलसी द्वारा अभिव्यक्त विचार -

## अणुव्रत के प्रथम हस्ताक्षर देवेन्द्र भाई



**भा** रत एक महान देश है। इसमें अनेक महान व्यक्तियों ने जन्म लिया। महत्ता के शिखर पर आरूढ़ उन व्यक्तियों के व्यक्तित्व-निर्माण में उपादान उनके भीतर रहा है, पर निमित्तों को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। बहुत कम व्यक्ति होते हैं, जो नैसर्गिक रूप से महान होते हैं। जन्म के समय प्रायः महापुरुष साधारण रूप में होते हैं। उनके लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा में भी कोई अतिरिक्त वैशिष्ट्य परिलक्षित नहीं होता। उनके जीवन में कभी-कभी ऐसा प्रसंग घटित होता है, जो उन्हें अंगड़ाइ लेने के लिए विवश कर देता है। किसी व्यक्ति को कोई ऐसी प्रेरणा लग जाती है, जो उसके जीवन की धारा बदल देती है। कुछ व्यक्तियों को ऐसा वातावरण उपलब्ध हो जाता है, जो उनकी खोई हुई चेतना को झंकृत कर जाता है। इस दृष्टि से निमित्तों का अपना मूल्य है।

### एक माँ का सपना

देवेन्द्र कुमार कर्णाविट 'अणुव्रत' के मंच पर एक उदीयमान कार्यकर्ता के रूप में उभरे। तेरापंथ के साथ पूरे मन से जुड़े। समाज में अपना वर्चस्व स्थापित किया। इसका श्रेय यदि किसी को दिया जा सकता है, तो उसकी अधिकारिणी है देवेन्द्र की माँ। अवस्था के तीसरे पड़ाव पर पहुँचने पर भी उसके विचारों में तारुण्य की दीसि थी। उसने एक सपना देखा- "मेरा देवजी

किसी तरह धर्म की शरण स्वीकार कर ले।" उसके मन में न तो पुत्र को सत्ता के शिखर पर देखने की आकांक्षा थी, न अरबपति-खरबपति बनाने की लालसा थी और न सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उभारने की इच्छा थी। उस माँ की एक चाह थी कि उसका बेटा धर्म की महत्ता को समझे। उस समय किसी को कल्पना भी नहीं थी कि धर्म के नाम से दूर भागने वाला देवेन्द्र धर्म के प्रति इतना समर्पित होकर काम करेगा।

### क्या ये वे ही देवेन्द्र हैं?

देवेन्द्रजी ने यहाँ आकर बहुत पाया तो यह भी मानना होगा कि इन्होंने बहुत दिया। तब से अब तक की पूरी समीक्षा की जाये तो लगेगा विनिमय हुआ है। देवेन्द्रजी के चिन्तन में उस समय भी युगबोध का प्रभाव था। समाज की बुनावट और अपेक्षाओं के बारे में निरन्तर सोचते थे। इनके चिन्तन में ठहराव तो आज भी नहीं है। पर उस युग में, जबकि सामाजिक क्रान्ति का स्वर बहुत मन्द था, उसकी मुखरता ने देवेन्द्रजी के कर्तृत्व को उजागर कर दिया।

मेरे सामने सत्य के दो रूप हैं- शाश्वत और सामयिक। शाश्वत सत्य कभी बदलता नहीं। सामयिक सत्य देश और काल की परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। शाश्वत सत्य मेरी आस्था का मूल आधार है, पर सामयिक सत्य ने कभी मेरी आस्था को विचलित नहीं किया। शाश्वत के प्रति मेरी पकड़ जितनी गहरी है, सामयिक परिवर्तन को स्वीकार करने की मनोवृत्ति में उतना ही लचीलापन है। इस अनेकान्त के कारण ही देवेन्द्रजी जैसे व्यक्ति मेरे पास आकर टिक सके और सहज भाव से काम कर सके।

शाश्वत और सामयिक का समुचित योग ही विकास की यात्रा है। इस तथ्य को सत्यापित करने वाले उदाहरण स्वयं देवेन्द्रजी हैं। अपने विचारों और सिद्धान्तों के बारे में वे चब्बान की तरह अडोल रहे हैं। इनमें लचीलापन खोजने पर भी नहीं मिलता था। अपनी बात रखने के लिए वे कड़े से कड़े कदम उठाने के लिए उद्यत रहते हैं। फिर आज वे बहुत बदल गये हैं। इनको देखकर कभी-कभी विश्वास ही नहीं होता कि ये वे ही देवेन्द्र हैं, जिन्होंने कभी हटना या मुड़ना नहीं सीखा।

## एक छोटी रामायण

देवेन्द्रजी आये, एक बार लौट गये। फिर आये और फिर लौटे। ऐसी कई आवृत्तियां हुईं। आखिर सन् 1947 में देश की आजादी के साथ ये फिर आये। इसके बाद इनके पाँव जम गये। मजीठ का रंग उतरे तो इन पर से हमारा रंग उतरे। इन पैतालीस वर्षों की अवधि में इन्होंने अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। अनेक प्रकार की कठिनाइयों को झेला है। कितने आक्षेप-प्रक्षेपों और आरोप-प्रत्यारोपों को सहन किया है। इन सब स्थितियों में ये अपने गुरु के प्रति विशेष रूप से 'अणुव्रत' और हमारी नवीन विचारधाराओं के प्रति समर्पित रहे हैं। इनकी कहानी अपने आप में एक छोटी रामायण है।

## कर्तृत्व का एक उदाहरण

'अणुव्रत' का प्रारंभ हुए एक दशक पूरा हो चुका था। दूसरे दशक में प्रवेश के बाद 'तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह' का प्रसंग उपस्थित हुआ। उस अवसर पर 'अणुव्रत' के मंच से 'नया मोड़' कार्यक्रम उद्घाटन में आया। उसका प्रथम चरण मेवाड़ में था। उस वर्ष हमारा चातुर्मासिक प्रवास राजसमंद था। 'नया मोड़' कार्यक्रम का देवेन्द्रजी की माँ पर सीधा प्रभाव पड़ा।

सत्तर-पचहत्तर वर्ष की अवस्था, कोयले जैसे काले कपड़े, कलाई तक लम्बी फतुई और एक-डेढ़ हाथ लम्बा धूंघट उस समय की परंपरा में एक विधवा स्त्री का जैसा परिधान मान्य था, वह उसके प्रति जागरूक थी। नया मोड़ की बात सुनने की मानसिकता ही नहीं थी। पर उसके पास एक विशिष्ट मानसिकता थी, श्रद्धा थी। श्रद्धा के बल पर उसने 'नया मोड़' के महत्व को समझा। उसने एक झटके के साथ सारी रुढ़ियों को तिलांजलि दे दी। धूंघट छोड़ा, काले कपड़े छोड़े और विवेक के साथ नयी दिशा में प्रस्थान कर दिया। वह वृद्धा माँ अकेली ही नहीं बदली। उसने अनेक महिलाओं के लिए बदलाव का रास्ता प्रशस्त कर दिया। आज नये सिरे से काले कपड़े पहनने की बात तो है ही नहीं। पुरानी बहनों में भी काले कपड़ों वाली बहन खोजने पर मुश्किल से ही मिल पाती है। इस प्रसंग में भी देवेन्द्रजी के कर्तृत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

## देवेन्द्र और जैनेन्द्र

'अखिल भारतीय अणुव्रत समिति' के अध्यक्ष के मनोनयन का प्रश्न उपस्थित हुआ। जैनेन्द्रजी का नाम सामने आया। देवेन्द्रजी ने जैनेन्द्रजी से सम्पर्क किया। उन्होंने देवेन्द्रजी के आग्रह पर परोक्ष स्वीकृति देते हुए कहा- "जैसे तुम चाहोगे, मैं वैसे ही काम करूँगा।" देवेन्द्रजी बोले- "बाबूजी! और तो सब ठीक है, पर एक शर्त है। आपको अणुव्रती बनना होगा। 'अणुव्रत' के फॉर्म पर हस्ताक्षर करना होगा।" इस पर जैनेन्द्रकुमारजी अड़ गये। उन्होंने कहा- "मुझे राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री बुलाये और हस्ताक्षर कराये तो मैं नहीं करता।" अणुव्रती बने बिना अणुव्रत समिति का अध्यक्ष बनाना समिति के संविधान में नहीं था। देवेन्द्रजी मेरे पास आये और यह समस्या प्रस्तुत की। मैंने कहा- "जैनेन्द्रकुमारजी चिन्तनशील व्यक्ति हैं। वे जानते हैं कि हर स्थान पर आग्रह नहीं चल सकता। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की बात और है। यह धर्म का मामला है।"



देवेन्द्रजी ने जैनेन्द्रजी के पास जाकर पूरी बात इस ढंग से रखी कि उनकी मानसिकता बदल गयी। वे बोले - "आचार्यश्री की दृष्टि है, तो लाओ फॉर्म। मैं हस्ताक्षर कर देता हूँ।" मैं मानता हूँ कि वे देवेन्द्रजी थे, जो जैनेन्द्रजी को झुका सके या मना सके।

## अणुव्रत से जुड़ा व्यक्तित्व

'अणुव्रत आंदोलन' के प्रारंभिक काल में उसके नाम को लेकर व्यापक चर्चा हुई। निष्कर्ष के रूप में 'अणुव्रत' नाम स्थिर हुआ। इस नाम पर देवेन्द्रजी बिफर गये। वे बोले- "यह भी कोई नाम है। व्यवहार शुद्ध आंदोलन या चरित्र-निर्माण आंदोलन जैसा नाम होना चाहिए।" उन्हें समझाने का प्रयास किया गया, पर वे नहीं समझे।

धूम-फिरकर बात मेरे पास आयी। मैंने कहा- "देवेन्द्रजी! तुम्हारी समझ में 'अणुव्रत' नाम नहीं बैठ रहा है। कोई बात नहीं। नाम दूसरा भी हो सकता है, किन्तु मैं एक बात कहना चाहूँगा कि कभी दूसरों की समझ पर भी विश्वास करना सीखना चाहिए।" देवेन्द्रजी मेरे कथन के अभिप्राय को समझकर बोले- "अणुव्रत नाम आपको ठीक लगा है क्या?" मैंने स्वीकृतिदी तो इन्होंने अपनी असहमति हटा ली। अब वे कहते हैं- 'अणुव्रत' नाम बहुत सुन्दर है। छोटा-सा शब्द है, पर इसका अर्थ कितना बड़ा है।

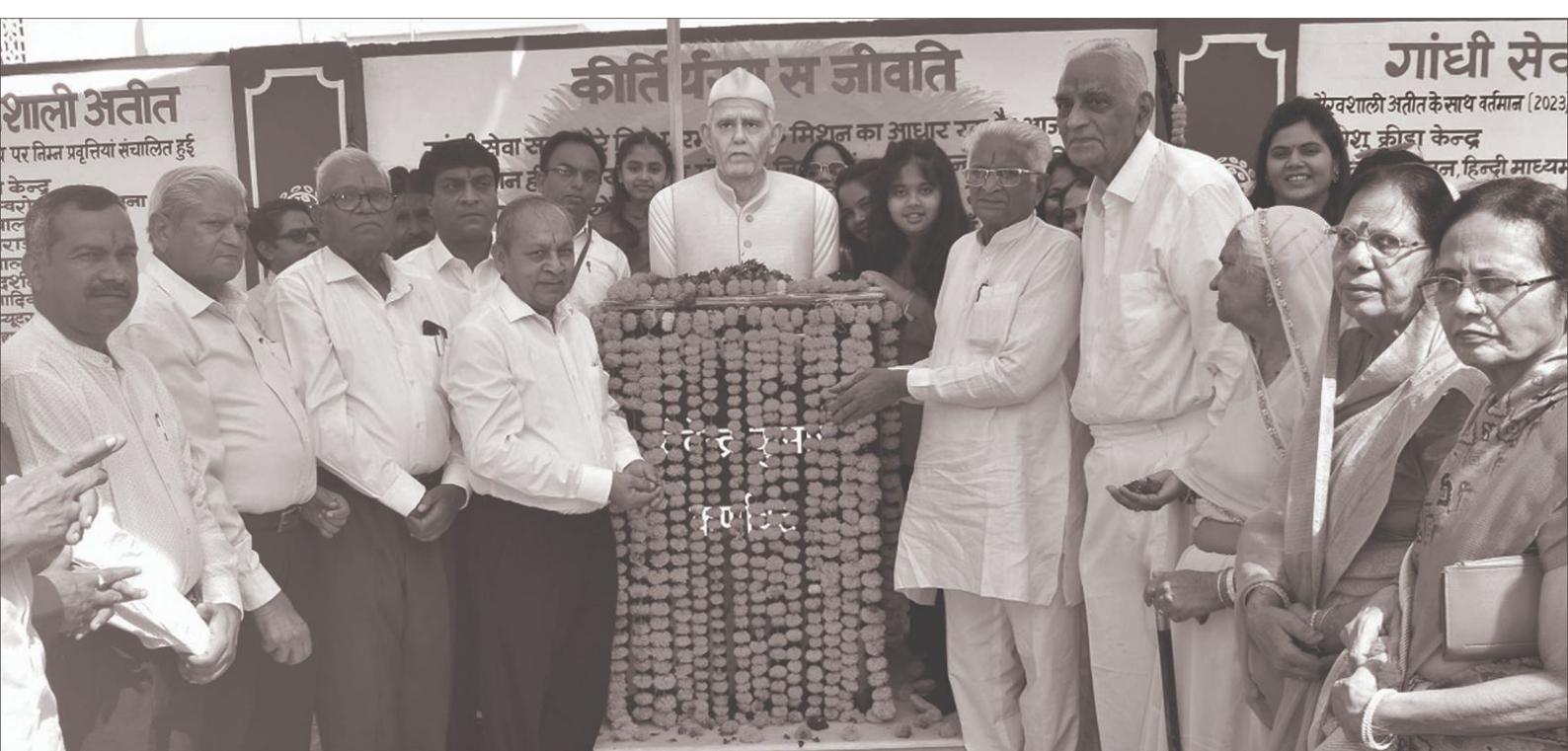
'अणुव्रत' के कार्य में सुगनचन्द्रजी आंचलिया, जयचन्दलालजी दफतरी और देवेन्द्रजी कर्णावट - तीनों का अद्भुत योग था। इस सन्दर्भ में होने वाले चिन्तन और निर्णय में वे सदा साथ रहे। दफतरीजी ने देवेन्द्रजी को पूरा महत्व दिया और देवेन्द्रजी ने दफतरीजी को पर्याप्त सम्मान दिया। आंचलियाजी और दफतरीजी चले गये, पर देवेन्द्रजी आज भी 'अणुव्रत' के साथ पूरी तन्मयता के साथ जुड़े हुए हैं। प्रारंभ से लेकर अब तक अणुव्रत मंच से मानवता की सेवा करने वाले इस व्यक्ति की जोड़ी कहां मिलेगी?

## अणुव्रत के प्रथम हस्ताक्षर

देवेन्द्रजी निकट आये। उन्होंने 'अणुव्रत' को समझा। 'अणुव्रत' के साथ लगाव का अनुभव किया। अणुव्रती बने। 'अणुव्रत पत्र' के सम्पादक बने। अखिल भारतीय 'अणुव्रत' समिति के अध्यक्ष बने। 'अणुव्रत प्रवक्ता' बने और भी न जाने, क्या-क्या बने। 'अणुव्रत' के बारे में लिखने बैठते हैं तो कलम बिना उठे ही चलती रहती है।

देवेन्द्रजी का वकृत्व भी अनूठा है। क्रान्तिकारी विचार, विचारों का प्रवाह और अभिव्यक्ति की स्पष्टता के कारण ये एक बार तो श्रोताओं को अपने साथ बहा लेते हैं। देवेन्द्रजी का व्यक्तित्व अनेक घटकों का समवाय है। उनकी कार्यक्रमता बेजोड़ है। कार्यकर्ताओं को साथ लेने और निभाने की कला है। सबसे बड़ी बात है अपने आराध्य के प्रति गहरा समर्पण।

अणुव्रत आंदोलन के प्रथम हस्ताक्षर देवेन्द्र भाई कर्णावट। अणुव्रत उसके शब्दों तक सीमित नहीं रहा, जीवन से जुड़ गया। तेरापंथ धर्मसंघ की अभिनव क्रांति में जिसका अकल्पित और अचिन्तित योगदान रहा।



## जन्म शताब्दी महोत्सव में प्रतिमा का अनावरण

राजसमंद। पराधीन भारत में आजादी और सामाजिक क्रांति का शंखनाद करने वाले स्वतंत्रता सेनानी 'देवेन्द्र कुमार कर्णावट' का जन्म शताब्दी महोत्सव यहां गांधी सेवा सदन में 7 मई को प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर स्व. कर्णावट की प्रतिमा का अनावरण, उनके जीवन पर आधारित 'देवेन्द्र कक्ष' का लोकार्पण तथा देवेन्द्र काका की आत्मकथा 'त्रहणी हूँ मैं आप सबका' एवं 'मुखर पुरुषाथ', 'अभ्यर्पण', 'श्रद्धा प्रसून' पुस्तकों का लोकार्पण भी हुआ।

समारोह को संबोधित करते हुए शिक्षा-साहित्य मनीषी एवं अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी ने कहा- "देवेन्द्र भाई की तार्किक शक्ति, सामयिक समस्याओं के बारे में वैश्विक दृष्टि, वैचारिक उदारता एवं सम्प्रदायातीत सोच ने मुझे आकर्षित किया। उन्होंने की प्रेरणा से मैंने सामाजिक कार्यों में रुचि ली। वे न केवल लेखक, विचारक, पत्रकार, योजनाकार एवं साहित्यकार थे, अपितु समाज सुधारक भी थे। वे सच्चे अर्थों में गांधीवादी थे। उन्होंने आचार्य तुलसी के साथ आधी सदी तक रहकर समाज की दिशा ही बदल दी। अणुव्रत का वर्तमान स्वरूप देवेन्द्रभाई के प्रयासों से ही संभव हुआ।"

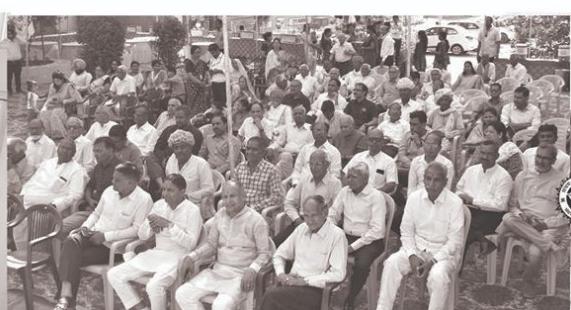
श्रीराम कॉर्मस कॉलेज दिल्ली के पूर्व प्राचार्य और अणुव्रत समिति दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष डॉ. पी. सी. जैन ने कहा कि काका देवेन्द्र का समग्र जीवन साधानामय रहा।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार और अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने कहा- "देवेन्द्र भाई ने समाज में नयी चेतना प्रवाहित कर सामाजिक क्रांति का मार्ग प्रशस्त

किया। उनकी विरासत को उनके पुत्र डॉ. महेन्द्र कर्णावट संभाले हुए हैं, यह गौरव की बात है।"

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि देवेन्द्र भाई अणुव्रत रूपी भवन की नींव के पाथर एवं ध्वज दोनों थे। उनके आत्मीय व्यवहार से अणुव्रत के सैकड़ों कार्यकर्ताओं का निर्माण हुआ। गांधी सेवा सदन के अध्यक्ष एवं अणुव्रत महासमिति के पूर्व महामंत्री विजयराज सुराणा ने कहा कि देवेन्द्र भाई अणुव्रत का कार्य करने में न कभी थके और न ही रुके। नगर परिषद् राजसमंद के सभापति अशोक टांक ने जलचक्की से नौचोकी तक के मुख्य मार्ग का नामकरण "स्वतंत्रता सेनानी देवेन्द्र कुमार कर्णावट" के नाम पर करने की घोषणा की। बाल कलाकारों ने काका देवेन्द्र के जीवन को एकांकी के माध्यम से साक्षात् कर दिया। काका की नन्ही प्रपौत्रियों ने अन्य बच्चों के साथ जन्म दिवस नृत्य प्रस्तुत किया।

समारोह में सामाजिक सेवाओं के लिए दिनेश श्रीमाली, राजकुमार दक्ष, मुकेश वैष्णव, भगवानसिंह चौहान, जवानसिंह रावत तथा गांधी सेवा सदन के पूर्व विद्यार्थी ललित कुमार बड़ोला, आचार्य डॉ. धर्मप्रेमानंद, ललित पुरी गोस्वामी, डॉ. संजय गौड़, सरदार हरिकिशन सिंह का ताम्र प्रशस्ति-पत्र एवं शॉल से अभिनंदन किया गया। समारोह में अणुव्रत अमृत महोत्सव कोर कमेटी के सदस्य मर्यादा कुमार कोठारी, रतन सुराणा दिल्ली, अणुव्रत पत्रिका के सम्पादक संचय जैन, सह सम्पादक मोहन मंगलम समेत बड़ी संख्या में गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।



## **Services offered**

Domestic Courier Cargo  
Full Truck Movement  
PTL  
Intentional



**International**



**AkashGanga®**

— *Integrity at work* —

ISO 9001:2008 Certified Company

**AKASH GANGA COURIER LIMITED**

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,  
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,  
New Delhi-110037 E-mail : [delhi@akashganga.info](mailto:delhi@akashganga.info)

Regional Office : Ahmedabad • Bangalore • Chennai  
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguri • Surat





# जून 2023 अणुव्रत समितियों के लिए करणीय अति विशिष्ट व अति महत्वपूर्ण कार्य

आगामी दो वर्षीय कार्यकाल हेतु नये अध्यक्ष का निर्वाचन एवं नवीन कार्यकारिणी का गठन।

इस सम्बन्ध में आवश्यक वैधानिक प्रक्रिया से समितियों को समय-समय पर अवगत कराया गया है। सभी अणुव्रत समितियाँ इस कार्य को अत्यन्त गंभीरता से लेते हुए सुव्यवस्थित रूप में सम्पादित करें, यह अपेक्षित है।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष के रूप में एक ऐसे व्यक्ति का चुनाव करें जो अणुव्रत के आदर्शों के प्रति समर्पित हो तथा समय और शक्ति का नियोजन कर सबको साथ लेकर अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाने में सक्षम हो।

सभी अणुव्रत समितियों के लिए जून माह में नये अध्यक्ष के चुनाव/मनाव की प्रक्रिया सम्पन्न करना आवश्यक है।

## अन्य विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें -

डॉ. कुसुम लुनिया	संगठन मंत्री उत्तरांचल	9891947000
श्री बजरंग बैद	संगठन मंत्री पूर्वांचल	9434355575
श्री राजेश चावत	संगठन मंत्री दक्षिणांचल	9110613732
श्रीमती पायल चौरड़िया	संगठन मंत्री पश्चिमांचल	7779045555
श्रीमती साधना कोठारी	संगठन मंत्री मध्यांचल	9300728836

## निवेदक :

अविनाश नाहर  
अध्यक्ष

भीखम सुराणा  
महामंत्री

## अणुव्रत अर्थ संबल अभियान

अर्थ सम्बल अभियान के अंतर्गत 7500/- रुपये के कूपन अनेक अणुव्रत समितियों ने मँगाये हैं। जिन्होंने नहीं मँगाये हैं, वे यथाशीघ्र मँगाएं व अर्थ संकलन कर अणुव्रत अभियान को गति प्रदान करें। प्राप्त अनुदान का 10 प्रतिशत अणुव्रत समितियों को मिलेगा।



- संयोजक निर्मल गोखरू (9414115066)
- दक्षिणांचल प्रभारी सुरेश दक (9448383315)
- नेपाल प्रभारी ज्योति कुमार बेंगानी (9851020595)
- मध्यांचल प्रभारी संजय जैन (9215517430)
- पूर्वांचल प्रभारी प्रदीप सिंधी (9831085087)
- उत्तरांचल प्रभारी मुकेश भादानी (7639999764)

ANUVRAT  
RNI No. 7013/57  
June, 2023

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23  
Licence No. U(C)-215/2021-23  
Licenced to post without pre-payment  
Date of Publication 25/05/2023  
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month



अनुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष  
**अनुव्रत अमृत महोत्सव**  
21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024

इस महाअभियान में जन-जन की सहभागिता का  
विनम्र अनुरोध

प्रकाशक एवं मुद्रक संचय जैन द्वारा स्वत्वाधिकारी अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - संचय जैन